सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 5 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मई, 2010 ★ द्वितीय वैशाख, 2067

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

महकते
सपनोंके लिये
खास
अपनोंके लिये

- सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न
- फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
- शुद्ध चांदी के बरतन

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520 | सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903 | उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644

Visit us at : rcbafnajewellers.com

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

ग्राहक सेवेची पंचसुत्री १ | प्रामाणिकता २ | वाजिबता ३ | विविधता ४ | हजर स्टॉक ५ | सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003 (राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

कायसा वयसा मत्ते,
वित्ते गिद्धे य इत्थिसु।
दुहओ मलं संचिणइ,
सिसुणागुव्व मट्टियं॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.10

वह मत्त; वचन तन से रहता,
धन-नारी में आसक्त सदा।
शिशुनागसदृश दोनों मुख से,
मलसंचय करता यदाकदा॥

मई, 2010

वीर निर्वाण संवत्, 2536

द्वितीय वैशाख, 2067

वर्ष 67 अंक 5

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 5000/-
आजीवन विदेश में : 5000 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	वैराग्य और साधना	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	कैसा हो मरण?	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	11
	दर्शनविशुद्धि से पवित्र एक ज्ञानपुंज चारित्र (2)	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	23
हस्ती-शताब्दी-	अमरत्व का वह उपासक (5)	-श्री सम्पतराज चौधरी	41
	A Brief Introduction to Acharya Hasti	*-Sh. P.S. Surana*	51
आचार्यपद-दिवस-	गुरुवर हीरा तारणिया	-श्री प्रेमचन्द गांधी	31
शोधालेख-	The Historical Development of Jaina-Yoga-System (2)	*-Prof. Sagarmal Jain*	33
अध्यात्म-	सम्मान की कामना : अपमान का द्वार	-श्री ऋषभराज बाफना	46
श्रद्धा-संस्मरण-	आचार्य श्री की दूरदर्शिता एवं निस्पृहता	-श्री मोहनलाल पीपाड़ा	54
	Gurudeva Hasti : An Inspiration	*-Sh. Surendra S. Singhvi*	56
	नियमों में दृढ बनाया गुरुदेव ने	-श्री कन्हैयालाल हिरण	64
तत्त्व ज्ञान-	दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (8)	-संकलित	59
	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (58)	-श्री धर्मचन्द जैन	62
उपन्यास-	सुबह की धूप (15)	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	67
युवा-स्तम्भ-	बदलते मूल्य और सामाजिक अपेक्षाएँ	- श्री पदमचन्द गाँधी	71
नारी-स्तम्भ-	धर्म की धुरी है नारी (2)	-डॉ. दिलीप धींग	75
प्रेरक-प्रसंग-	दान देने की आदत बनाओ	-बी. श्रेणिक कुमार चोरडिया	78
बाल-स्तम्भ -	एक हाथी और सात अंधे	-मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा.	85
स्वास्थ्य-विज्ञान-	शिवाम्बु (स्वमूत्र) चिकित्सा	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	88
कविता/गीत-	आचार में उत्तुंग हो	-मधुर व्याख्यानी जी गौतम मुनि जी म.सा.	28
	आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला	-डॉ. दिलीप धींग	29
	मधु लिपटी तलवार है	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	49
	संयम का पथ प्यारा-प्यारा	-श्रीमती एन. पुष्पलता भंसाली	50
	शिविर का आनन्द	-श्रीमती कमला सुराणा	53
	तप है महान्	-श्री मगनचन्द जैन	58
	दो क्षणिकाएँ	-श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.	61
	मुक्ति पथ पर करें गमन	-श्री मनमोहन चन्द बाफना	65
	आचार्य श्री हस्ती गुणाष्टक	-स्व. श्री राजमल जी ओस्तवाल	79
	स्वाध्याय की ज्योति जगाते चलो	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	80
	उदारता	-डॉ. रमेश मयंक	92
संवाद -	संवाद (27)	-संकलित	81
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (5)		93
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	95
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		97
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		121

सम्पादकीय

वैराग्य और साधना

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

संसार हमारे आकर्षण का केन्द्र है तो यही विकर्षण का भी निमित्त है। अज्ञानियों एवं विषयभोगियों को इसमें आकर्षण दिखाई पड़ता है तो ज्ञानियों को इसकी निस्सारता अनुभूत होती है। वस्तुतः संसार न सुखद है न दुःखद, किन्तु संसरण का कारण जो सुखभोग की रुचि एवं प्रवृत्ति है वह दुःख का कारण बनती है। सुखभोग की रुचि मनुष्य के विवेक का विकास नहीं होने देती। वैषयिक सुखों का आकर्षण हमें संसार से बांधे रखता है तथा जब भीतर में इनकी निस्सारता का बोध हो जाता है एवं कषायों की उपशान्ति का अनुभव होता है तो संसार बांधने वाला नहीं होता। जीवन में जो सुखद एवं दुःखद परिस्थितियाँ आती हैं उनमें समत्वभाव रखते हुए साधक अपने विवेक को जागृत करने के लिए प्रयत्नशील होता है।

विवेक और वैराग्य में घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो विवेकशील है वह सांसारिक सुख-भोगों में आसक्त नहीं होता और न ही उनकी प्राप्ति के लिए लालायित होता है। उसे इन्द्रिय, मन और बुद्धि से परे विवेक अथवा श्रुतज्ञान का प्रकाश प्राप्त होता है। यह ज्ञान का प्रकाश वैराग्य का मूल है। वैराग्य ज्ञान के अतिरिक्त दुःखगर्भित और मोहगर्भित भी हो सकता है, किन्तु ज्ञानगर्भित वैराग्य अधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रारम्भिक वैराग्य दुःख के कारण अथवा मोह के कारण हो सकता है, किन्तु उसके साथ ज्ञान का पुट जब तक नहीं होता तब तक वैराग्य में स्थिरता नहीं आती।

वैराग्य का तात्पर्य संसार से घृणा नहीं है और न ही संसार के प्रति द्वेष है। अपितु सांसारिक सुख-भोगों की नश्वरता एवं तुच्छता को समझकर उनके प्रति अनासक्ति का भाव ही वैराग्य है। दूसरे शब्दों में कहें तो राग रहित होने का भाव वैराग्य है। वैराग्य वह पथ है जो पूर्ण वीतरागता तक ले जाता है। साधारण मनुष्यों की रुचि एवं विरक्त की रुचि में महान् भेद होता है। जो वस्तु, व्यक्ति और परिस्थितियों में सुख खोजता रहता है वह साधारण व्यक्ति है और जो इनसे परे अपने में सुख का अनुभव करता है वह विरक्त है।

विरक्त होने की सार्थकता मुमुक्षु होने में है। मोक्ष का इच्छुक मुमुक्षु कहलाता है। जो मुमुक्षु होता है वह संसार के सुख-भोगों से विरक्त होता है। उसे इन्द्रियजन्य कामभोग नहीं बांध सकते। अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी उसे प्रभावित नहीं करती। वह उन दोनों का सदुपयोग करता है। श्रमण के लिए दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है-

जे य कंते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठी कुव्वइ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइत्ति वुच्चइ॥

जो कान्त और प्रिय भोगों के प्राप्त होने पर भी उनके प्रति पीठ कर लेता है तथा स्वाधीनता पूर्वक भोगों का त्याग करता है वह त्यागी कहलाता है। ऐसा त्याग तभी सम्भव है जब साधक की दृष्टि सम्यक् हो एवं उसका ज्ञान सम्यक् हो।

साधना के मार्ग में अनेक परीषह आते हैं- भूख, प्यास, गर्मी, सर्दी, मच्छर का काटना, अल्पवस्त्र आदि। इन परीषहों से कदाचित् साधक विचलित हो जाए तो वह साधना के मार्ग में आगे नहीं बढ़ सकता। उसे उपसर्गों और परीषहों के प्रति सहिष्णुता का विकास करना होता है। सुकुमारता वैराग्य में काम नहीं आती। विकट परिस्थितियों में भी साधक अपने मनोबल एवं आत्मबल को कमजोर नहीं करता, उसे शरीर रहे न रहे इसकी चिन्ता नहीं होती अपितु चित्त विकारग्रस्त न हो इसके प्रति जागरूकता होती है।

साधक के लिए सबसे बड़ी कठिनाई उसका अपना अहंकार है। साधनाशील व्यक्ति को अपनी साधना का अहंकार हो जाता है। उसे अपने ज्ञान का और आचरण का जो अहंकार होता है वह मुमुक्षुता में बाधक बन जाता है। इसलिए उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ।

साधक निन्दा एवं प्रशंसा में तथा मान एवं अपमान में सम रहता है। उसे सम्मान की कोई कामना नहीं होती, अपमान में उसे कोई खिन्नता नहीं होती। किन्तु यह तभी सम्भव है जब साधक सम्यक्त्वपूर्वक उत्कृष्ट साधना के धरातल पर हो। हम हमारी प्रत्येक अच्छी क्रिया एवं प्रवृत्ति की प्रशंसा चाहते हैं तथा हमारी गलत क्रिया एवं प्रवृत्ति को छिपाना चाहते हैं। यह विसंवाद एवं माया की स्थिति है। साधक भीतर एवं बाहर से निर्मल होता है। लोक व्यवहार की दृष्टि से कुछ बातें प्रकट नहीं की जाती, क्योंकि निन्दा की प्रवृत्ति वाले एवं दोषदृष्टि वाले

लोग राई का पहाड़ बनाने को तत्पर रहते हैं। किन्तु साधक अपनी कमजोरियों से स्वयं परिचित रहता है।

साधक को स्वयं से युद्ध करना होता है। इसीलिए साधु जीवन को तलवार की धार पर चलने के समान कठिन बताया गया है। आचार्य हस्तीमल जी महाराज फरमाते हैं- ''हम जिसका महत्त्व स्वीकार करते हैं उसकी ओर चित्त का आकर्षण हुए बिना नहीं रहता। एक करोड़पति हीरे के बहुमूल्य आभूषण पहनकर बगल में बैठा है और आप हीरे का महत्त्व मानते हैं तो आपका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रहेगा।'' साधना में सादगी आवश्यक है। ''एक बाई कीमती आभूषण पहनकर अगर बाइयों के सामने आती है तो उनका ध्यान उसकी ओर चला जाता है और कोई साधारण वेशभूषा वाली बाई आती है तो ध्यान नहीं जाता। इसका कारण यही है बाइयों का चित्त आभूषणों के महत्त्व को स्वीकार करता है और आभूषणों के प्रति उनके मन में व्यक्त या अव्यक्त अभिलाषा मौजूद है।'' ''जब तक आप बाहर के वैभव को सारवान् और महत्त्व की चीज समझते रहेंगे, आपका मन उसकी ओर आकर्षित होता रहेगा तो उसमें चंचलता भी रहेगी। इसके विपरीत जब साधक सांसारिक वैभव को निस्सार समझ लेता है और भगवान् के चरणों में ही महत्ता का अनुभव करता है, तब उसके मन की चंचलता दूर हो जाती है और वह भगवत्स्वरूप में ही अखण्ड आनन्द का अनुभव करता है। उसकी चित्तवृत्ति स्थिर हो जाती है और इधर-उधर भटकना बंद कर देती है।''

जो जितनी ममता घटा देता है वह उतना ही मोक्ष के नजदीक आ जाता है। आचार्य हस्ती के शब्दों में- ''ज्ञानी कहते हैं कि मानव दूसरों को देने के एक मिनट बाद ही उस वस्तु को पराई समझता है। तो देने से पहले ही क्यों नहीं समझता कि यह वस्तु मेरी नहीं है। पहले ही समझ ले कि जो कपड़ा मेरे तन पर है वह मेरा नहीं है, जिस कोठी में मैं बैठा हूँ वह मेरी नहीं है। तन पर जो आभूषण लाद रखे हैं वे मेरे नहीं हैं, बाहरी चीजें मेरी नहीं हैं। यह अगर पहले ही समझ ले तो मन में जो चंचलता है, दौड़-धूप है, मन में जो संक्लेश है वही नहीं होगा।'' ''राजा प्रदेशी ने ममता घटाकर अपनी आमदनी का चौथाई हिस्सा दान कर दिया तो वह मोक्ष के नजदीक आ गया।''

ममता घटाने के लिए आचार्य हस्ती ने एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत

किया है- "एक वृद्ध मुसलमान का एकमात्र पुत्र रोगग्रस्त होकर चल बसा। उनको सान्त्वना देने बहुत से लोग आए। एक जैन भाई भी आए। मियांजी ने कहा- मैं आप लोगों का आभार मानता हूँ कि आप लोग मुझे पुत्र-वियोग में सान्त्वना देने आए हैं, परन्तु वह तो वास्तव में भगवान् की धरोहर थी। आपके पास किसी की धरोहर हो तो उसे राजी-खुशी या दुःख से भी लौटाना होता है। जमा रखने वाले ने अपनी वस्तु उठाली तो उसमें बुरा क्यों मानना? यह कितनी सुन्दर समझ की बात है। प्रिय-वियोग में लोग जमीन-आसमान एक कर देते हैं पर उससे क्या फल मिलता है? आखिर शान्त तो होना ही पड़ता है।"

"यह कितना बड़ा आश्चर्य है कि विशिष्ट बुद्धि का धनी व्यक्ति यह समझते हुए भी कि विषय-कषायों के कारण उसकी बड़ी हानि हो रही है, फिर भी क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों को त्याग नहीं पाता, बल्कि उत्तरोत्तर उनमें फंसता जाता है।" जीवन में ऐसा अनेक बार होता है कि हम बुराई को बुराई जानकर भी त्याग नहीं पाते। इसका कारण या तो मन की कमजोरी है या फिर उसे पूर्णतः बुरा नहीं मानना है अथवा दीर्घकाल से रहे हुए संस्कारों को तोड़ने में अधिक वीर्य की आवश्यकता होती है जो हम जुटा नहीं पाते।

विरक्त एवं मुमुक्षु साधक आत्मविकास के लिए व्रत-नियमों को स्वीकार करता है तथा उत्तरोत्तर आत्मशुद्धि में लगा रहता है। ऐसे साधकों को सावधान करते हुए आचार्य हस्ती कहते हैं- "व्रतों और नियमों को केवल दस्तूर में न लेकर आत्मा को कसने का उनसे काम लिया जाय तो वास्तविक लाभ हो सकता है।" जो कठिनाई आने पर भी व्रत का निर्वाह करता है और अपने संकल्प-बल में कमी नहीं आने देता वह सभी कठिनाइयों को जीतकर उच्च बन जाता है और अन्त में पूर्ण निर्मल बनकर चरमसिद्धि का भागी होता है।"

गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी जो साधनाशील श्रावक वैराग्य एवं अनासक्ति का अभ्यास करते हैं, आरम्भ और परिग्रह की मर्यादा करते हुए ममता और अहंता को त्यागने हेतु सन्नद्ध रहते हैं वे मुक्तिपथ का अनुसरण करते हैं। वैराग्य मुक्ति का द्वार है, वैराग्य होने पर सुखासक्ति नहीं होती, दुःख से भय नहीं होता। साधक सुख और दुःख दोनों का सदुपयोग कर लेता है। सुख को दूसरों में बांटकर तथा दुःख से संसार की यथार्थता को जानकर उनका सदुपयोग करता है। वैराग्य का पथ राग-द्वेष के विजय का पथ है, विकारों के विजय की पगडंडी है तथा वीतरागता के माध्यम से मोक्ष के लक्ष्य तक पहुँचने का सुगम उपाय है।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

आसेवित्ता एयमट्ठं इच्चेवेगे समुट्ठिता।
तम्हा तं बिइयं नासेवते णिस्सारं पासिय णाणी।
उववायं चयणं णच्चा अणण्णं चर माहणे।
से ण छणे, न छणावए, छणंतं, णाणुजाणति।
णिव्विंद णदिं अरते पयासु अणोमदंसी णिसण्णे पावेहिं कम्मेहिं ।।119।।
कोधादिमाणं हणिया य वीरे, लोभस्स पासे णिरयं महंतं।
तम्हा हि वीरे विरते वधातो, छिंदिज्ज सोतं लहुभूयगामी ।।120।।

अर्थः-

कुछ व्यक्ति वध, परिताप, परिग्रह आदि असंयम का आसेवन-आचरण करके अन्त में संयम-साधना में संलग्न हो जाते हैं। वे (काम-भोगों को, हिंसा आदि आस्रवों को छोड़कर) फिर दुबारा उनका आसेवन नहीं करते।

हे ज्ञानी! विषयों को निस्सार जानकर (तू विषयाभिलाषा मत कर)। केवल मनुष्यों के ही, जन्म-मरण नहीं, देवों के भी उपपात (जन्म) और च्यवन (मरण) निश्चित हैं, यह जानकर (विषय-सुखों में आसक्त मत हो)। हे माहन! (अहिंसक) तू अनन्य (संयम या रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग) का आचरण कर।

वह (अनन्यसेवी मुनि) प्राणियों की हिंसा स्वयं न करे, न दूसरों से हिंसा करने वाले का अनुमोदन करे।

तू (कामभोग जनित) आमोद-प्रमोद से विरक्ति कर (विरक्त हो)। प्रजाओं (स्त्रियों) में अरक्त (आसक्ति रहित) रह।

अनवमदर्शी (सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्षदर्शी साधक) पापकर्मों से विषण्ण- उदासीन रहता है।

वीर पुरुष कषाय के आदि अंग-क्रोध (अनन्तानुबंधी आदि चारों प्रकार के क्रोध) और मान को मारे (नष्ट करे), लोभ को महान् नरक के रूप में देखे। (लोभ साक्षात् नरक है), इसलिए लघुभूत (मोक्षगमन का इच्छुक अथवा अपरिग्रहवृत्ति अपना कर) बनने का अभिलाषी, वीर (जीव) हिंसा से विरत होकर स्रोतों (विषय-वासनाओं) को छिन्न-भिन्न कर डाले।

-आचारांग सूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध, तृतीय अध्ययन,
द्वितीय उद्देशक, सूत्र - 119-120

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जिस प्रकार चतुर माली अपने बगीचे में सफाई करते हुए पेड़-पौधों को समय पर पानी पिलाता है तथा पशु-पक्षियों द्वारा उन्हें नष्ट किये जाने से बचाता है, उसी प्रकार माता-पिता को अपने बच्चों की देखभाल भली प्रकार से करनी चाहिए।
- शैशवकाल में बालक में समस्त मानवीय सद्गुणों के अंकुर विद्यमान रहते हैं। अगर उसकी सावधानी से देखभाल की जाए, तो उसमें उत्तम संस्कारों का वपन होगा और बड़ा होकर राष्ट्र का उपयोगी घटक सिद्ध होगा। यह तभी हो सकेगा कि जब अभिभावक स्वयं सुसंस्कारी हों।
- जीवन को सदाचार ही उन्नत बना सकता है। बुरे कार्यों का त्याग करना एवं जीवन में अच्छे कार्यों को ग्रहण करना ही सदाचार है। यह सदाचार भी हमारी अच्छी-बुरी संगति पर निर्भर है। जीवन में हम जैसी संगति करेंगे वैसा ही हमारा आचार-विचार होगा।
- जैसे पानी की बूँद (स्वाति नक्षत्र में) यदि गर्म तवे पर गिरे तो भस्म हो जाती है, लेकिन वही बूंद केले के पेड़ पर गिरे तो कपूर बन जाती है, सांप के मुँह में गिरे तो विष बन जाती है और वही बूँद सागर की सीप में गिरती है तो मुक्ता बन जाती है। उसी प्रकार हम जैसी संगति करेंगे वैसा ही हमारा आचार-विचार होगा एवं विनयादि गुणों की प्राप्ति होगी।
- जो माँ-बाप बच्चों के शरीर की चिन्ता करते हैं, किन्तु उनकी आत्मा की चिन्ता नहीं करते, उनके जीवन-सुधार की चिन्ता नहीं करते, वे सच्चे माँ-बाप कहलाने के हकदार नहीं हैं। वे पिंड की निर्मलता की ओर ध्यान देते हैं, पर उस पिण्ड में विराजित आत्मदेव की निर्मलता की ओर ध्यान नहीं देते। यदि माँ-बाप को अपना फर्ज अदा करना है तो उन्हें अपने बालक-बालिकाओं के चरित्र निर्माण की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए।
- जब तक बालक अपरिपक्व दिमाग का है, तब तक उसे जैसा समझाओगे वैसे ही समझ जाएगा। लेकिन कई माँ-बाप तो लाड़ प्यार के कारण बच्चों को कुछ नहीं कहते। वे जैसा करना चाहें, वैसा करने देते हैं और जब-जब जितने रुपये चाहिए तुरन्त दे देते हैं। इससे बच्चे बिगड़ते हैं।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अध्यात्म

कैसा हो मरण?

आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का यह दुर्लभ आलेख श्रीमद् राजेन्द्रसूरि स्मारक ग्रन्थ में सन् 1957 में प्रकाशित हुआ था, जिसे डॉ.एम.एल. बोहरा, जालोर ने आचार्य हस्ती जन्मशती के उपलक्ष्य में उपलब्ध कराया है। आशा है मरण के सम्बन्ध में इस आलेख से प्रेरक विचार प्राप्त हो सकेंगे। उल्लेखनीय है कि आचार्य हस्ती ने स्वयं अपने जीवन में पण्डितमरण को प्राप्त कर जीवनोत्सव के साथ मरण को भी महोत्सव बनाया था। **-सम्पादक**

संसार में शायद ही कोई प्राणी हो जो मरण को नहीं जानता हो। छोटे से छोटे कीट-पतंग से लेकर नरेन्द्र, असुरेन्द्र और देवेन्द्र तक भी इसके प्रभाव से प्रभावित हैं।

भयंकर से भयंकर रोग में फंसनेवाला असहाय रोगी भी मरना नहीं चाहता। भले ही उसे कितना भी रोग, शोक, वियोग या अपमान सहना पड़े, फिर भी वह प्राणी यही चाहेगा कि मरूँ नहीं। कारण कि मरण सबसे बड़ा भय है। कहा भी है-'मरणसमं नत्थि भयं'। मरण से बचने के लिए मनुष्य हर संभव उपाय को करने के लिये तैयार रहता है। उसने मृत्युंजय और महामृत्युंजय के भी पाठ कराये, सुसज्जित सेनाओं के बीच अपने को सुरक्षित रक्खा; फिर भी मरण से नहीं बच पाया। मरण के सामने मंत्रबल, तंत्रबल, यंत्रबल और शस्त्रबल सभी बेकार हैं। कहावत भी है:-'काल वेताल की धाक तिहुं लोक में।' सच है जगत् के जीवमात्र मरण का नाम सुनते ही रोमांचित हो जाते हैं।

किन्तु ज्ञानी कहते हैं-''मृत्योर्विभेषि किं मूढ!'' मूर्ख! मृत्यु से क्यों डरता है? यह तो पुराना चोला छोड़कर नया धारण करना है। इसमें भयभीत होने की क्या बात है? निर्भय और निर्मल भाव से कर्त्तव्य पालन कर, फिर देख कि मरण भी तेरे लिये मङ्गल महोत्सव बन जायेगा।

अतः यह जानना आवश्यक है कि मरण क्या है और वह कितने प्रकार का है, तथा उत्तम मरण कैसा होना चाहिये?

जैनशास्त्र कहते हैं कि संसार का कोई भी द्रव्य सर्वथा नष्ट नहीं होता।

अतः प्रश्न होता है कि 'मरण' जिसको कि नाश कहते हैं कैसे संगत होगा। कारण द्रव्य का लक्षण 'उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्' कहा है। उसका कभी नाश नहीं होता, तब मरण क्या हुआ? यहां मरण का अर्थ आत्यन्तिक तिरोभाव या अदर्शन है। जब आयु पूर्ण कर जीव किसी शरीर से अलग होता है यानी जीव या प्राणों का शरीर से सर्वथा संबंध छूट जाता है तो उसे मरण कहते हैं।

यद्यपि आत्मा, अजर, अमर और अजन्मा है। वास्तव में उसका न जन्म है और न मरण, फिर भी संसारावस्था में शरीरधारी जीव का शरीर की अपेक्षा जन्म और मरण कहा जाता है। संक्षेप में कहना चाहिये कि वर्तमान शरीर को छोड़कर जीव का प्रयाण कर जाना ही मरण है।

मरण के प्रकार–

जैनशास्त्रों में मरण पर बहुत गंभीर विचार किया गया है। श्रीस्थानाङ्ग, श्रीभगवती, श्री उत्तराध्ययन आदि अंगोपांग सूत्रों के अतिरिक्त जैनाचार्यों ने मरण पर स्वतंत्र प्रकरण भी लिखे हैं। मरणविभत्ति, भत्तपच्चक्खाण और समाधिमरण उनमें विशेष रूप से उल्लेख योग्य हैं।

यह निश्चित है कि संसार में दृष्टिगोचर होने वाले पदार्थ एक दिन विलय होने वाले हैं। अचेतन होने से उनमें हर्ष-शोक के भाव उत्पन्न नहीं होते। चेतन होने से जीव को ही हर्ष-शोक होते हैं। इसलिये यहां इसी के मरण का विचार करना है। आत्मदर्शी महात्माओं ने कहा है कि मरण केवल दुःखदायी ही नहीं, वह सुखप्रद भी होता है।

अज्ञानी और ज्ञानी की दृष्टि से मरण भी बुरा और भला होता है। अज्ञानी पर्यायदृष्टिप्रधान होने से प्राण-वियोग पर रोता और दुःख करता है, वहाँ ज्ञानी दिव्यदृष्टि की प्रधानता से धन, जन, प्राण के वियोग में भी प्रसन्न रहता है, सदा समरस रहता है। ठीक ही कहा है कि अज्ञानी मरण से डरते हैं, जबकि ज्ञानी उसको सहर्ष गले लगाते हैं। कारण, ज्ञानी समझता है कि मैं तो त्रिकाल सत्य हूँ, इस शरीर के पहले भी था, अब भी हूँ और शरीर छूटने पर भी रहूँगा, फिर सुकृताचरण से मैं कृतकृत्य हो चुका हूँ, अतः मुझे मरण से घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। कहा भी है-"मरणादपि नोद्विजते कृतकृत्योऽस्मीति धर्माऽऽत्मा" शास्त्रों में मरण का विस्तार इस प्रकार किया गया है-

भगवती सूत्र में मरण के 5 प्रकार बतलाए हैं, जैसे- 1. आवीचिमरण, 2.

अवधिमरण, 3. आत्यन्तिकमरण, 4. बालमरण और 5. पंडितमरण।

प्रथम तीन प्रकार के मरण द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव के भेद से पाँच-पाँच प्रकार के बतलाये गए हैं।[1] प्रति समय आयुकर्म के दलिकों का क्षीण होते जाना यह आवीचिमरण है। नरक आदि भव की स्थिति पूर्ण कर जो तत् तत् भवानुबन्धी सामग्री का त्याग किया जाता है वह अवधिमरण है और एक बार मरने के बाद फिर उस भव से नहीं मरना यह आत्यन्तिकमरण है।

फिर स्थानांग सूत्र में मरण के तीन प्रकार भी बतलाये हैं।[2] जैसे- 1. बालमरण, 2. पंडितमरण, 3. बालपंडितमरण। विवेकरहित अविरत जीव का मरण बालमरण, तत्त्वज्ञानी संयमी का मरण पंडितमरण और सम्यग्दृष्टि व्रती गृहस्थ का मरण बालपंडितमरण कहलाता है। परिणामों के स्थित, अस्थित और वर्धमान शुभाध्यवसायों से प्रत्येक के तीन-तीन भेद होते हैं।

बालमरण जन्म-मरण की वृद्धि का कारण है। अतएव श्रमण भगवान् महावीर ने कहा है कि तपस्वी निर्ग्रन्थों को ऐसे मरण से नहीं मरना चाहिये। बालमरण इस प्रकार हैं-1. वलयमरण, 2. वशार्तमरण, 3. निदानमरण, 4. तद्भवमरण, 5. गिरिपतन, 6. तरुपतन, 7. जलप्रवेश, 8. अग्निप्रवेश, 9. विषभक्षण, 10. शस्त्रघात, 11. वैहायस, 12. गृद्धपृष्ठमरण।[3] वलयमरण आदि का स्वरूप इस प्रकार है-

1. भूख, प्यास आदि परीषहों से घबराकर असंयम सेवन करते हुए मरना वलयमरण है। 2. पतङ्ग आदि की तरह शब्दादि विषयों के अधीन होकर मरना वशार्तमरण है, जैसे किसी कामिनी के पीछे कामी का प्राण गंवाना। 3. ऋद्धि आदि की प्रार्थना करके सम्भूति मुनि की तरह मरना निदानमरण है। 4. जिस भव में है उसी जन्म (योनि) का आयु बांध कर मरना, तद्भवमरण है। 5. पर्वत से गिरकर मरना। 6. वृक्ष से लटक कर मरना। 7. जल में डूब कर मरना। 8. आग में सती आदि की तरह जीवित ही जल मरना। 9. विष खाकर मरना। 10. शस्त्र से आत्महत्या कर लेना। 11. फांसी लेकर मरना। 12. पशु के कलेवर में गिद्ध आदि का भक्ष्य बन कर मरना।

उपर्युक्त 12 प्रकार के मरण से मरने वाला जीव नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवगति के अनन्त-अनन्त जन्म करता हुआ चतुर्गति रूप संसार में परिभ्रमण

करता है। इस प्रकार यह 'बालमरण' संसार को बढ़ाने वाला है। भगवान् महावीर कहते हैं- ''कौटुम्बिक झगड़ों से तंग आकर या धन-हानि, जन-हानि और मान-हानि की व्याकुलता में मरना दुःख को घटाना नहीं बढ़ाना है''-यह पंडितमरण नहीं बालमरण है।

माता-पिता, पुत्र, पति-पत्नी आदि प्रियजन के वियोग में मर जाना अथवा मृत पति के साथ जीवित जल जाना भी उत्तम मरण नहीं है। बहुतसी बार मनुष्य शोक, मोह और अज्ञान के वश भी प्राण गंवा देता है। व्यापार-धंधे में हानि उठाकर लेनदारों को देने की अक्षमता से सैंकड़ों ने मान-प्रतिष्ठा की आग में प्राणों की बलि कर दी और करते जाते हैं। अर्थाभाव में पारिवारिक भरण-पोषण और कर्जदारी की चिंता से भी कई हलाहल पी कर मरण की शरण ले लेते हैं। घर के लड़ाई-झगड़ों से तंग आकर और दुःख में ऊब कर भी कई ललनाएँ तेल छिड़क कर जल मरती हैं। नौकरी नहीं मिलने से कई शिक्षित युवक और परीक्षा में अनुत्तीर्ण होकर कई विद्यार्थी प्रतिवर्ष जीवन समाप्त करते सुने जाते हैं। इस प्रकार इच्छा से मरने वालों की संख्या कम नहीं है। वास्तव में ये सब अकाम-मरण या बालमरण हैं। इस प्रकार चिन्ता, शोक या अभाव में झुलस कर कई मानव अपनी जीवन-लीला समाप्त करते हैं। सचमुच यह देश और समाज के लिये कलंक की बात है। समाज और राष्ट्रनायकों को इसका उचित हल निकालना चाहिये। ऐसे अविवेकपूर्वक अकाममरण से दुःख नहीं घटता। इससे उसे तत्काल ऐसा प्रतीत होता है कि मर जाने से मैं अपनी आँखों से यह दुःख नहीं देख पाऊँगा; किन्तु उसे ध्यान रखना चाहिये कि अकाममरण से वर्तमान का दुःख लाखों गुणा होकर फिर सामने आ सकता है। जबकि आज का विचारपूर्ण समर्थ मन भी नहीं रह पाता। सच बात यह है कि दुःख भगाने से नहीं छूटता, वह तो शांतिपूर्वक भोगने से छूटता है।

पण्डितमरण और उसके प्रकार-

भगवती सूत्र के द्वितीय शतक, प्रथम उद्देशक में प्रभु ने खंदक संन्यासी को मरण का स्वरूप बतलाते हुए कहा है:- पंडितमरण दो प्रकार का है - पादोपगमन और भक्तप्रत्याख्यान। नीहारिम और अनीहारिम रूप से पादोपगमन दो प्रकार का है। यह प्रतिकर्म रहित ही होता है। भक्तप्रत्याख्यान नीहारिम और अनीहारिम दोनों प्रकार का सप्रतिकर्म होता है अर्थात् इसमें शरीर की हलन-चलन रूप

चेष्टाएँ तथा सार-संभाल होती है। इन दोनों प्रकार के पंडितमरण से मरनेवाला जीव अनन्त-अनन्त नरक, तिर्यंच आदि के जन्म-मरण से आत्मा को विमुक्त करता यावत् संसार को पार करता है।

भक्तप्रत्याख्यान – जिसमें तीन या चार प्रकार के आहारमात्र का त्याग होता है, और शरीर का हलन-चलन बन्द नहीं किया जाता उसे भक्तप्रत्यानख्यान कहते हैं।

इंगितमरण – इसमें सर्वथा खाने-पीने का त्याग किया जाता है और मर्यादित क्षेत्र के अतिरिक्त शरीर से गमनागमन आदि चेष्टा भी नहीं की जाती है। पादोपगमन में यह विशेषता है कि वह शरीर की कोई चेष्टा नहीं करता, न करवट ही बदलता है। दूसरा भले कोई उसे इधर से उधर बैठा दे या करवट बदल दे, किन्तु वह स्वयं कोई चेष्टा नहीं करता, वृक्ष की तरह अडोल पड़ा रहता है।

भक्तप्रत्याख्यान में जलाहार लिया जाता है और वह सागारी भी होता है, किन्तु इंगितमरण और पादोपगमन में कोई आगार नहीं होता, न कोई जलाहार ही ग्रहण किया जाता है। भक्तप्रत्याख्यान सर्वदा सबके लिये सुलभ है; परन्तु इंगितमरण एवं पादोपगमन प्रथम 3 संहनन में और विशिष्ट श्रुतधारी को ही होते हैं। व्यवहारभाष्य में कहा है कि सभी आर्या, सब प्रथम संहननीय जीव तथा सब देशविरति जीव भक्तप्रत्याख्यान को ही प्राप्त करते हैं।

पादोपगमनवाले को कभी पूर्वभव के वैर से कोई देव पातालकलशों में संहरण कर दे तो वह उपसर्ग को सम्यक् प्रकार से सहन करता है। उस समय वह ऐसा सोचता है कि जैसे तलवार म्यान से भिन्न है, ऐसे ही जीव शरीर से भिन्न है, अतः उपसर्ग से मेरी कोई हानि नहीं होती। जैसे मेरु पूर्वादि चारों दिशा की प्रचण्ड वायु से कम्पित नहीं होता, वैसे पादोपगमन वाला उपसर्ग आने पर भी ध्यान में चलायमान नहीं होता है।

इनका आदर्श होता है उग्रतम कष्ट के समय भी अविचल रहकर मरण का आलिंगन करना। देखिये, कृष्ण वासुदेव के लघुभाई गजसुकुमाल ने मरणान्त कष्ट के समय भी कैसी अखण्ड शांति कायम रखी। भगवान् नेमनाथ की अनुमति लेकर जब महामुनि महाकाल शमशान में ध्यान लगाकर देह-भान को भुलाकर आत्मध्यान में तल्लीन हो गये, उस समय सोमिल ब्राह्मण उधर से निकला और

महामुनि को देखते ही क्रोध से जल उठा। उसने गीली मिट्टी लेकर मुनि के शिर पर बाँधी तथा अंगारे रख दिये। शिर जलने लगा और नसें खिंचने लगीं, फिर भी मुनिजी के मन में उफ तक नहीं; क्योंकि उन्होंने क्रोध, मान, माया एवं लोभ के अंतर विकारों को जला दिया एवं प्राणिमात्र को आत्मसम समझ लिया था। अंतर में एक ही आवाज गूंजती थी कि-"मैं एक और शाश्वत हूँ। मेरा स्वरूप ज्ञान, दर्शन है। धन, दारा और परिवार आदि सब बाह्यभाव पर हैं। और वे संयोग सम्बन्ध से अपने व पराये होते हैं। वास्तव में ये मेरे नहीं। ज्ञान, दर्शनरूप उपयोग स्वभाव ही मेरा है। जो न कभी जलता है और न कभी गलता है।"कहा भी है-

"एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ।
सेसा मे बहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा।।"

अंग-अंग के जलने पर भी गजसुकुमाल की प्रसन्नता अविचल रही और क्षणों में ही अखण्ड समाधि के साथ उन्होंने सकल कर्म क्षय कर मुक्ति प्राप्त कर ली।

पण्डित मरण के अधिकारी-

वे लोग इसके अधिकारी नहीं होते, जिनका जीवन हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार आदि पापों में रचा-पचा होता है। जो अजितेन्द्रिय होकर अभक्ष्य भक्षण करता और विषय कषाय में रति मानता है वैसे असंयमशील प्राणियों का अंतिम समय में हाहाकार करते प्रयाण होता है। उनको पंडितमरण प्राप्त नहीं होता। अतः यह बालमरण है। क्रोध, लोभ या मोह और अज्ञान के वश जो आत्म-हत्याएँ की जाती है वे सब भी बालमरण हैं।

अन्तिम क्षण तक भौतिक कामना की आकुलता होने से ये अकाममरण से मरते हैं। अतः पंडितमरण के अधिकारी नहीं होते।

संयमशील व्रती गृहस्थ या महाव्रतधारी साधु-साध्वी जो हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह के पूर्ण त्यागी और जितेन्द्रिय हैं, आरंभ, परिग्रह और विषय-कषाय से मन को मोड़ कर जिन्होंने परमात्मा के चरणों में चित्त लगा दिया एवं ज्ञान के प्रकाश में जड़-चेतन का भेद समझकर तन, धन, परिजन से ममता हटाली है वे ही पंडितमरण के अधिकारी होते हैं। पंडितमरण में केवल विशुद्ध हेतु और प्रसन्नता के साथ देहत्याग किया जाता है; अतः इसे सकाममरण भी कहते

हैं। सभी साधु और श्रावक पंडितमरण को प्राप्त नहीं करते, किन्तु पंडितमरण के अधिकारी कुछ विशिष्ट पुरुष ही होते हैं। जैसे कि कहा भी है-

न इमं सव्वेसु भिक्खुसु, न इमं सव्वेसुऽगारिसु।
नाणा सीला अगारत्था, विसम-सीला य भिक्खुणो।।

उत्तराध्ययन,5.19

यह मरण सभी भिक्षुओं में नहीं होता, न सब गृहस्थों को होता है। कारण कि विभिन्न शील-स्वभाव के गृहस्थ होते हैं और भिक्षुओं के भी संयमस्थान समान नहीं होते।

देखिये हजार वर्ष का संयम पालन करके भी कुंडरीक ने चन्द दिनों की भोग-भावना में मरण बिगाड़ लिया, परिणामस्वरूप उसको नरक में जाना पड़ा और पुंडरीकने जीवन का लम्बा समय भोग एवं राग में बिताकर भी अंतिम दिनों की पवित्र साधना से जीवन सुधार लिया और पंडितमरण से मरकर सुगति प्राप्त की। यह पंडितमरण की ही महिमा है।

ज्ञानी कहते हैं-यदि तुम दुःख से ऊब गए हो, सहने की शक्ति खो चुके हो और मरना चाहते हो तो चिन्ता-शोक में देह को गलाकर मरने की अपेक्षा तप-संयम में देह को विवेकपूर्वक गलाओ और ध्यानाग्नि में दुःख को जलाकर हंसते-हंसते मरो, रोते हुए क्यों मरते हो।

मरण विधि-

जब समझलो कि अब शरीर अधिक समय तक टिकनेवाला नहीं है अथवा धर्मरक्षा के लिये प्राणों का त्याग करना है तब सर्वप्रथम मन से वैरविरोध भुलाकर अंतरात्मा को स्वच्छ बना लेना चाहिये। फिर तन, मन, धन, परिजनादि बाह्य वस्तुओं से मन मोड़कर, आत्मस्वरूप में वृत्ति जमाकर, सदा के लिये अकरणीय पापकर्म और चतुर्विध आहार का त्याग कर लेना चाहिये।

अर्हन्त सिद्ध की साक्षी से यह निश्चय कर लो कि संसार के दृश्य पदार्थ सब 'पर' और 'नाशवान्' हैं। उनको अपना समझकर ही चिरकाल से मैं भटक रहा हूँ, यह मेरा अज्ञान है। वास्तव में तन एवं धन की हानि से मेरी कोई हानि नहीं होती। मैं सदा शुद्ध, बुद्ध एवं समरस हूँ। आग में जलना, पानी में गलना और रोग से सड़ना मेरा स्वभाव नहीं है। सड़ना, गलना, जलना आदि देह के धर्म हैं, अतः इस

परमप्रिय देह का भी आज से स्नेह छोड़ता हूँ। मेरा न किसी पर राग है, न किसी पर द्वेष।

इसी प्रकार के मरण से अंबड़ संन्यासी के 700 शिष्यों ने भी सुगति प्राप्त की थी। कंपिलपुर से पुरिमताल की ओर जाते समय जब उनके पास का पानी समाप्त हो गया और तृषा के मारे होठ-कंठ सूखने लगे, तब उन्होंने उस दुःखद स्थिति में भी पंडितमरण स्वीकार किया था।

पहले गंगा के किनारे बालू को देखा, साफ किया और फिर पूर्वाभिमुख पर्यंकासन से बैठकर दोनों हाथ जोड़कर इस प्रकार बोले-"नमस्कार हो सिद्धिप्राप्त जिनवर को और नमस्कार हो सिद्धिगति पाने वाले श्रमण भगवान् महावीर को, फिर नमस्कार हो हमारे धर्माचार्य धर्मगुरु अम्बड़ परिव्राजक को। हमने पहले धर्मगुरु अम्बड़ के पास स्थूल हिंसा, झूठ, अदत्त, संपूर्ण मैथुन और परिग्रह का त्याग किया है। अब श्रमण भगवान् महावीर के पास आजीवन सब प्रकार के हिंसा, झूठ, अदत्त, कुशील और परिग्रह का त्याग करते हैं। हम सर्वथा, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग,द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, अरतिरति, मायामृषा और मिथ्यादर्शनशल्यरूप अकरणीय पापकर्म का आजीवन त्याग करते हैं। जीवन भर के लिये सब प्रकार का अनशनादि चतुर्विध आहार भी छोड़ते हैं और यह भी शरीर जो आज तक इष्ट, कांत एवं अत्यन्त प्रेमपात्र रहा जिसको सदा भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, दंश-मच्छर, चोरव्याल और राग-शोक से बचाते रहे, उस प्रिय तन की भी अन्तिम श्वासोच्छ्वास के साथ हम ममता छोड़ते हैं। अब कुछ भी हो, इस ओर ध्यान नहीं देंगे। यह पंडितमरण ग्रहण करने की विधि है।

इस प्रकार वे संलेखनापूर्वक आमरण अनशन में काल की अपेक्षा नहीं करते हुए विचरते रहे। अन्तिम समय अनशनपूर्वक समाधिभाव में मरण पाकर ब्रह्मलोक के अधिकारी बने। उन्होंने अपना मरण सुधार लिया।

आत्महत्या और समाधिमरण-

बहुत से लोग यह समझते हैं कि संथारा या भत्तपच्चक्खाण से मरना आत्महत्या है। उनको समझना चाहिये कि आत्महत्या और समाधिमरण में बड़ा अन्तर है। आत्महत्या में निष्कारण शोक या मोहादिवश शरीर नष्ट किया जाता है। उसमें चिंता-शोक की आकुलता या मोह की विकलता होती है, जबकि

समाधिमरण में भय, शोक को भूल कर प्रसन्न मन से सबको मैत्रीभाव से देखते हुए निर्मोह भाव में देह त्याग किया जाता है। आत्महत्या में देह का दुरुपयोग है, जब कि समाधिमरण सभी प्रकार के वेगों को शान्त कर स्वस्थ मन से आयुकाल की निकट में समाप्ति समझ कर किया जाता है।

आत्महत्या किसी कामना को लेकर होती है। उसमें क्रोध, लोभ या शोक, मोह कारण होते हैं, जबकि समाधिमरण निष्काम होता है। इसमें सभी प्रकार के विकारों को नष्ट कर केवल आत्मशुद्धि का ही लक्ष्य होता है।

समाधिमरण में ये पांच दूषण माने गये हैं–

1. इस लोक में तन, धन, वैभव आदि सुखों की इच्छा करना।
2. इन्द्रादि पद या स्वर्गीय सुख की आशा करना।
3. अधिक जीने की इच्छा करना।
4. कष्ट से घबराकर शीघ्र मरने की इच्छा करना।
5. कामभोग अर्थात् इन्द्रिय–सुखों की वांछा करना।

समाधिमरण में कोई कामना नहीं रहती। वहाँ शरीर को अक्षम समझ कर या शील धर्मादि की रक्षा के लिये अनिवार्य समझ कर पवित्र हेतु से आत्महित के लिये शरीर त्यागा जाता है। अतः यह किसी तरह आत्महत्या नहीं कहा जा सकता। यह तो समाधिमरण या पंडितमरण है।

मरण महिमा–

मनुष्य चाहे जैसी भी उच्च कुल, जाति या योनि में उत्पन्न हुआ हो, यदि जीवन का संध्यामरण अंधकारपूर्ण है तो उसका सारा परिश्रम और साधन–संकलन व्यर्थ है। उसका जन्म दुःखवृद्धि के लिये है। वास्तव में जीवन शिक्षाकाल है और मरण परीक्षा–काल। जीवन कार्यकाल है और मरण विश्रांतिकाल। जैन महर्षिओं ने कहा है कि– जिसका मरण सुधरा उसका जीवन सुधरा समझो और मरण बिगड़ा तो जीवन बिगड़ा समझो; क्योंकि मरण की संध्या पार करके ही प्राणी जीवन के नवप्रभात की ओर जाता है। शास्त्र में भी कहा है–

अन्तोमुहुत्तंमि गए, अन्तोमुहुत्तंमि सेसए चेव।
लेसाहिं परिणयाहिं जीवा गच्छन्ति परलोयं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 34.60

जिस लेश्या में जीव काल करता है। अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर जीव परलोक में भी उसी लेश्यास्थान में जाकर उत्पन्न होता है। अतः आत्महितैषियों को मरण सुधार की ओर लक्ष्य देना अत्यावश्यक है। शास्त्र कहते हैं कि तनधारी प्राणिमात्र को मरना तो है ही, चाहे धैर्यपूर्वक कष्टों को शांति से सहकर मरे या कायर की तरह दीन होकर मरे। तन,धन एवं परिवार के लिये अकुलाते हुए मरे या सब से ममता हटा कर निराकुल भाव से मरे। सत्यशील की आराधना करते हुए मरे अथवा शीलरहित अव्रत दशा में मरे। दोनों दशा में मरना तो अवश्य है। तब कायर की तरह बिलखते मरने की अपेक्षा संयमशील होकर धैर्य से हंसते हुए मरना ही अच्छा है। कहा भी है -

धीरेण वि मरियव्वं, काउरिसेण वि अवस्सं मरियव्वं।
दुण्हंपि हु मरियव्वे, वरं खु धीरत्तणे मरिउं।।
सीलेण वि मरियव्वं निस्सीलेण वि अवस्सं मरियव्वं।
दुण्हंपि हु मरियव्वे, वरं खु सीलत्तणे मरिउं।।
-आतुरप्रत्यख्यान, 64-65

उर्दू कवि ने भी कहा है-

हँस के दुनियां में मरा कोई, कोई रोके मरा।
जिन्दगी पाई मगर, उसने जो कुछ होके मरा।

विद्वानों को ऐसे ही मरण से मरना चाहिये। इस प्रकार मरने वाले मरकर भी अमरता के भागी होते हैं।

अभ्युद्यत मरणविधि- (टिप्पण) विवेकी पुरुष जीवन की अन्तिम घड़ियों में पूरी सतर्कता रखते हैं, क्योंकि उस समय की जरासी गलती बने-बनाये काम को बिगाड़ देती है। अतः ज्योंही उन्हें जीवन-यात्रा में लम्बे समय तक शरीर टिकनेवाला नहीं है ऐसा प्रतिभासित होता है, त्योंही बिना विलम्ब वे मरण को शानदार बनाने के लिये कटिबद्ध हो जाते हैं। तन, धन, परिजन और सम्मान से मन मोड़कर वे एक मात्र आत्मलक्षी हो जाते हैं। तब पराये गुणावगुण देखने की अपेक्षा उनको आत्मदर्शी होकर अपना निरीक्षण करना ही अधिक प्रिय होता है और जीवन की छोटी-मोटी कोई भी चूक हो उसको बिना संकोच के गीतार्थ के पास आलोचना द्वारा प्रगट करना और यथायोग्य प्रायश्चित्त से उसकी शुद्धि करना उनका प्रधान लक्ष्य होता है। जैसे सुयोग्य वैद्य भी अपनी चिकित्सा दूसरे से

कराता है, वैसे ज्ञानसंपन्न साधक भी अन्य गीतार्थ के सम्मुख अपनी आलोचना करते और आत्मशुद्धि करते हैं।

मरण की तैयारी के लिये शास्त्रों में पहले संलेखना का विधान है। वह जघन्य 6 मास और उत्कृष्ट 12 वर्ष की होती है। उत्तराध्ययन सूत्र के 36 वें अध्याय में कहा है कि उत्कृष्ट संलेखना 12 वर्ष की , मध्यम 1 वर्ष और जघन्य 6 मास की होती है। जो इस प्रकार है- पहले 4 वर्ष दूध आदि विगय का त्याग किया जाता है और दूसरे चार वर्ष में उपवास, बेला आदि विचित्र तप किये जाते हैं। फिर दो वर्ष एकान्तर तप और पारणक में आयंबिल किया जाता है। ग्यारहवें वर्ष में 6 महीने का सामान्य तप किया जाता है और 6 महीने का विकृष्ट तप किया जाता है। इसमें आयंबिल भी परिमित किये जाते हैं। बारहवें वर्ष में उपवास आदि के पारणक में कोटि सहित आयंबिल आदि किये जाते हैं। बीच-बीच में मास और पक्ष के अनशन भी करते हैं। (अ. 36. 252-256)

व्यवहारसूत्र के दशम उद्देशक के भाष्य में भी इसका विस्तार से वर्णन मिलता है। वहाँ प्रथम के चार वर्षों में विचित्र तप का इच्छानुसार-कामगुण पारणा और दूसरे चार वर्षों में विगय त्यागपूर्वक पारणा का उल्लेख है (भाष्य 412 से 421)। मध्यम और जघन्य संलेखना भी ऐसे मास और पक्ष के विभाग से किया जाता है। इस प्रकार संलेखना के अनन्तर गुरु या गीतार्थ परीक्षित ही सामान्य रूप से इस मरण को स्वीकार करते हैं।

संलेखना द्वारा केवल शरीर को ही क्षीण नहीं किया जाता, बल्कि अन्तर के विकारों को भी क्षीण किया जाता है। जब तक आन्तरिक विकार क्षीण नहीं होते, साधक उत्तम मरण को प्राप्त नहीं कर सकता। इसके लिये पहले परीक्षा की जाती थी। मनोनुकूल उत्तम भोजन को पाकर भी जब मरणार्थी उसको ग्रहण नहीं करता तब तक उसकी अगृध्नुता समझली जाती थी। इस पर एक छोटा उदाहरण दिया जाता है-

किसी समय एक आचार्य के पास भक्त परीक्षार्थी शिष्य आया और उसने कहा, "मैं भक्त प्रत्याख्यान करना चाहता हूँ।" तब आचार्य ने पूछा-"तुमने संलेखना की है या नहीं?" शिष्य को आचार्य की बात से विचार हुआ। उसने सोचा मेरा शरीर हड्डी का पंजर सा हो चुका है, लोहू-मांस का कहीं नाम भी नहीं, फिर भी गुरुजी पूछते हैं कि संलेखना की या नहीं! रोष में आकर उसने अपनी

अंगुली तोड़ डाली और बोला-"महाराज! देखो रक्त की एक बूंद भी नहीं है, क्या अब भी संलेखना बाकी है।" गुरुजी ने कहा-"वत्स! यह तो द्रव्य संलेखना का रूप है जो तेरे शरीर से प्रत्यक्ष दिखता है, किन्तु अभी भाव संलेखना करनी है, कषाय के विकारों को सुखाना है। इसीलिये मैंने पूछा था कि संलेखना की या नहीं। जाओ, अभी भाव संलेखना करो। फिर भक्त पच्चक्खाण संथारा प्राप्त होगा (व्यवहार भाष्य 450) इस प्रकार द्रव्य-भाव-संलेखनापूर्वक किया गया मरण ही पंडितमरण है। मरणान्तिक कष्ट, आघात-प्रत्याघात वा आतंक से निकट भविष्य में ही देह छूटने वाली हो वैसी स्थिति में द्रव्य संलेखना की आवश्यकता नहीं होती। उस समय आलोचनापूर्वक आत्मशुद्धि की जाती है और विचार एवं आचार की पूर्ण शुद्धि के साथ सर्वथा पापों के त्याग कर लिये जाते हैं।

संदर्भः-

1. कइविहेणं भंते! मरणे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे मरणे पण्णत्ते। तं जहा- आवीचियमरणे, ओहिमरणे, आदिंतियमरणे, बालमरणे, पंडियमरणे। आवीचियमरणे णं भंते!.............एवं तं चेव णवरं णियमा संपडिकम्मे! सेवं भंते! भत्ते ति-भगवती शतक 13, उद्देशक 7, सूत्र 496
2. तिविहे मरणे पण्णत्ते तं जहा-बालमरणे, पंडियमरणे, बालपंडियमरणे। बालमरणे तिविहे पण्णत्ते तं जहा-ठिअलेस्से, संकिलिट्ठलेस्से, पज्जवजातलेस्से। पंडियमरणे तिविहे पण्णते तं जहा-ठिअलेस्से, असंकिलिट्ठलेस्से, पज्जवजातलेस्से। बालपंडियमरणे तिविहे पण्णत्ते तंजहा-ठिअलेस्से, असंकिलिट्ठलेस्से, पज्जवजातलेस्से।-स्थानांग 3, सूत्र 222
3. दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं पणियाइं, णो णिच्चं कित्तियाइं,णो णिच्चं पूइयाइं, णो णिच्चं पसत्थाइं, णो णिच्चं अब्भणुन्नायाइं भवंति। तंजहा-बलयमरणे चेव, वसट्ट मरणे चेव 1, एवं णियाणमरणे चेव, तब्भवमरणे चेव 2, गिरिपडणे चेव, तरुपडणे चेव 3, जलणप्पवेसे चेव, जलणप्पवेसे चेव 4, विसभक्खणे चेव, सत्थोवाडने चेव 5। दो मरणाइं........ जाव णो णिच्चं अब्भणुन्नायाइं भवंति, कारणेण पुण अप्पडिकुट्ठइं। तंजहा-वेहाणसे चेव, गिद्धपट्ठे चेव 6।

प्रवचन

दर्शनविशुद्धि से पवित्र एक ज्ञानपुंज चारित्र (2)

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

पौष शुक्ला चतुर्दशी, संवत् 2066 तदनुसार दिनांक 30 दिसम्बर, 2009 को पाली में फरमाए गए मुनिश्री के प्रवचन का संकलन एवं संपादन श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली ने किया है। प्रवचन का प्रथम अंश मार्च अंक में प्रकाशित हुआ था। शेषांश यहाँ प्रकाशित है। **-सम्पादक**

आप सामायिक करें, प्रतिक्रमण करें, फिर भी क्रोध करते रहें, लड़ाई-झगड़े करते रहें, लोभ की कोई सीमा नहीं करें तो धर्म के प्रति आज की पीढ़ी का, जो अभी प्रबुद्ध नहीं है, आपके व्यवहार को देखकर, धर्म के प्रति अरुचि होना अस्वाभाविक नहीं होगा। धार्मिक क्रियाएँ करने वालों को यह आत्मसात् करना होगा कि ये क्रियाएँ और व्रत-नियम हमारे अभ्युदय और निःश्रेयस का कारण बनें। उन्हें अपना व्यवहार एवं भाव बदलना ही होगा। यह समझना होगा कि क्रोध धर्म नहीं है, क्षमा धर्म है। द्वेष धर्म नहीं है, प्रेम धर्म है। लोभ धर्म नहीं है, संतोष धर्म है। वासना धर्म नहीं है, आराधना धर्म है। राग धर्म नहीं है, विराग धर्म है। अहंकार धर्म नहीं है, विनय और समर्पण धर्म है। विभाव में रहना धर्म नहीं है, स्वभाव में रहना धर्म है। गुरुदेव कहते थे कि धर्म-साधना ऐसी हो जिससे जीवन में प्रबुद्धता एवं दिव्यता आये। हम व्यवहार धर्म का पालन करते हुए निश्चय धर्म पर पहुँच जायें। धर्म का लक्ष्य तो आखिर विकारों से मुक्ति और अन्त में जन्म-मरण से मुक्ति है। इसीलिये तो गुरुदेव ने सामायिक के साथ स्वाध्याय को जोड़ा, क्योंकि बिना सम्यक् ज्ञान के धर्म का मर्म नहीं समझ सकते।

मैं स्मरण दिलाना चाहता हूँ हमारी आगमकालीन श्रावक जीवन की गौरवशाली परम्परा का, जब श्रावकों के सैद्धान्तिक ज्ञान से देव भी निरुत्तर हो जाते थे। प्रभु ने ऐसे श्रावकों की साधु-साध्वी समुदाय के बीच प्रशंसा करके उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। श्रावक जितना ज्ञान से सम्पन्न होगा, साधु समुदाय की साधना भी उतनी ही तेजस्वी होगी। आपने 'दीया तले अंधेरा' कहावत सुनी है, पर एक जलते हुए दीपक के साथ दूसरा जलता हुआ दीपक रहेगा तो दोनों दीयों के

नीचे अंधेरा नहीं रहेगा। श्रावक और साधु ऐसे ही दो दीपक हैं जो साधना एवं आराधना में एक-दूसरे के पूरक है। आज जो शिथिलता बढ़ रही है, आचरण में ग्रहण लग रहा है उसका एक मुख्य कारण श्रावक एवं साधु समुदाय में आगमानुकूल सैद्धान्तिक ज्ञान की कमी है। श्रावक यदि ज्ञानी होगा तो साधु भी जागरूक रहेगा। इससे दोनों के संस्कारों की रक्षा होगी। गुरुदेव का दृढ़ विश्वास था कि यदि हमारे मन में सम्यक् ज्ञान का उजाला होगा तो हमें श्रेय, हेय और उपादेय का बोध होगा। इसके अभाव में हम संसार के प्रवाह में बहते ही रहेंगे और कभी भी आत्मा का परिचय, उसकी प्रतीति एवं उससे साक्षात्कार नहीं कर सकते।

एक जागरूक व्यक्ति के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि मैं कौन हूँ? इस प्रश्न का उत्तर पाने में ज्ञान सहायक होता है। अज्ञान के अंधेरे में भटकते हुए व्यक्ति के मन में प्रथम तो यह प्रश्न ही नहीं उठेगा कि मैं कौन हूँ? और यदि ऐसा प्रश्न उठ भी गया तो वह उसकी बाह्य प्रतिष्ठा से ही जुड़ा रहेगा, आत्म प्रतिष्ठा से नहीं। फलतः वह सत्य की दिशा में आगे नहीं बढ़ सकता। एक सम्यग्ज्ञानी ही इस प्रश्न का समाधान पा सकता है, क्योंकि ज्ञान उसके लिये एक पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभायेगा। भगवान् के मन में भी यही प्रश्न उठे थे कि मैं कौन हूँ और कहाँ से आया हूँ? उनका परम ज्ञान इन प्रश्नों का समाधान बना। उनको जब समाधान मिला तो प्रश्न मिट गये और केवल आत्मबोध रह गया। आचारांग, जिसमें भगवान् का परमज्ञान निबद्ध है, की शुरुआत भी इसी प्रश्न से होती है। अध्यात्म का प्रारम्भ इसी प्रश्न से होता है। यही प्रश्न साधना की बुनियाद है। आचारांग की अन्तर्यात्रा हमें इसका समाधान प्रदान करती है। चलने के पहले प्रकाश चाहिए ताकि सही रास्ते पर चल सकें, भटकें नहीं। इसीलिये क्रिया के पहले ज्ञान होना अति आवश्यक है।

पूज्य गुरुदेव स्वयं तो ज्ञान के पुंज थे ही, सामायिक और स्वाध्याय के प्रखर उद्घोष से जन-जन में ज्ञान के प्रति अभिरुचि जगाने वाले थे। अपने शिष्यों के लिये स्वयं गुरुदेव ने उनके आगम पठन-पाठन में अपने श्रम का नियोजन किया। हमारे वर्तमान आचार्य श्री का अगाध आगम ज्ञान गुरुदेव का ही प्रसाद है। अन्य मुनिगण भी आगम ज्ञान से समृद्ध हों, इस ओर उनकी सतत जागरूकता रही। उदाहरण के तौर पर हमारे प्रमोदमुनि जी को लीजिये। उनकी प्रतिभा और बहुश्रुतता से कौन प्रभावित नहीं है। यह भी तो गुरुदेव की ही देन है।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि सम्यग्दर्शन के अभाव में ज्ञान नहीं होता और ज्ञान के बिना चारित्र गुण की प्राप्ति नहीं होती। सम्यग्दर्शन के धरातल पर ही गुरुदेव का ज्ञान और चारित्र टिका था। सम्यग्दर्शन के आठों ही अंग उनके जीवन के अंग बन गये थे। उनके रोम-रोम में जिनवाणी के प्रति आस्था और श्रद्धा प्रकट होती थी। जिनवाणी के प्रति वे संशय से रहित थे अतः सत्य के नजदीक थे। संशय की अवस्था में व्यक्ति श्रेय और हेय का निर्णय नहीं कर पाता है एवं साध्य की ओर नहीं बढ़ सकता। अपनी तृष्णा पर विजय प्राप्त कर वे निष्कांक्षी बन गये थे। उनके मन में किसी के प्रति दुर्भाव या नफरत नहीं थी। वे कभी अपने गुणों का बखान नहीं करते थे। आज हम औरों के गुणों को तो छिपा लेते हैं और उनके अवगुणों को रस ले-लेकर कहते फिरते हैं। ये दोनों ही प्रवृत्तियाँ हीन दृष्टि की परिचायक हैं। गुरुदेव हमेशा दूसरों की निन्दा-विकथा से दूर रहे, इसीलिये इतर सम्प्रदायों से उनके सम्बन्ध मधुर थे। उनकी दृष्टि गुणग्राहकता की थी। जिनेश्वर के प्रति उनमें अटूट श्रद्धा थी। वीतराग बनने के लिये वीतराग ही उनके लिये शरण थे, आराध्य थे। आज हमारे जैन समाज की क्या स्थिति हो गई है कि हम अपने को अरिहन्त का उपासक तो कहते हैं, लेकिन पूजा सांसारिक देवों की हो रही है। कोई सोमवार को महादेव का व्रत करते हैं तो कोई मंगलवार को हनुमान जी का चालीसा करते हैं और शुक्रवार को संतोषी माता की कथा करवाते हैं तो और कोई कुछ..........यह है जैन उपासकों की हालत। तीर्थंकरों का मूल्य हमने कम आंक लिया। सांसारिक स्वार्थपूर्ति हमारे लिये मुख्य हो गई और कामनापूर्ति के लिये देवी-देवताओं की मनौतियाँ मनाने लगे।

स्थानकवासी परम्परा की मौलिक मान्यता है- निराकार साधना, जड़ पूजा नहीं, केवल भावपूजा। लेकिन आज हम देखते हैं कि समाधिधामों का प्रचलन बढ़ रहा है। क्या यह हमारी मौलिक मान्यता पर प्रहार नहीं है? क्या यह नींव को ही कमजोर करने का उपक्रम नहीं है? गुरुदेव ने इन प्रवृत्तियों को ठीक नहीं माना। एक बार एक श्रद्धालु जब उनकी फोटो लेने लगा तो उन्होंने अपने चेहरे को कपड़े से ढक लिया और उसे कहा कि मुझे कागज में नहीं, अपने दिल में उतारो। उनका उत्तर कितना संयत और सारपूर्ण था। भावुक भक्त फोटो के द्वारा अपनी श्रद्धा का परिचय देते हैं, यह एक मूढ़ धारणा है, जिसका निराकरण आवश्यक है। दर्शन विशुद्धि में आस्था का सोपान इतना कमजोर हो गया है कि थोड़ी-सी प्रतिकूलता होते ही

व्यक्ति जैनधर्म के शाश्वत कर्म-सिद्धान्तों को भुलाकर अन्य देवी-देवताओं की आराधना में लग जाता है। लोग हमें भी कहने में नहीं चूकते कि महाराज साहब, देवी-देवताओं की मनौती करने से कुछ तो होता ही है और उसके प्रमाण में कई प्रसंग सुना देते हैं। वे भूल जाते हैं कि यह तो मात्र एक काकतालीय न्यायवत् बात है कि कौवे का आकर बैठना हुआ और डाली का टूटना हुआ। डाली कौवे के उद्यम से नहीं टूटी यह तो मात्र एक संयोग था। लकड़ी में दीमक के लगने से एक खूबसूरत कलाकृति उभर जाये तो दीमक कोई कलाकार नहीं हो जाता। हम अपने भय या प्रलोभन के नाते अपनी श्रद्धा को भी दांव पर लगा देते हैं। जब देवाधिदेव अरिहन्त से हमें मार्गदर्शन मिल गया तो क्यों दूसरे देवों की शरण में जाकर भटकते रहें। गुरुदेव की तरह देवाधिदेव के सच्चे उपासक बनकर हम कल्याणपथ पर आगे बढ़ें और जैनत्व का गौरव जीवन में प्रतिष्ठापित करें।

वात्सल्य गुण गुरुदेव में कूट-कूट कर भरा था। सभी के साथ उनकी आत्मवत् दृष्टि थी। सभी से प्रेम था, किसी से शत्रुता नहीं थी। उन्होंने ऐसा जीवन जीया कि उनका जीवन ही प्रभावना बन गया। उसकी महक आज भी हमें प्रभावित कर रही है। उनका दर्शन अन्तर-दर्शन था, प्रदर्शन नहीं। उनका कहना था कि श्रद्धा रहित साधना निष्प्राण हो जाती है।

मोक्ष मार्ग पर चलने के लिये तीन पाथेय हैं- ज्ञान, दर्शन और चारित्र। इन तीनों के बिना मोक्ष की प्राप्ति सम्भव नहीं। इन तीनों के आराधन से ही व्यक्ति अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होकर परम ऐश्वर्य को प्राप्त करता है। दर्शन यानी खुद को देखना। ज्ञान यानी जो द्रष्टा ने देखा उसे जानना। जो देखा और जाना उसे जीवन में अनुस्यूत करने को ही चारित्र कहते हैं। गुरुदेव के जीवन में इन तीनों का एकात्मक रूप था। उन्होंने पूर्ण आस्था के साथ विशुद्ध आचरण का पालन करते हुए अपनी साधना से न केवल अपने जीवन को ही संवारा-सजाया, अपितु पूरे संघ का गौरव बनाये रखा। यहाँ तक कि दैनिक कार्यों में भी उनकी जागरूकता बेजोड़ थी। ऐसी अनेक घटनाओं से उनका जीवन भरा हुआ है। उदाहरण के रूप में एक बात की चर्चा करना चाहता हूँ। एक बार गुरुदेव ने विहार कर दिया और काफी रास्ता भी तय कर लिया। तभी उन्हें याद आया कि उनकी माला पीछे छूट गई है। एक श्रद्धालु ने कहा कि वह जाकर अभी लेकर आ जायेगा। गुरुदेव ने उसे मना कर दिया और अपने ही एक संत को भेजकर माला मंगवाई। वे अपने कार्यों में गृहस्थ

की सेवा अथवा वाहन का उपयोग नहीं चाहते थे। चरित्र निर्माण की दृष्टि से गुरुदेव का स्पष्ट अभिमत था कि सन्त अपने चरित्र का ध्यान रखे और गृहस्थ अपने चरित्र का ध्यान रखे। गृहस्थ संत को श्रद्धा की दृष्टि से देखे और संत अरिहन्त बनने का लक्ष्य रखे। गुरुदेव ने क्रिया आराधन पर पूरा जोर दिया। यही कारण है कि आज संघ पूज्य रतनचन्द्र जी म.सा. की मर्यादित रेखा में वर्द्धमानता को पाता हुआ सुरक्षित है।

गुरुदेव निश्चय के सुमेरु थे, कर्म-समाधि में स्थिर थे, अतः स्थितप्रज्ञ थे। चित्त की समता निष्काम पुरुषों को ही प्राप्त हो सकती है। उनके हृदय में करुणा थी, प्रेम था, इसीलिये उनके जीवन में निष्कामता के फूल खिले थे। उनका हृदय अत्यन्त सरल था। सरल वही होता है जो माया में नहीं है। उनका जीवन स्वयं के लिये और दूसरों के लिये प्रकाश था। संयम उनका सहज धर्म था। कर्म करते हुए भी वे कर्मों से अलिप्त रहे- यही तो है कर्म करते हुए कर्मों को काटना।

उनका जीवन अप्रमत्तता का एक दस्तावेज है। उस अप्रमत्त योगी ने इकसठ वर्ष पर्यन्त आचार्य पद के गुरुतर दायित्व का निर्वहन करते हुए संघ को सफल नेतृत्व दिया। वे फिर भी पूर्ण अनासक्त एवं निःस्पृह बने रहे। उनका जीवन एक विरल साधक की अनुभूति कराता है। वे अनुत्तर योगी न केवल आत्मद्रष्टा ही थे, अपितु युगद्रष्टा एवं भविष्यद्रष्टा भी थे। उन्होंने अपने संघ की पाठशाला में उच्च कोटि के साधु-साध्वियों का निर्माण किया। उसी का फल है कि आज हमें गुरु हीरा और गुरु मान जैसे संतों के रूप में दिव्य उपहार मिले हैं। इन दोनों महान् साधकों में मानो गुरुदेव स्वयं प्रतिबिम्बित हो रहे हैं। वर्तमान संघनायक के रूप में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज साहब की दूरदर्शिता, निर्णायक क्षमता, संघ नेतृत्व की कुशलता पूरी स्थानकवासी परम्परा में एक उदाहरण के रूप में देखी जाती है। जिस ओर भी उनका विहार हुआ, वहाँ जन-जन में धर्म के प्रति उत्साह द्विगुणित होता गया एवं धर्म के प्रति अपूर्व चेतना जगी। उनके प्रवास की प्रभावना की सुवास लोगों को निरन्तर मिल रही है। उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की सरलता और सहजता ने तो लोगों को मानो सम्मोहित कर लिया है। केवल उनके दर्शन मात्र से ही जन-जन में श्रद्धा का निर्झर प्रवाहित हो जाता है। शासन प्रभावना में उपाध्याय भगवन्त का मूक योगदान उनके जीवन्त आचरण से प्रभावी हो रहा है। साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.

प्रभृति महासतियाँ गुरुदेव के विचारों के अनुरूप चारित्र धर्म का पालन करती हुई अपनी प्रवचन-प्रभावना से संघ की गौरव गरिमा में चार चाँद लगा रही हैं और लोगों में धर्म के प्रति आकर्षण पैदा कर देती हैं। गुरुदेव के कृपा प्रसाद से रत्नत्रयी से सुसम्पन्न साधु-साध्वियों से आज संघ उन्नयन पथ पर गतिमान है। सेवा और विनय गुण में हमारे महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. को देखकर आचार्य हमीरमल जी म.सा. की याद ताजा हो जाती है। एक अन्तेवासी शिष्य के रूप में वे सेवा, समर्पण और विनय के अप्रतिम उदाहरण हैं।

बन्धुओं, मेरे संबोधन का एकमात्र प्रयोजन यही है कि देहातीत अवस्था में भी हस्ती रूप दीप जल रहा है। आप भी अपना दीप उससे जला लेंगे तो जीवन का रूपान्तरण हो जायेगा, उनके प्रकाश में आपका कल्याण पथ प्रशस्त हो जायेगा। यदि ऐसा हुआ तो यह अध्यात्म-चेतना वर्ष आपके लिये सार्थक हो जायेगा।

(समाप्त)

गीत

आचार में उत्तुंग हो

(मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.)

आचार में उत्तुंग हो, तुम सुमेरू रूप हो।
नाम हीराचन्द्र है, नाम के अनुरूप हो।।टेर।।

ज्ञान के आकाश में, दिव्य तेज दीप हो,
शक्ति के अजस्र स्रोत, प्रेरणा प्रदीप हो,
संयम के साम्राज्य में, शोभित जैसे भूप हो।।1।।

मर्यादा प्रतिपाल हो, आस्था के आयाम हो,
क्लेश भरे संसार में, जीवों के विश्राम हो,
अंधकार की राह में, बोधि की तुम धूप हो।।2।।

साधना के पंथ में, अन्यतम प्रतिमान हो,
रत्न संघ की आन हो, 'हस्ती' की पहचान हो,
व्यसन मुक्ति के दूत हो, उपदेष्टा अनूप हो।।3।।

मैत्री से परिपूर्ण हो, भावों से माध्यस्थ हो,
करुणा से सम्पन्न हो, चिंतन में आत्मस्थ हो,
'गौतम' के आराध्य हो, वीतराग स्वरूप हो।।4।।

-प्रवचन में उच्चारित एवं श्री अविनाश सालेचा द्वारा संकलित

अध्यात्म-चेतना वर्ष

आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला

डॉ. दिलीप धींग

आध्यात्मिक चेतना का हुआ उजाला।
आचार्य हस्ती ने कमाल कर डाला।।

कोई तनाव में जी रहा, कोई मुटाव में।
कोई विभाव में जी रहा, कोई अभाव में।
सामायिक-स्वाध्याय का करके आह्वान,
सारे सवालों को हल कर डाला।
आचार्य हस्ती ने..... ।।

कहीं ज्ञान कोरा, कहीं क्रिया का ढिंढोरा।
एकांगी दृष्टिकोण को उन्होंने झकझोरा।
कथनी-करनी में भेद रखा नहीं,
आप्त-वचनों को आचरण में ढाला।
आचार्य हस्ती ने..... ।।

भेदभाव से परे सबको अपनाया।
नागराज ने भी आशीष पाया।
दया के देवता, करुणा के सागर ने,
सबको पिलाया अमृत का प्याला।
आचार्य हस्ती ने..... ।।

व्यथित हुए देख, लड़ते भाई-भाई।
सच्चे प्रेम की बाँसुरी बजाई।
मैत्री, एकता के सन्देशवाहक,
मोती भिन्न-भिन्न, अभिन्न माला।
आचार्य हस्ती ने..... ।।

जमाना जब प्रपंच में पड़ा था।
वह युग मनीषी निर्विवाद खड़ा था।
अद्भुत औदार्य, गुण-दृष्टि अपनाकर,
सारे मनो-मालिन्य को धो डाला।
आचार्य हस्ती ने..... ।।

साधक समय के, समय के प्रहरी।
आज की, कल की, चिन्ता थी गहरी।
अतीत की प्रेरणा से आगत का सृजन,
इतिहास पुरुष ने इतिहास रच डाला।
आचार्य हस्ती ने..... ।।

आध्यात्मिक शक्तियों के आलोक-पुंज थे।
अमित सुख-शान्ति के सघन-कुंज थे।
कौन ऐसा जो न हुआ आलोकित,
उनके आभामण्डल में नहाने वाला।
आचार्य हस्ती ने ..... ।।

भेद-विज्ञान को समझा था, जिया था।
सहज अद्भुत संथारा लिया था।
अध्यात्म-पथ के अमर पथिक ने,
छिन्न-भिन्न कर डाला कर्मों का जाला।
आचार्य हस्ती ने..... ।।

-International Law Centre, Mylapore,
61-62, Dr. Radhakrishnan Salai, Chennai-600004

अनमोल वचन

1. संसार के सुख चार और दुःख हजार हैं।
2. आत्मा में बसना तो पर्युषण है और दुनिया में बसना प्रदूषण है।
3. जिसके जीवन में गुरु नहीं उसका जीवन शुरु नहीं।
4. धर्म तो गुलाब है और पाप तेजाब है।

-महासती श्री मुदित प्रभा जी म.सा. के प्रवचनों से संकलित

आचार्य पद-दिवस पर

गुरुवर हीरा तारणिया

श्री प्रेमचन्द गांधी

हीरा गुरु बोले, सब जन डोले
बढ़ी मोक्ष जावण री आस रे
गुरुवर हीरा तारणियां।

कठिन-कठिन है राह शिवपुर की,
तुमने सरल बताई, ओ स्वामी तुमने सरल बताई
मोक्ष जाने की उत्कंठा को
तुमने सहज जगाई, ओ स्वामी तुमने सहज जगाई
अब शक्ति दो, प्रभु भक्ति दो, मेरे पालन हार रे
गुरुवर हीरा तारणियां।

मैं निर्बल, तुम सबल हो स्वामी,
मुझको पार कराओ, ओ स्वामी मुझ को पार कराओ
चौरासी के चक्कर से
अब भवोदधि पार उतारो, ओ स्वामी, भवोदधि पार उतारो
थाने नमाऊँ, थारां गुण गाऊँ, अब तो पूरो आस रे
गुरु हीरा तारणियां।

पाँच न जानूँ, बारह न मानूँ
फिर भी आस लगाऊँ, ओ स्वामी फिर भी आस लगाऊँ
तुम पारस, मैं लोहा स्वामी
छूकर मुझे दिखाओ, ओ स्वामी छूकर मुझे दिखाओ
मैं शरणागत, तुम करुणाकर, अब तो लेओ संभाल रे
गुरुवर हीरा तारणियां

आप कल्पतरु, चाहूँ कल्पतरु
निराश मुझे न कीजे, ओ स्वामी निराश मुझे न कीजे

सेवक रा थे स्वामी,

भव दुःख दूर करीजे, ओ स्वामी भव दुःख दूर करीजे,

मैं हरषाऊँ चित्त हुलसाऊँ, माने मिलिया खेवनहार रे

गुरुवर हीरा तारणियां

आप मोहिनी मोती जाया, दोनों ने कुल गांधी पाया

एक तिरे, दूजो रह जावे, जग हँसी इणमें हो जावे

मुझको को भी तारो पार उतारो, थारो मानूं बड़ो उपकार रे

गुरुवर हीरा तारणियां

-3-ई-191, गली नं. 2, हरिनगर, नई दिल्ली

सामायिक : लक्ष्य की प्राप्ति

श्री लक्ष्मीचंद जैन

1. हमारा लक्ष्य मोक्ष है, उसकी प्राप्ति का उपाय क्षमा है। क्षमाशील बनने की साधना सामायिक से सम्भव है।
2. हमारा लक्ष्य है आत्मानन्द। इसके लिए धैर्यपूर्वक सामायिक-साधना उत्तम साधन है। इसकी महिमा जैनागमों ने तो गायी है, पाश्चात्त्य दार्शनिक जॉन रस्किन ने भी कहा है- धैर्य समस्त आनन्द और आत्मिक शक्ति के विकास का मूल है।
3. सामायिक श्रावक का श्रृंगार है इसके बिना हम अपनी पहचान खो बैठते हैं। दूसरों को प्रभावित करने की मौन साधना सामायिक है। यह हमारे व्यक्तित्व में निखार लाती है तथा उतावलापन समाप्त हो जाता है।
4. सामायिक पर खर्च किया गया समय हमारे जीवन के समय को सार्थक करता है। माला गिनने वाला मालामाल हो जाता है, कई उलझनें सुलझ जाती हैं।
5. सामायिक की आदत, परमात्मा (अपनी आत्मा) की इबादत है जो सम्पूर्ण प्राणायाम, ध्यान और व्यायाम भी करा लेती है तथा अमूल्य स्वास्थ्य भी प्रदान कर देती है।
6. सामायिक हमें ऊँचा उठाने के लिए झुकना सिखाती है।

-छोटी कसरावद, जिला-खरगोन-451228 (म.प्र.)

Research Paper

The Historical Development of Jaina-Yoga-System and Impacts of Other Yoga-Systems on it; A Comparative and Critical Study (2)

Prof. Sagarmal Jain

Samatva Yoga the fundamental Yoga of Jainism

Sāmāyika or Samatva-yoga is the principal concept of Jainism. It is the first and foremost among six essential duties of a monk as well as of a house-holder. Prākṛta term Samāiya is translated into English in various ways, such as observance of equanimity, viewing all the living beings as one's own self, conception of equality, harmonious state of one's behaviour integration of personality as well as righteousness of the activities of mind, body and speech. Ācārya Kundakunda also used the term samahi (Samadhi), in the sense of Sāmāyika where it means a tensionless state of conciousness or state of self-absorption. In general sense the word Sāmāyika means particular religious practice through which one can attain equanimity of mind. It is an end as well as means in itself. As a means it is a practice for attaining equanimity while as end it is the state in which self is completely free from the flickerings of alternative desires and wishes, excitements and emotional disorders. It is the state of self-absorption or resting in one's own self. In Āvaśyakaniryukti, it is mentioned that the Sāmāyika is nothing but one's own self in it's pure form. Thus, from transcendental point of view, Sāmāyika means realisation of own self in its real nature.[15] It is the state in which one is completely free from attachment and aversion. In the same work Ārya Bhadra also mentions various synonyms of Sāmāyika. According to him equanimity, equality, righteousness, state of self-absorption, purity, peace, welfare and happiness are the different names of Sāmāyika.[16] In

Anuyogadvārasūtra, Āvaśyakniryukti and kundakunda's Niyamasāra, Sāmāyika is explained in various ways. It is said that one who by giving up the movement of uttering words, realizes himself with non-attachment, is said to have supreme equanimity. He, who detached from all injurious or unpious actions, observes threefold control of body, mind and speech and restrains his senses, is said to have attained equanimity. One who behaves equally as one's own self towards all living beings mobile and immobile, is said to have equanimity. Further, it is said that one who observes self-control, vows and austerities, one in whom attachment and aversion do not cause any disturbance or tension and one who always refrains from indulgence, sorrow and ennui, is said to have attained equanimity or Sāmāyika.[17]

This practice of equanimity is equated with religion itself. In Ācārāṇga, it is said that all the worthy people preach religion as equanimity. Thus, for Jains, the observance of religious life is nothing but the practices for the attainment of equanimity. According to them, it is the essence of all types of religious activities and they all, are prescribed only to attain it. Not only in Jainism but in Hinduism also, we find various references in support of equanimity. Gītā defines yoga as equanimity.[18] Similarly, in Bhagavat it is said that the observance of equanimity is the worship of lord.[19]

The whole frame-work of Jaina sādhanā has been built on the foundation of Sāmāyika i.e. the practice for equanimity. All the religious tenets are made for it. Ācārya Haribhadra maintains that one who observes the equanimity or samabhāva will surely attain the emancipation, whether he is Bauddha or the follower of any other religion.[20] It is said in Jaina religious texts that one who observes hard penances and austerities such as eating once in a month or two as well as one who makes the donations of crores of golden coins every day, can not attain emancipation or liberation unless he attains equanimity.[21] It is only through the attainment of

equanimity of mind one can attain emancipation. Ācārya Kundakunda says "What is the use of residing in forest? mortification of body, observance of various fasts, study of scriptures and keeping silence etc. to a saint who is devoid of equanimity" (Niyamasāra 124).

Now we come to the next question how one can attain this equanimity of mind. Mere verbal ṣaying that I shall observe the equanimity of mind and refrain from all types of injurious activities does not have any meaning, unless we seriously practice it in our life.

For this, first of all, one should know what are the causes which disturb our equanimity of mind and then make an endeavour to eradicate them.

It is very easy to say that one should observe the equanimity of mind, but in practice it is very difficult to attain it. As our mental faculty is always in grip of attachment and aversion, what so ever we think or do, is always motivated by either attachment or aversion. Because the vectors of attachment and aversion are solely responsible for the disturbance of mental equanimity, so the practice to attain equanimity depends on the eradication of attachment and aversion. So long as we do not eradicate the attachment and aversion, we are unable to attain equanimity or Samatva-yoga.

Impacts of other Yoga-systems on Jaina-Yoga in this period-

So far as impact of other yoga systems on Jain Yoga is concerned, in the earliest first phase it is very difficult to show the impact of one system on the other system, because we do not find definite evidences. either sculptural or literary of that period to prove one's impact on the another. In that phase the sramanic trend of India was not divided into various schools with a definite philosophical background. But at this second phase, which is known as a canonical period different schools of thought have taken a definite shape with their particular names such as Jainins. Buddhism,

Ājīvaka, Saṁkhya and yoga etc. In this period we do find various similarities Jains yoga system with that of Buddhism and Patañjali, pt. Sukhalalji in his introduction of Tattvārthasūtra has discussed these common features in detail, but according to these similarities or common features it is very difficult to prove one's impact on the another, though it can be generally accepted that these systems have a common source, from which they are developed and this common source was the Indian śramaṇic tradition. In the later times, particularly in sūtra- age we do find some common features in Patañjali's Yogasūtra and Umāswaṭi's Tattvārthsūtra, but being they named and explained differently, it can not be proved as a impact of one's on the another. Though pt. Sukhalalji in his introduction of Tattvārthsūtra has given 21 common points of conceptual similarity between Tattvārthsūtra and yoga-darsana,[22] yet these common features conceptualy denote only the same meaning, but their names are totally different and due to this difference we can not say that one system has borrowed these from the another. It shows only the common source of them. In this canonical age Jainism has its own method of meditation and it is fully accepted that by which the ultimate end of emancipation can be acheived. In Jaina canonical works as well as in Dhyāna-śataka of Jinabhadra the meditation was considered of four kinds i.e. ārta-dhyāna, raudra-dhyāna, dharma-dhyāna and śukla-dhyāna. In these four types of meditations first two i.e. the ārta-dhyāna and raudra-dhyāna were considered as the cause of bondage and the last two i.e. the dharma-dhyāna and śukla-dhyāna were considered as the cause of emancipation, so far as I know these four types of classification of meditations are only the contribution of Jaina Ācāryas and we do not find this type of classification and the names of dhyānas in any other Indian yoga systems and so we can conclued that being some common features it is very difficult to show one's impact on

the another.

Similarly the Samatva yoga, which is a key concept of Jaina-yoga, is also a common feature of Buddhism and Hindusim in general and Bhagavad Gītā in particular. But we can not say that Jainism has borrowed it from Hinduism, because it was propounded in Ācārāṇga which is an earlier work from Bhagavad Gītā.

3. Post Canonical-age-

This period is very important for the development of Jain yoga for two reasons, first of all in this period many yoga works are written in Jaina tradition, secondly this is the period in which the impact of other yoga systems on Jaina-yoga can be clearly seen. So far as the yoga-literature of this period is concerned, though in Jaina cononical works we have some scattered references about five yamas (Mahāvratas), five niyamas, some of the bodily postures, the controlling of sense organas as well as on various aspects of meditation alongwith some common philosophical and religious preaching, but these canonical works can not solely be considered as the works of Jaina-yoga literature. In my opinion the first work on Jaina system of meditation is Jinbhadragani's (6th century A.D.) Dhayāna-śataka. This work is fully devoted to Jaina way of meditation and totally based on Jaina-canonical works such as sthānāṅga and some others. Sthānāṅga deals with four kinds of dhyānas and their sub classes alongwith (i) their objects (ii) their signs (laksaṇa), (iii) their conditions (ālambana), (iv) their reflextions (bhāvanā). But this description of dhyānas is fully at par with canonical works, except some details such as the place of meditation, time of meditation, posture of meditation qualities of an meditator, results of the meditation etc.[23] In this work Jinbhadra deals with first two unauspicious dhyānas in short, and last two auspicious dhyānas in detail, because according to him the first two dhyānas are the causes of bondage, while the last two are the means of emancipation and so that only they can be accepted as limbs of yoga-

sādhanā.

After Jinabhadragaṇi, Haribhadra was the first Jaina Ācārya who has made a very valuable contribution for the reconstruction of Jaina yoga system and the comparative study of Jaina-yoga system with that of other yoga systems. He has composed four important works on Jaina-yoga, namely Yogaviṁśikā, Yogaśataka. Yogabindu and Yoga-dṛṣṭisammuccaya. It is the Ācārya Haribhadra, who has for the first time changed the definition of word yoga in Jaina traditions, as we have already mentioned, that in the canonical period the word yoga is considered as a cause of bondage, while Haribhadra, has changed this definition and said that which joins to the emancipation is yoga. According to him all spiritual and religious activities that lead to final emancipation is yoga. Haribhadra in all his yoga works, commonly opines that all religious and spiritual activities that lead to emancipation are to be considered as yoga. It is to be noted that in his yoga works he explained the yoga in different ways. First in his yoga- viṁśikā, he explained the five kinds of yoga- (1) practice of proper-posture (sthāna-yoga); (2) correct utterence of sound (ūrṇayoga); and (3) proper understanding of the meaning of canonical works (artha); and (4) concentration of mind on a particular object such as Jina image etc. (ālaṁbana) and (5) concentration of thoughts on abstract qualities of Jina or Self (aṇālaṁbana), this fifth stage may also be considered as thoughtless state of the self (nirvikalpa-daśā). Among these five kinds of yoga, first two constitute the external aspect of yoga-sādhanā and last three internal aspect of yoga-sādhanā. In other words first two are karma-yoga and last three are Jñāna-yoga. Haribhadra in his another work yoga-bindu describes another five kinds of yoga such as (1) spiritual-vision (Adhyātma-yoga); (2) contemplation (Bhāvana-yoga); (3) meditation (Dhyāna-yoga); (4) Mental equanimity (Samatā-yoga) and (5) cessation of all activities of mind, speech and

body (Vṛtti-saṁksaya), while in his yoga dṛṣṭi-sammuccaya Haribhadra explains only three types of yoga such as (1) willingness for the self realisation or yogic-sādhanā (Icchā-yoga), (2) the follow up of spiritual orders (Śāstra-yoga) and (3) develop-ment of one's spiritual powers and annihilation of spiritual inertia (Sāmārthya-yoga). These three facets of yoga propounded in yogadṛṣṭisammuccaya of Haribhadra may be compared with the three jewels of Jainism, i.e. right-vision, right-knowledge and right-conduct, because these three jewels are considered in Jainism as a mokṣa-mārga or in other words path of emancipation and so they are yoga. Here one thing to be noted that, though Haribhadra differs regarding the various kinds or stages of yoga in his different works, but one thing, which he unanimously accepts in all his yoga works that yoga is that, which unites to emancipation (मोक्षेण योजनात्‌योगः).

In this period after Haribhadra, there are two other Jaina Ācāryas namely Śubhacandra (11th century) and Hemacandra (12th century) whose contributions in the field of Jaina yoga are remarkable. Śubhacandra belongs to Digambara Jaina tradition and his famous yoga work is known as Jñānārṇava, while the Hemacāndra belongs to Swetambara Jaina tradition and his notable work is known as yoga-śāstra. For yogic sādhanā Śubhacandra prescribes the fourfold virtues of maitri (friendship with all beings), pramoda (appreciation of the merits of others), karuṇā (sympathy towards the needy person) and Mādhyastha (equanimity or indeference towards unruly), as the prerequisite of the auspicious meditation.[29] Here, it is to be noted that these four refelexions are also accepted in Buddhism and yoga-sūtra of patañjali. Secondly while discussing the dharma-dhyāna, he mentions four types of it, such as piṇḍastha, Padastha, Rupastha and Rupātīta, along with five types of dhāraṇās i.e. pārthivi, āgneyi vāyavī (śvasana), väruṇi and tattvarupavati of the piṇḍastha

dhyāna.[30] Here it to be noted that these four types of dhyāṇas and five types of dhāraṇās are only available in Buddhist and Hindu tāntric literature and not in early Jaina- literature. After Śubhacandra, the other important figure of Jaina yoga is Hemacandra. Though Hemacandra in his yoga-śāstra generally deals with three jewels of Jainism i.e. right knowledge, right vision and right conduct, but among these he has given more stress on right conduct. While dealing with meditational methods he also elaborately discusses the piṇdastha, padastha, rūpastha and rupātīta dhyāna along with above mentioned dhāraṇas.[31] But in this regard scholers are of the opinion that he borrowed these ideas from Śubhacandra's Jñānārṇava which is an earlier work of his yogaśāstra.[32]

In short these types of dhyāna and dhāraṇā, first Śubhacandra borrowed from Hindu Tantra and then Hemacandra followed the Subhacandra and thus we can say that in this period the impact of other systems of Yoga sādhanā can easily be seen on Jaina Yoga.

(Continue)

References:-

15. Āvaśyakniryukti, 1048
16. Ibid-1046
17. Niyamasara
18. Gītā 2.48
19. Bhagavata- समत्वं आराधनं अच्युतस्य
20. Haribhadra
21. Uttarādhyānasūtra
22. Tattvārthasūtra-Introduction in Hindi (Pt.Sukhalalji) p. 55
23. Dhyānaśataka
24. Tattvārthasūtra
25. (A) Yoga śataka-2 (B) Yogavimśikā-1
26. Yogavimśikā-2
27. Yogabindu-31
28. Yogadṛṣṭisamuccaya-2
29. Jñānārṇava 27/4-15
30. Jñānārṇava sūtra
31. Yogaśāstra 7/8-9
32. Studies in Jaina philosopy (N.M.Tatia) page 290

आचार्य हस्ती जन्मशती

अमरत्व का वह उपासक (5)

आलेखन - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव चर्चा-वार्ता में समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली नेअपने शब्दों में धारावाहिक रूप में किया है।

यथा नाम तथा गुण

"हे गणिवर हस्ती!
तुम्हें गजेन्द्र कहूँ या गणपति,
अथवा मेरे अन्तःकरण के अधिपति,
नित्य प्रति करता हूँ तेरी संस्तुति,
अंतस् को मिलती है विश्रान्ति,
तेरी संगति, विलग हो गई मेरी विसंगति,
तुझसे प्रीति, मिली जागृति,
हुई अहम् की विस्मृति और आत्मभाव की प्रतीति।"

"हे महामति!
तेरे नाम में मिलती है ज्योति, क्योंकि
इनमें रोशनी घुली है, करुणा पली है।"

पथिक, उस महान् योगी की सौम्य मुखाकृति,
मेरे अंतस् में अंकित है उसकी प्रतिकृति।
एक अमिट अक्षर, आचार्यप्रवर!

मुनिवर, उस मनस्वी को मेरे भावों का अर्पण है,
जो संतों में विभूषण हैं,
जिसके नाम में भी आकर्षण है।

"हे तिरण-तारण!
तेरी शरण, करता हूँ वरण,
उर से स्मरण, तुझमें ही रमण।"

पथिक, भक्तजन भी उन्हें अनेक नामों से स्मरण करते हैं।
गुलाब के फूल को किसी नाम से पुकारो
उसकी गंध तो उतनी ही मधुर मिलेगी।
गणिवर हस्ती को भी किसी नाम से पुकारो
उनके गुणों की सुवास उतनी ही मधुर मिलेगी।
पर पथिक, हमारे अन्तरमन में 'हस्ती' नाम की
प्रतीति की एक अविच्छिन्न परम्परा बन गई है।
यह नाम एक भावना विशेष का प्रतीक हो गया है,
एक गरिमामय व्यक्तित्व का द्योतक हो गया है।

मुनिवर, उस मनस्वी के गुणों की रसानुभूति का पान तो कर ही रहा हूँ,
फिर भी,
मैं 'हस्ती' नाम की विशिष्टता का परिज्ञान करने का जिज्ञासु हूँ।

पथिक, विशिष्ट व्यक्तियों के नामकरण की पृष्ठभूमि में
विशिष्ट घटनाएँ जुड़ी होती हैं।
'हस्ती' नाम उनकी गर्भस्थ अवस्था में ही अंकुरित हो गया था
जब माँ रूपा ने एक शुभ स्वप्न देखा- हस्ति (हाथी) का।
इसलिए जन्मोपरान्त नामकरण किया- 'हस्ती'
पथिक, तीर्थंकर की माता को
तीर्थंकर के गर्भ में आने पर चौदह प्रकार के स्वप्न आते हैं
जिसमें एक स्वप्न होता है हाथी का।
मान्यता है, चौदह में से एक स्वप्न भी
जिस माँ को आये उसका पुत्र जगत्पूज्य होता है।

मुनिवर, यह संयोग अकारण ही नहीं होता होगा?

पथिक, कालान्तर में यह संयोग अर्थ में घटित होता गया,
अतः उजाले की निशानी तो था ही।

हाथी नाम का प्रतीकात्मक महत्त्व गुरुदेव में परिलक्षित था।
'हस्ती' नाम एक लौकिक अलंकार था,
पर उन्होंने उसे अलौकिक अलंकारों से अलंकृत कर दिया।
शब्द से शब्दातीत होने की यात्रा प्रारम्भ हुई।
'यथा नाम तथा गुण' की उक्ति चरितार्थ हुई,
नाम अर्थ पा गया, सामर्थ्य पा गया,
नाम निक्षेप से भाव निक्षेप में चला गया
और एक अचिंत्य प्रभाव पा गया।

मुनिवर, हाथी का प्रतीकात्मक महत्त्व गुरुदेव में किस तरह घटित हुआ था?

पथिक, समुद्र मन्थन में चौदह रत्न निकले- उनमें एक था हस्ती।
इस काल के भी अनन्त कर्मों के मन्थन से
मानो 'हस्ती' रूपी नवनीत का प्रादुर्भाव हुआ,
श्रेष्ठ संस्कारों से समन्वित,
मानवीय गुणों से सुवासित,
संसार के दलदल में खिला वैराग्य का कमल,
निश्चल, विमल एवं विरल।
लोक मान्यता के अनुसार हस्तीमुख प्रतीक है-
विघ्न विनाशक का, मंगलमूर्ति का।
गुरु हस्ती भी एक ऐसी ही मंगलमूर्ति थे
अतः सभी उनकी मांगलिक के अनुकांक्षी थे।

हाथी के वृहत् कर्ण प्रतीक हैं- परिपक्वता के,
लघु नेत्र परिचायक हैं-सूक्ष्म दृष्टि के,
विराट् भाल संकेत है-बुद्धिमत्ता का,
लघु जिह्वा लक्षण है- वाणी-संयम का,
विशाल उदर प्रतिरूपक है-सहिष्णुता का,
महाकाय प्रतिबिंब है- महाबल का।
गुरु हस्ती का चिन्तन एवं ज्ञान श्रुतधर सा परिपक्व था,

उनका यतना पूर्वक शुद्ध आचरण सूक्ष्म दृष्टि का परिचायक था,
उनकी बुद्धिमत्ता से धर्म संघ अभिभूत था,
उनका वाणी -संयम मौन साधना से परिपूर्ण था,
सहिष्णुता मानो उनकी चेरी थी एवं
संयम का अप्रतिम बल देव गुरु की आज्ञा से अनुशासित था।

पथिक, जैन आगमों में मानव की श्रेष्ठता उपमित हुई है हाथी से।
आगम कथन है-
"हाथियों में ऐरावत श्रेष्ठ है,
उसी प्रकार महावीर भी संसार के ऋषियों में श्रेष्ठ हैं।"

हाथी की श्रेष्ठता है उसकी धीरता और सहिष्णुता,
यही है उसकी उच्च जातिमत्ता।
शुभ लक्षणों से युक्त, शरीर से उन्मुक्त,
हस्ती के लिए प्रयुक्त है विशेषण -भद्र।
गुरुवर गजेन्द्र भी इन्हीं विशिष्टताओं से युक्त थे।

युद्ध में गंधहस्ती के समक्ष ध्वस्त हो जाता है अन्य हाथियों का मद,
भगवान् के समक्ष अन्य वादियों का अंहकार हो जाता नदारद,
अतः भगवान् को उपमा दी गई- 'पुरिसवरगंधहत्थीणं'।
श्रमण संघ के प्रथम आचार्य ने भी
ऐसा ही सम्बोधन दिया गणिवर हस्ती को।

पथिक, तुमने मस्त चाल से चलते हाथी को देखा होगा-
अड़ोस-पड़ोस के कोलाहल से अप्रभावित।
गुरु हस्ती भी संसार में रहते हुए संसार से अप्रभावित थे।
इसीकी परिणति थी-
उनका द्रष्टा भाव, आत्मसाक्षात्कार एवं अन्त में निष्काम समाधिमरण।

मुनिवर, वे नाम से बड़े थे पर नाम से परे थे।

पथिक, तुम्हारा कथन यथार्थ है।
यशलिप्सा का गुरुत्वाकर्षण उन्हें लुभा नहीं पाया।
वे आत्मा के गुरुत्वाकर्षण में ही अवस्थित रहे।

पथिक, भगवान् ऋषभदेव की गजासीन माता मरुदेवी को
मोक्ष की प्राप्ति हुई थी- भावों के उत्थान से।
उन्हीं के पुत्र बाहुबलि को ज्ञान सुलभ नहीं हुआ।
जब तक वे मान रूपी गज से अधोगत नहीं हुए।
अतः गज संदेश दे रहा है-
निस्सार को निष्कासित करो, भावों का उत्थान करो
और सिद्धत्व को प्राप्त करो।
गुरु हस्ती का जीवन दर्शन भी तो यही था-
मानापमान का निकास हो, द्रष्टाभाव का विकास हो
और अन्त में आत्मा का विन्यास हो।

पथिक, ऐसे प्रज्ञा पुरुष क्यों नहीं लोक में पूज्य होंगे?
उनके नाम की भी बड़ी महत्ता होती है।
"व्यपदेशेन महतां सिद्धिः संजायते परा"
अर्थात् महान् व्यक्ति का नाम लेने से बड़ा कार्य सिद्ध हो जाता है।

पर पथिक, 'मौक्तिकं न गजे गजे' की उक्ति के अनुसार
गुरु हस्ती भी एक विरल काल्पनिक सत्य थे।
उनके माथे में ज्ञान रूपी मुक्ता की आभा उद्भूत हो रही थी
जिसमें अज्ञान और अविवेक को अवकाश नहीं था।

विश्वास नहीं होता कि
निकट अतीत में हाड़-मांस का बना ऐसा महापुरुष
इस धरती पर भी आया था जिसने
अपनी हस्ती से मानव के शुभ विचारों को प्रभामंडित कर
जन-जन का उद्धार किया।

मुनिवर, आपके इस संकीर्तन की ध्वनि में
मेरी आँखें भीग गई हैं।

पथिक, उनके अतिशय का अनुपान अभी शेष है।
तुमने तो आँख भर देखा ही नहीं और आँखें भर आई?

(क्रमशः)

अध्यात्म

सम्मान की कामना : अपमान का द्वार

प्रस्तोता: श्री ऋषभराज बाफना

प्रायः हम मान को अहंकार का प्रतिरूप मानते हैं, परन्तु यह शब्द अपने आप में व्यापक अर्थ समेटे हुए है। ''मीयते अनेन इति मानम्'' इस दृष्टि से मान का अर्थ है मानदंड या पैमाना। समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने को मापकर चलता है। हम अपनी बुद्धि के अनुसार अपनी गुणवत्ता, विद्वत्ता, पद प्रतिष्ठा आदि का मापन निरन्तर करते रहते हैं। इस मापन-क्रिया में मान का चेहरा निरन्तर बदलता रहता है। सम्मान, अभिमान और अपमान की लीला में मान की क्रीड़ा चलती रहती है। प्रतिष्ठा से कम मापना अपमान है, अधिक मापना अभिमान है। हमने अपनी औकात से अधिक मापा और समाज ने कम माना, बस हो गया अपमान।

जहाँ सम्मान की तनिक भी कामना है वहाँ अभिमान और अपमान दबे पाँव चले ही आते हैं। मान-अपमान का यह दुःखद भ्रम जीवन में चलता रहता है। बड़ा बनने के चक्कर में अपना निरन्तर मापन करते रहना ही मानलीला है। अध्यात्म की भाषा में यही माया है। रावण इसी मानलीला का शिकार हो गया। अपना सम्मान बढ़ाने के लिए दूसरों का अपमान करने लगा। माया के चक्कर में वह यह भूल गया कि जहाँ सम्मान रहेगा वहाँ अपमान पहले से ही खड़ा मिलेगा। सम्मान के अतीव मोह ने उसका सर्वनाश कर दिया। मरने के बाद भी वह आज तक लांछित होता रहता है।

भीतर में सीमित चैतन्य ही 'मैं' है। 'मैं के साथ मेरा जुड़ने से' अहंकार का विस्तार होता है तथा तेरे-मेरे का भेद होने पर मनुष्य मृग तृष्णा में फँस जाता है। वह धन से जुड़कर धनी बनना चाहता है। पद से जुड़ कर पदाधिकारी बनना चाहता है, फलतः वह पद-प्रतिष्ठा के चक्कर में कोल्हू के बैल की तरह जीवन भर नाचता-फिरता है। चलता बहुत है, पर पहुँचता कहीं भी नहीं। यह अंतहीन तृष्णा है। भ्रमवश जिसे वह अपना समझता है, वह स्वयं के बिगड़ने की प्रक्रिया है। जीवन भर बनने की होड़ में वह अपने मूल स्रोत विशुद्ध चैतन्य से कट जाता

है। भीतर से बाहर की यात्रा पर निकलने से भ्रमजाल बनता चला जाता है। वास्तव में बाहर की कोई यात्रा तीर्थयात्रा नहीं है। सत्य का तीर्थ तो भीतर है अतः यात्रा भीतर होनी चाहिए। अज्ञानी जीव यह समझ नहीं पाता है कि बनने की यात्रा में सत् प्राप्ति के बजाय उसके भव का विस्तार हो रहा है। भ्रमवश विस्तार लगता है, किन्तु है वह अति सीमित भवकूप का निर्माण। लहरों की मदद से भवसागर से बाहर निकला जा सकता है, पर भव कूप से बाहर निकलना अति कठिन है।

भव का अर्थ है 'होना' या 'बनना'। भवजाल के निर्माण में विकार एवं संस्कार का अंतहीन सिलसिला चलता रहता है। यह द्वन्द्व की अवस्था है। बनने बिगड़ने की अवस्था भव से भिन्न सत् है, जो नित्य समरस पूर्ण और शांत है। उसे न कुछ बनना है और न बिगड़ना है। आत्मा में जब कर्तृत्व की वृत्ति ही न बनेगी तब वह सुख दुःख के द्वन्द्व से परे समरस भाव में रहेगी। जब मान का मैं मिटेगा तब निर्मान का मैं प्रकट होगा। सीमित मैं के साथ मैं संसार में रहता है, जब मैं नहीं हूँ तो मैं ही मोक्ष हूँ।

मैं हूँ यही अपनी शुद्ध सत्ता है। मैं यह हूँ, मैं इतना हूँ ऐसा कहने से आत्मा के साथ तमाम विशेषण जुड़ जाते हैं, फिर नापने की प्रक्रिया शुरु हो जाती है। हम उसे शुद्ध सत्ता ही रहने दें। शुद्ध सत्ता स्वभाव से निर्मान सत्ता है। जिसका अपरोक्ष अनुभव ही तत्त्वज्ञान है। जब तक स्वभाव पर परभाव बना है, तभी तक मान है और अज्ञान भी। मनुष्य जिसकी खोज में है वह स्वयं उसका अस्तित्व है। चूँकि वह मोहनिद्रा में है इसलिए स्वयं से भटक गया है। जैसे मृग कस्तूरी के लिए भटकता है, वैसे ही हमारी भटकन है। वह खोजने से नहीं जागने से मिलता है। आपको उस मानलीला को समझना है जो जागने नहीं देती। अधर्म जानोगे तभी धर्म का अनुभव होगा, अंत जानोगे तभी अनन्त समझ में आयेगा। स्वप्न के मिथ्यात्व को जानोगे तभी सत्य समझ में आयेगा। सत्य की साधना वास्तव में सत्य को पाने की साधना न होकर स्वप्न से मुक्त होने की साधना है। सूर्य का प्रकाश सर्वत्र चमक रहा है, पर आवश्यकता है मोती का उपचार करने की।

परम्परागत संस्कारों को तोड़कर भीतर की गहराई में उतरना होगा तभी

अनन्त का बोध होगा। मानलीला के पार जाने का मतलब है अनन्त हो जाना। जिसने आत्मा की अनन्तता में प्रवेश कर लिया वह भवकूप से बाहर निकल गया।

मान की यात्रा सम्मान की कामना से प्रारम्भ होती है। वह अभिमान एवं अपमान के बीच से गुजरती हुई समान तक पहुँचती है। समान का अर्थ है सर्वात्म बोध अर्थात् अपने को सबमें और सबमें अपने को देखना। यही आत्मलाभ है। फिर अपने-पराये का भेद मिट जाता है। किसी दूसरे को मारने का मतलब है अपने को मारना। दूसरे से नफरत करने का मतलब है अपने स्वयं से नफरत करना। यही वास्तव में अध्यात्म विज्ञान है। जिसके अहं का अनन्त विस्तार हो जाता है उसे सर्वत्र समान रूप से आत्मा ही दिखाई देता है। जहाँ सम्मान की कामना नहीं, ज्ञान का अभिमान नहीं वहाँ दिव्य दृष्टि खुलती है और सर्वत्र अपनेपन की ही छवि दिखाई देती है। यह वह अवस्था है जहाँ मानलीला का अन्त होकर व्यक्ति निर्मान हो जाता है। विनय की परिणति समान में होती है। वह स्वभाव से समदर्शी हो जाता है। उसकी दृष्टि में न कोई छोटा है न बड़ा। वह सबको आत्मभाव से देखता है। द्वन्द्व मिटते ही मान स्वयं काफूर हो जाता है। विनयी सत्य से चिपक जाता है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः" की शुभ यात्रा प्रारम्भ हो जाती है। वह जानता है कि बुद्धि, प्रतिष्ठा, बल आदि दिखाई देने वाले ठाटबाट क्षण स्थायी हैं। इस सच्चाई के प्रति जो जागरूक हैं वे न तो प्रशंसा से प्रसन्न होते हैं न ही निंदा से खिन्न। वे सदा समभाव में रहते हैं। विनयी व्यक्ति को चाहे जितना यश मिले, उसकी आँखें सदा नीचे ही झुकी रहती हैं।

अभिमान स्वयं को प्रिय लगता है, जबकि विनय सबको प्रिय लगता है। विनयी व्यक्ति का अपमान हो ही नहीं सकता, क्योंकि वह सम्मान से भी निर्लिप्त है। वह व्यक्ति न रहकर समाज बन जाता है। उसकी चेतना लोकचेतना बन जाती है। मनुष्य अनजाने में क्षुद्र चीजों को महिमा मंडित कर रहा है, जो मानवबुद्धि का अपमान है। आगम हमें निरन्तर प्रेरणा देते हैं कि पहले परीक्षा करो, फिर कर्म करो। वे हमें बेहोशी का जीवन जीने को नहीं कहते।

-एच-2, एम.आई.डी.सी., जलगाँव (महा.)

गीत

मधु लिपटी तलवार है

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

भौतिक सुख तो सच पूछो तो, मधु लिपटी तलवार है,
इसमें सुख मिलता है थोड़ा, होता दुःख अपार है
दुःखियों का संसार है, बहती अश्रुधार है,
भौतिक सुख तो सच पूछो तो, मधु लिपटी तलवार है ||1 ||

मत भटकाओ अपने मन को, घोर वेदना पाओगे,
संसारी सुख में पड़ करके, नरक निगोद में जाओगे।
विषयों का अम्बार है, नहीं कुछ इसमें सार है,
भौतिक सुख तो सच पूछो तो, मधु लिपटी तलवार है ||2 ||

विषयों में पड़कर जिसने भी, जीवन को बर्बाद किया,
इस दुर्लभ जीवन को पाकर, जीवन अपना हार दिया
घोर अंधकार है, नैया मझधार है,
भौतिक सुख तो सच पूछो तो, मधु लिपटी तलवार है ||3 ||

इच्छाओं को मारोगे तो, दुःख दूर हो जायेंगे,
विषयों को गर तुम छोड़ोगे, नहीं कषाय फिर आयेंगे।
त्याग में ही सार है, करना अंगीकार है,
भौतिक सुख तो सच पूछो तो, मधु लिपटी तलवार है ||4 ||

भौतिक सुख की चाह में पड़कर, न्याय, नीति को भूल गये,
हिंसा, चोरी, झूठ, कपट की, बातों में मशगूल भये।
कष्टों का नहीं पार है, अन्तर हाहाकार है,
भौतिक सुख तो सच पूछो तो, मधु लिपटी तलवार है ||5 ||

भौतिक सुख को भूल के प्यारों, आतम धन को याद करो,
धर्म के पथ को अपना करके, अपना तुम कल्याण करो।
आत्मा की साधना, जीवन का उद्धार है,
भौतिक सुख तो सच पूछो तो, मधु लिपटी तलवार है ||6 ||

-जनता साड़ी सेन्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

दीक्षा-प्रसंग

संयम का पथ प्यारा-प्यारा

श्रीमती एन. पुष्पलता भंसाली

संयम का पथ प्यारा-प्यारा।
करता जीवन में उजियारा।।
शान्ति सुधा की बरसे धारा।
मोक्ष मार्ग का पथ है न्यारा।।

विषय कषाय दूर निवारा।
पाप-क्रिया से किया किनारा।।
जिओ और जीने दो सबको।
सब जीवों को जीवन प्यारा।।

वीर प्रभु की अमृत धारा।
तिरने को मिल गया सहारा।।
मोक्ष धाम को लक्ष्य बनाकर।
भन्ते! सामायिक व्रत धारा।।

रत्नसंघ का पट्टधर प्यारा।
गुरु 'हीरा' ही मेरा सहारा।।
गुरुवर्या को हृदय में धारा।
सदा समर्पित जीवन हमारा।।

छवि जो निहारूँ आप की तो भगवान् नज़र आते हो,
कण-कण में वात्सल्य के, भण्डार नज़र आते हो।
करुणा-निधि कृपा सिन्धु, आनन्द का गुलजार नज़र आते हो,
आत्माधीन समाधि में लीन, आत्म राम नज़र आते हो।।
आत्मराम नज़र आते हो।

-बैंगलोर (कर्नाटक)

आचार्य हस्ती जन्मशती

A Brief Introduction to Acharya Hasti*

Sh. P.S.Surana

1. At the age of Ten, boy Hasti renounced the world and became a monk. At fifteen and half, he became a scholar, and became the youngest ever in history to be nominated as a Jain Acharya. At 19, he took over as Acharya.
2. For 61 years after becoming Acharya, he toured the country on barefoot, practicing total non-violence, truth, non-stealing, celibacy and non-possession.
3. Almost every day for 61 years, he gave discourses, wherever he was in India.
4. He inspired 85 of his followers to become monks and nuns under him.
5. He has written simple commentaries on Jain shastras and other subjects.
6. He became famous for his movement on "Samayik and Swadhyaya", meaning "equanimity & learning", as a daily practice.
7. He strived for bringing harmony between long fighting factions of people at different parts of India.
8. Several times he saved living beings, risking his own life.
9. Dr. L.M. Singhvi, Constitutional Expert, Parliamentarian and diplomat wrote : "He inspired me at every stage of my life."
10. Padma Bhushan D.R. Mehta recorded : " He inspired me for honest, ethical and simple living, serving others selflessly."
11. R.S. Kumat, IAS, said : "He Played an important role

*As Presented by Shri P.S. Surana, Chennai (President, Samyag Gyan Pracharak Mandal) on the occasion of 'Acharya Hasti Centenary Karuna Ratna Award' Ceremony in chennai on 5th April, 2010

in moulding my life."

12. Justice S.K.M. Lodha, father of present Supreme Court Justice, R.M. Lodha wrote :
- "Whatever he said would come true."
- "He could foresee future events, thus protecting and guiding his devotees including my family."
- "His blessings would do good, remove tension and bring mental peace."

13. Padma Vibhushan Dr. D.S. Kothari, Chancellor for Jawaharlal Nehru University, wrote:
- "He was one of the most renowned and erudite among Jain Saints, in the service of all living creatures."
- "Even when he was in silent meditation, the inspiration radiated by him reached my heart."
- "His book, Jain Dharam Ka Maulik Itihas in four volumes is a monumental work, a valuable and inspiring contribution."

14. Justice Jasraj Chopra of the Rajasthan High Court recorded : "He inspired me into the daily practice of Samayik-Swadhyaya, i.e., equanimity & learning."

15. Prof. K.M. Lodha of the Calcutta University wrote : "He was a Veetragi Bhagwan himself."

16. Like Bhagwan Mahaveer and Mahatma Gandhi, He persuaded people to be trustees of their wealth. Today's Guest of Honour, Sri Mofatraj Munot follows His Trusteeship Principle.

17. (i) After he lived a pure life of 81 years, he knew that his end was near. At Nimaj, He sought pardon from every living being; confessed all his past sins; took Samadhi - completely renounced food, water or medical treatment, totally meditating on his Atma. Innumerable people came to have his Darshan and received his silent blessings.

(ii) Muslim brethren of that village came in hundreds for his Darshan and voluntarily pledged that till the Saint was alive, they would neither kill any animal not

eat any meat, and kept their pledge.

(iii) After 13 days of perfect and historical Samadhi, he left his mortal body.

(iv) More than one lakh people joined the last procession, of which half were non-Jains and thousands were Muslims.

(v) These facts were recorded by Justice Jasraj Chopda and D.R. Mehta, IAS.

18. On his birth centenary, it is my proud privilege to be able to speak something about that exceptionally extraordinary great soul-Acharya Hasti.

-Surana & Surana Attorneys, Chennai

शिविर का आनन्द

श्रीमती कमला सुराणा

धार्मिक अनूठे शिविर
कैसे तेरी सराहना करूँ।
जिसने यह प्रारम्भ किया,
उसके खूब गुणगान करूँ ।।
भूला ज्ञान दोहराती हूँ,
नया ज्ञान बढ़ाती हूँ।
स्वयं को भूल जाती हूँ,
पढ़ाई में लीन हो जाती हूँ ।।
सावद्य क्रिया से छूटती हूँ,
सामायिक में मुग्ध हो जाती हूँ।
सुरम्य वातावरण में सब,
मधुर-मधुर लगते हैं सब ।।
जहाँ देखो धर्म चर्चा,
जीवन सबका नैतिकता में सरसा।
धर्म में जोड़ा उसकी मैं आभारी हूँ,
धर्म स्नेहिल बहिनों की जय-जयकार है।

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

श्रद्धापुंज के संस्मरणों का वातायन(2)

आचार्य श्री की दूरदर्शिता एवं निस्पृहता

श्री मोहनलाल पीपाड़ा

इतिहास मार्तण्ड, अध्यात्म योगी, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का वर्ष 1978 में माँ अहिल्या की पावन नगरी, इंदौर के महावीर भवन, इमली बाजार में चातुर्मास हुआ। चातुर्मास में आचार्य श्री जी की प्रेरणा से बच्चों एवं युवक-युवतियों में धार्मिक, नैतिक एवं चारित्रिक सुसंस्कार प्रदान करने हेतु श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला, इन्दौर की स्थापना हुई।

कुछ उत्साही बच्चों ने 'हस्ती शीतल स्वाध्याय शाला' का बोर्ड बनाकर महावीर भवन में लगा दिया। जब आचार्य श्री ने बोर्ड देखा तो उन्होंने पूछा-बोर्ड किसने बनवाया है? उस समय श्री मदनलाल जी बोडाना का पुत्र जयन्त बोडाना एवं अन्य बालक आये और विनम्रता पूर्वक कहा कि बोर्ड हमने बनावाकर लगवाया है।

आचार्य श्री ने युवकों से पूछा-"तुम बड़े या तुम्हारे पिताजी बड़े?" युवकों ने कहा- "पिताजी बड़े।" आचार्य श्री ने फिर पूछा-"मैं बड़ा या भगवान महावीर बड़े?" बच्चों ने कहा-"भगवान् महावीर बड़े।" तब आचार्य श्री ने युवकों को प्यार से कहा कि बोर्ड पर "श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला" होना चाहिये मेरा नाम नहीं।

आचार्य श्री की दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि विगत 32 वर्षों से स्वाध्याय शाला निरन्तर महावीर भवन इन्दौर में चल रही है। सभी सम्प्रदाय के संत-सती जो भी महावीर भवन पधारते हैं, स्वाध्याय शाला की गतिविधियों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं, अपना आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। समाज के प्रत्येक श्रावक-श्राविका के तन-मन-धन से प्रदत्त सहयोग से स्वाध्याय शाला निरन्तर गतिशील है।

स्वाध्याय शाला के माध्यम से अब तक हजारों बच्चों एवं युवक-युवतियों ने सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, पुच्छिसुणं, भक्तामर आदि धार्मिक

ज्ञानर्जन के साथ सुसंस्कारों को भी ग्रहण किया है एवं वर्तमान में भी कर रहे हैं।

स्वाध्याय शाला में आने वाले बच्चे, युवक-युवतियाँ ज्ञान सीख कर पर्युषण पर्वाराधना करवाने हेतु श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ, इन्दौर के माध्यम से देश के विभिन्न भागों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

पर्युषण पर्व पर सेवा देते हुए अब तक तेरह भाई-बहनों ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की है एवं वर्तमान में जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं।

स्वाध्याय शाला एवं स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में अनेक स्वाध्यायी एवं धार्मिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा चुके हैं, जिसमें सैकड़ों स्वाध्यायी, बच्चों, युवक-युवतियों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया है।

स्वाध्याय शाला के माध्यम से प्रतिवर्ष धुलंडी एवं रंगपंचमी पर महावीर भवन में सामूहिक सामायिक का आयोजन रखा जाता है, जिसमें सैकड़ों भाई-बहन होली न खेलकर धर्म-ध्यान एवं सामायिक स्वाध्याय करते हैं। भगवान् महावीर के निर्वाण कल्याणक एवं स्वाध्याय शाला के स्थापना दिवस 26 अक्टूबर के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष आतिशबाजी नहीं करने के हजारों संकल्प पत्र भरवाये जाते हैं।

बच्चों एवं युवक-युवतियों में धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण हेतु प्रतिवर्ष अप्रेल, मई एवं जून माह में 90 से 100 दिवसीय ग्रीष्मकालीन धार्मिक-शिक्षण शिविर लगाया जाता है, जिसमें प्रतिदिन सौ से अधिक बच्चे उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं।

स्वाध्याय शाला के श्री अशोक मण्डलिक, श्री गजेन्द्र बोडाना, श्री प्रकाश कोठारी, श्री विमल तातेड़, श्री नगीन नारेलिया बताते हैं कि आचार्य श्री के चातुर्मास के पूर्व इन्दौर में 8-10 भाई-बहनों को ही प्रतिक्रमण आता था आज सैकड़ों भाई-बहनों को प्रतिक्रमण याद है, यह आचार्य श्री की ही कृपा है। स्वाध्याय शाला के अध्यक्ष श्री गजेन्द्र बोडाना एवं महामंत्री श्री विमल तातेड़ ने बताया कि आचार्य श्री के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में स्वाध्याय शाला के माध्यम से इस वर्ष 100 भाई-बहनों को सामायिक-प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करवाने के साथ ही नये स्वाध्यायी बनाने का भी संकल्प लिया गया है।

श्रद्धापुंज का संस्मरण

Gurudeva Hasti : An Inspiration

Shri Surendra S. Singhavi

Congratulations for publishing an excellent issue of Jinvani to celebrate Acharya Hasti Muni's 100th birth anniversary. I specially liked your suggestions (100 vows) to celebrate his birthday.

I was born in Jodhpur and got college education in Jaipur. In those days I used to go to Lalbhawan where Guru Hasti was doing chaturmas. My parents Shri Rangraj and Smt. Ugam Kanwar Singhvi were staunch followers of Guru Hasti Mal Ji and entire Ratan Sangh.

Acharya Hasti Muni also encouraged me to read religious books, while performing Samayik, Swadhyay and silence vow. I have been doing this on and average one hour per week. This encouraged me to read Jain literature and learn the basic philosophy of Ahimsa, Anekantavada and Aparigraha. I developed so much confidence that I taught a course on Jain and Non-violence at the University of Dayton, Ohio USA.

Before leaving for the USA in January 1962, I visited Hasti Muni in Ajmer and he asked to observe several vows, while in USA (such as not to eat meat, not to smoke, not to drink alcohol and not to flirt with anyone, and perform Samayik and Swadhyay and spread Jainism....). Fortunately, with his blessings I was able to perform all these vows and it was very beneficial to me. During the last 5 years, I was offered a lucrative opportunity to invest money in a restaurant franchise business in USA where meat and liquor were served. Hasti Muni always taught

that do not make money from businesses which violate Jain principles. My wife, who is also Jain from Sojat City also strongly recommended not to invest money in such businesses, since it is against our religious principles. My friends who initially thought that it would be a great opportunity to make money, lost a lot of money, in this investment.

By not drinking alcohol, I never got a traffic ticket called DUI (Driving under Influence) which saved money and my reputation. By not smoking I saved money and health. By following principle of celibacy, I never faced sexual harassment litigation in my life. By following vegetarian diet, my two kids and 5 grand children all in USA are vegetarians.

Needless to say Hasti Muni had a long term vision and selected Heera Munisa as the Acharya of Ratan Sangh. He is very learned monk, good administrator and a fearless leader with open mind in uniting Jain followers and a great orator and self disciplined and strict conduct like his teacher. I had opportunities to visit Acharya Heera Muni in Bangalore and Pune, though I was in wheelchair due to stroke paralysis, I could not go up to see him in Bangalore, but he was kind enough to send downstairs Pramod Muni Ji to bless me. He was in silence vow. In pune I was able to go up and have conversations with him.

संवाद के लिए नया प्रश्न

क्या यह सच नहीं है कि मानव प्रजाति बिल्कुल अलग है। मनुष्य में मन, बुद्धि, संस्कार हैं, उसे पाप-पुण्य, शुभ-अशुभ, कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान है, परन्तु मनुष्य के अलावा अन्य जीवों में क्या यह सब नहीं होता?

-श्री एम.सी. नवलखा, जयपुर-302004 (राज.)

अक्षय तृतीया पर

तप है महान्

श्री मगनचन्द जैन

तप है महान्, सब सुनो सुजन,
निज जीवन में अपनाओ।
आत्म-प्रदेश पर लगे हुए,
कर्मों को दूर हटाओ।

छः बाह्य तप, छः अन्तरंग,
बारह प्रकार होते हैं।
जो धारे जीवन में इनको,
वे मोक्ष-मार्ग पाते हैं।

बढ़ता है आतम-बल इससे,
दृढ़ता जगती है मन में।
सारे विकार मिटते हैं,
रहती न कालिमा दिल में।

'अन्तगडसूत्र' स्वाध्याय करो,
तप की महिमा गाई है।
विविध तपों का साधन करके,
सबने मुक्ति पाई है।

यथाशक्ति सब करो तपस्या,
कर्मों का मैल हटेगा।
शुद्ध आत्मा होगी इससे,
जग का भ्रमण मिटेगा।

पुण्य-योग से मिला है नर तन,
इसका लाभ उठाओ।
तप है महान्, सब सुनो सुजन,
निज जीवन में अपनाओ।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, फाजिलाबाद, हिण्डौन, जिला-करौली (राज.)

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (8)

प्रश्न 8. आत्मप्रंशसा एवं परनिन्दा नीचगोत्र बंध का कारण है। दशवैकालिक सूत्र में इस सम्बन्ध में क्या उल्लेख प्राप्त होता है?

उत्तर : पाप-कर्म से बचने का उल्लेख दशवैकालिक सूत्र में अनेक स्थानों पर आया है। नीच गोत्र पाप-प्रकृति है। तत्त्वार्थ सूत्र के छठे अध्ययन में नीच गोत्र बंध का कारण 'परात्मनिंदाप्रशंसे' सूत्र के द्वारा दूसरों की निन्दा एवं अपनी प्रशंसा को बताया गया है, तो भगवती, प्रज्ञापना आदि सूत्रों में नीच गोत्र बंध का कारण-जाति, कुल आदि का मद करना बतलाया है। ये सभी सामग्री जड़ है, क्योंकि जाति (मातृ-पक्ष), कुल (पितृ-पक्ष) जन्म से संबंधित हैं। बल और रूप शरीर से सम्बन्धित हैं, तप और श्रुत क्षयोपशम से संबंधित हैं, लाभ और ऐश्वर्य बाहरी सामग्री से सम्बन्धित हैं। इन जड़ पदार्थों से अपना मूल्यांकन करना 'अहम्' है। बाह्य-दृष्टि से तत्त्वार्थ और सिद्धान्त में भेद नज़र आते हुए भी परमार्थ में कोई भेद नहीं है, क्योंकि ज्ञानियों ने अंहकार के तीन रूप बताये हैं-

1. निकृष्टतम- स्वयं अपनी प्रशंसा करना।
2. निकृष्टतर- दूसरों की निन्दा करना।
3. निकृष्ट- अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होना।

स्वयं की प्रशंसा और दूसरों की निन्दा करना भी एक प्रकार का अहंकार ही है। अतः आगम-वाणी स्पष्ट कह रही है-"ण बाहिरं परिभवे"(8/30)। साधु न दूसरे का तिरस्कार करे और न आत्मप्रशंसा करे कि मैं ऐसा हूँ, मेरे जैसा दूसरा कोई नहीं है। वह उच्चतम ज्ञान का, प्रचुर और सरस आहार के लाभ का, अपनी उच्च जाति का, अपने तपस्वीपन का तथा बुद्धि की सूक्ष्मता और तीक्ष्णता का एवं बुद्धि के ऐश्वर्य का अभिमान न करे। बुद्धि का कथन उपलक्षण है। इससे यह भी समझना चाहिए कि शिष्य आदि की संपदा का भी

अभिमान न करे। पौद्गलिक निमित्त से पुद्गल को महिमा-मण्डित करना एवं आत्म-गौरव को खण्डित करना मद है।

"जे ण वंदे ण से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे।।" अ. 5/2/30 अर्थात् कोई साधु को वंदना न करे तो उस पर कुपित नहीं होना चाहिए कि यह कैसा अविवेकी है कि सामने उपस्थित साधु का अनादर करता है। इस प्रकार उसकी निंदा नहीं करे तथा चक्रवर्ती आदि राजा-महाराजा भी वंदना करे तो आत्म-प्रशंसा न करे कि मैं संसार में ऐसा माननीय हूँ कि ऐसे राजा-महाराजा भी मेरे चरणों में गिरते हैं। इस प्रकार सत्कार और तिरस्कार होने पर भी अंतःकरण में विकार न करने वाले अणगार का आचार निरतिचार पलता है। इसी प्रकार आगे दसवें अध्ययन में साधक को इस दोष से बचने के लिए पुनः सावधान करते हुए कहा है-"ण परं वइज्जासि.......जे स भिक्खू" 10/18 अर्थात् दूसरे को यह कुशील है, यह दुराचारी है, ऐसा नहीं कहना चाहिए। ऐसा कहने से उसे चोट लगती है, अप्रीति उत्पन्न होती है। इसलिए वेषधारी अव्यवस्थित आचार वाला साधु हो तो भी उसके सम्बन्ध में 'यह कुशील है', इस प्रकार का व्यक्तिगत आरोप करना, अहिंसक मुनि के लिए उचित नहीं है। क्योंकि सबके अपने-अपने पाप-पुण्य हैं। सब अपने-अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं। जो अग्नि को हाथ में ग्रहण करता है- वही जलता है, यह जानकर आदर्श-भिक्षु न तो दूसरों की अवहेलना करता है न ही अपनी बड़ाई करता है। वस्तुतः परनिंदा और आत्म-श्लाघा ये दोनों ही महा-दोष हैं। आत्मार्थी साधक को इन दोनों से बचकर माध्यस्थ रहना चाहिए। सम्यक् दृष्टि जीव मद नहीं करता, उसके लिए चैतन्य की शक्ति बड़ी होती है। वह पौद्गलिक शक्ति से ऊपर उठ जाता है। अतः नीच गोत्र का बंध नहीं करता। पुद्गल की महिमा का मण्डन करने से ही नीच गोत्र बँधता है। पर निंदा और आत्मश्लाघा अर्थात् स्वयं के साथ बुराई करना, स्वयं को दुर्गति में धकेलना है।

उत्तराध्ययन सूत्र के 20 वें अध्ययन में भी कहा है-" ण तं अरिकंठ-छित्ता करेइ"। बाहर में तलवार से गर्दन काटने वाला व्यक्ति भी हमारे साथ उतना बुरा नहीं करता, जितना हमारी दुरात्मा हमारे साथ करती है। निश्चय में संसार का सबसे बड़ा धीर, वीर, गंभीर तत्त्वज्ञ और दक्ष

वही है जो अपने साथ बुराई नहीं करता। आज तक इस जीव ने आत्म-प्रशंसा और पर-निंदा करके अपने साथ ही सबसे अधिक बुराई की है। सूत्रकृतांग सूत्र में भी कहा है-"सयं सयं पसंसंत्ता"- (1/1/2/23) अर्थात् जो अपने-अपने मत की प्रशंसा करते हुए और दूसरे के वचन की निंदा करते हुए उस विषय में अपना पाण्डित्य प्रकट करते हैं, वे संसार में दृढ़ता से जकड़े रहते हैं।

निशीथ सूत्र के 11वें उद्देशक में भी कहा है-"जे भिक्खू मुहवण्णं करेइ करंतं वा साइज्जइ" अर्थात् जो साधक अपने मुख से अपनी प्रशंसा करता है, वह चातुर्मासिक अनुद्घातिक प्रायश्चित्त का भागी बनता है। प्रशंसा तब ज़हर बन जाती है, जब साधक अपने आपको प्रशंसनीय मान लेता है। आत्म-हितैषी-साधक अपनी प्रशंसा करना तो दूर सुनकर भी मन को प्रभावित नहीं होने देता तथा पर-निंदा के महान् दोष से सदैव सावधान रहता है, क्योंकि अन्य को देखना अनन्य (आत्मा) से दूर होना है।

(क्रमशः)

दो क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.

स्वभाव

मुझे
नहीं चाहिए
भटकाव,
मुझे
नहीं चाहिए
विभाव,
मुझे चाहिए
अलगाव,
मुझे चाहिए
स्वभाव।

सुविधा

स्व में रमण
करने की
जिसे आ गयी
विधा,
वहाँ नहीं फिर
किसी तरह की
दुविधा,
वहाँ तो है
मात्र
सुविधा ही सुविधा।

(संकलित)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 58)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(आहारक समुद्घात)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- आहारक शरीर की क्या विशेषताएँ हैं?

समाधान- आहारक शरीर की विशेषताएँ तत्त्वार्थ सूत्र के दूसरे अध्याय के 49वें सूत्र में इस प्रकार बतायी हैं-

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव।

अर्थात् आहारक शरीर की निम्नांकित विशेषताएँ हैं-

1. **शुभ-** यह अत्यन्त शुभ एवं मनोज्ञ पुद्गलों (आहारक वर्गणा के श्रेष्ठ पुद्गलों) से निर्मित होने के कारण शुभ कहलाता है।

2. **विशुद्ध-** विशुद्ध प्रयोजन अर्थात् जिनशासन प्रभावना हेतु बनाये जाने के कारण विशुद्ध कहलाता है।

3. **चतुर्दश पूर्वधर को प्राप्त-** जो चौदह पूर्वधारी अप्रमत्त अणगार होते हैं उनमें से किन्हीं-किन्हीं को लब्धि के रूप में प्राप्त होता है।

4. **अव्याघाती-** यह न किसी को व्याघात पहुँचाता है और न किसी भी पदार्थ से व्याघात (रुकावट) को प्राप्त होता है।

5. **हस्तप्रमाण-** इसका प्रमाण एक हाथ का होता है।

6. इसका आकार समचतुरस्र संस्थान वाला होता है।

जिज्ञासा- जीव आहारक शरीर कितनी बार प्राप्त कर सकता है?

समधान- आहारक लब्धि सम्पन्न प्रमादी साधु आहारक शरीर एक भव में दो बार तथा अनेक भवों में चार बार प्राप्त कर सकता है। भव की अपेक्षा से विचार किया जाय तो (भगवती शतक 25 उद्देशक 7 के अनुसार) आहारक शरीर अधिकतम तीन भव में प्राप्त किया जा सकता है। प्रज्ञापना पद 36 से स्पष्ट है कि 2

भवों में आहारक समुद्घात किये हुए जीव (दूसरे शब्दों में तीन बार आहारक शरीर बनाये हुए जीव) निगोद में अनन्त तथा नारकी, देवता एवं तिर्यञ्च में असंख्यात हमेशा मिलते हैं।

तीसरे भव में आहारक समुद्घात करने वाले (अर्थात् चौथी बार आहारक शरीर बनाने वाले) उसी भव में नियमा मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं।

जिज्ञासा- चौदह पूर्वों का ज्ञान साधुओं को कितने भवों में प्राप्त हो सकता है?

समाधान- भगवतीसूत्र शतक 25 उद्देशक 7 के अनुसार संयतपना (छठा-सातवाँ गुणस्थान वाला) 8 भव से अधिक प्राप्त नहीं हो सकता है। चौदह पूर्वों के ज्ञान का भवों की अपेक्षा स्पष्ट उल्लेख पढ़ने में नहीं आया। किन्तु साधु के 8 भवों में 14 पूर्वों का ज्ञान होने में बाधा नहीं लगती।

अर्थात् आहारक लब्धि भले ही तीन भवों में ही होती है, किन्तु 14 पूर्वों का ज्ञान आठों भवों में भी हो सकता है। सभी 14 पूर्वी आहारक लब्धि वाले नहीं होते, किन्तु सभी आहारक लब्धि वाले 14 पूर्वी होते ही हैं।

जिज्ञासा- एक आहारक समुद्घात से दूसरे आहारक समुद्घात के बीच में एक जीव की अपेक्षा कितना अन्तर हो सकता है?

समाधान- एक जीव के आहारक समुद्घात एक भव में अधिकतम दो बार हो सकते हैं। एक बार आहारक समुद्घात करने के कम से कम अन्तर्मुहूर्त बाद ही उसी भव में दुबारा आहारक समुद्घात किया जा सकता है तथा अधिक से अधिक देशोन क्रोड़ पूर्व वर्ष बाद दुबारा आहारक समुद्घात किया जाता है।

अनेक भवों की अपेक्षा विचार किया जाय तो अधिक से अधिक देशोन अर्धपुद्गल परावर्तन काल का भी आहारक समुद्घात का अन्तर हो सकता है।

जिज्ञासा- आहारक समुद्घात से युक्त जीव एक साथ कितने मिल सकते हैं?

समाधान- आहारक समुद्घात से युक्त जीव इस लोक में कदाचित् मिलते हैं, कदाचित् नहीं भी मिलते हैं, क्योंकि आहारक समुद्घात का उत्कृष्ट विरह छह मास का है अर्थात् विरह काल में एक भी जीव आहारक समुद्घात करते हुए नहीं मिलते हैं। विरहकाल न होने पर मिलते हैं।

यदि आहारक समुद्घात करने वाले (आहारक शरीर की अपेक्षा) मिले तो जघन्य एक, दो, तीन और उत्कृष्ट दो हजार से नौ हजार तक संयत मिल सकते हैं। यहाँ विशेष ध्यातव्य है कि आहारक समुद्घात आहारक शरीर के प्रारम्भ काल में ही होता है, अन्य समयों में नहीं। अर्थात् आहारक शरीर वाले दो हजार से नौ हजार तक हो सकते हैं, किन्तु आहारक समुद्घात से समवहत जीव अधिकतम शत पृथक्त्व अर्थात् दौ सौ-तीन सौ जितने ही होते हैं।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर(राज.)

संस्मरण

नियमों में दृढ़ बनाया गुरुदेव ने

श्री कन्हैयालाल हिरण

मुझे गुरुआम्नाय देते वक्त परमपूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. ने नित्य एक सामायिक करने का नियम कराया तथा सामायिक न होने पर घी नहीं खाने का पच्चक्खाण कराया। व्यापार में उतार-चढ़ाव के कारण तनाव में सामायिक सुचारु रूप से नहीं होती तो नियम की पालना बराबर किया करता था, मगर शारीरिक कमजोरी लगने लगी। इसलिए पीपाड़ शहर के चातुर्मास में गुरुदेव के समक्ष उपस्थित हुआ और हाथ जोड़कर विनति की कि भगवन्! सामायिक के नियम पालना न हो तब घी नहीं खाने के पच्चक्खाण में परिवर्तन करके दही नहीं खाने के पच्चक्खाण करवा दीजिये। तब तत्काल गुरुदेव ने फरमाया कि भोल्या, घी तो है ही; अब लालमिर्च भी छोड़ दे। कैसा उपकार गुरुवर का, मैं नित्य सामायिक करने में दृढ़ बना। वाह रे गुरुदेव! शिष्य को राह दिखाई, दृढ़ किया, गजब की अनुकम्पा की मुझ मूढ़ पर।

-मणीनगर, अहमदाबाद

दीक्षा-प्रसंग

मुक्ति पथ पर करें गमन

श्री मनमोहनचन्द बाफना

आत्मार्थी मुमुक्षुओं का चिंतन–

हे, मन अब बन,
उपसर्ग विजेता, धर्म प्रणेता,
आत्म विजेता, कल्पतरु की छांव पाकर,
पारस सम, गुरु चरण में समर्पित,
करी आंतरिक प्रार्थना, विनय श्रद्धा से नमित, कर जोड़,
हार्दिक अभ्यर्थना,
सफल हो हमारी उपासना,
ज्ञान क्रियामय साधना,
पूज्य गुरुदेव, गुरुणी जी के चरणों में यह मन
सभक्ति से कर रहा समर्पण,
सर्व कषायों का त्याग करने का संकल्प,
राग–द्वेष से परे हटने का आचरण,
निज भूलों को सुधार कर क्षमा मांगते,
गुरु के अनंत गुणों से प्यार कर,
यह चरण गुरु पारस को चल पड़े,
प्रभु, अब तक था मैं मोह, ममता, अहं में तना,
परिग्रह एवं परिवार से कठोर कड़ियों में जकड़ा,
उनका प्रभाव था, अत्यन्त घना,
परन्तु अनंत पुण्याई, शुभ कर्मोदय से, गुरु कृपा से
आपके प्रतिरूप, आगमों के अनुरूप
ज्ञान और क्रिया एवं साधना से प्रतिबोध पा

गुरु का चिदानन्द रूप,
ऐसे निर्ग्रन्थ गणिवर, गुरुदेव का सान्निध्य पा,
मन ही मन खूब गुना, स्मरण किया, स्वीकार किया
तभी से मात्र आपको ही,
मन में चयनित कर लिया,
यह मन भटक रहा मन
अनादि से बना हुआ मलिन,
दीजिये इस पर ध्यान, कृपा निधान,
आगम बोध से करा दो विद्या दान,
इस पारस से घिस-घिस कर, रगड़-रगड़ कर
बन जायेगी यह आत्मा,
कर्मों को काट, स्वर्णिम शुद्ध श्वेत अजर, निर्लेप
हे भंते, आपका वरदहस्त पाकर मिलेगा,
समर्पण का प्रतिफल
अब मन नहीं करता, देर एक भी पल की,
आज कठिनाई से बोध प्रकटा है
मन अब संसार से निकल, संयम पथ पर
स्वीकार करो समर्पण,
भक्तिमय अर्चन,
दिला दो, त्रिरत्नों का दिव्य दर्शन,
ऐसे प्रभु, मेरे गणीवर, रत्न हस्ती से
प्रशस्त मार्ग को पाकर, साधना के उच्च स्तर पर
आगम रत्नाकर गणीवर हीरा, गुरु मान,
समस्त संत मुनिराज एवं गुरुणी के सान्निध्य में
मेरा मन चाहता है ऐसे पारस से स्पर्शन
संयम ही है मुक्ति पथ को गमन,

-112/109, पोखरपुर, लाल बंगला, कानपुर

उपन्यास (15)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- विश्वास को नौकरी मिल जाने से सबको प्रसन्नता हुई। उसने अपने मित्र रमन को बताया कि कल ही वह ज्वाइन कर लेगा और नये मकान में रहने के लिए जाएगा। भाभी और मीनाक्षी घर व्यवस्थित कर देगी। कल के सभी कार्यक्रम तय कर सभी ने भोजन किया और विश्राम करने चले गए। दूसरी तरफ किशनलाल के घर में...

जिन्दगी, कब, किधर और कैसा मोड़ ले ले, कोई कुछ नहीं कह सकता। किशनलाल की जो बगिया, कल तक चारों तरफ से लहलहाती नज़र आ रही थी, उसे पतझड़ ने अचानक आकर सब तरफ से बर्बाद कर डाला।

किशनलाल के दिखावटी ढकोसलों ने उसके विश्वास-वृक्ष को काट-काट कर एक ओर फेंक दिया, तो दूसरी ओर उसकी लोभी वृत्तियों ने उसके विचाररूपी आलोक को अन्धेरे में ढकेल दिया, और उसका एकमात्र अवशिष्ट आशा दीपक, अपने अनिश्चित भविष्य के गहरे-गर्त में जा गिरा। और नीराजन सी सजी-संवरी आरती का अस्तित्व दुर्भाग्य के बवंडरों में फँस कर रह गया है।

इसी तरह की द्विविधाओं और आशंकाओं भरे मन से किशनलाल व शान्ति, अपने कमरे में बैठे हुए हैं।

'खाना लगा दूँ मालिक!' मोतीराम ने उन दोनों के सामने पहुँचकर कहा।

'मुझे तो भूख है नहीं। तुम खा लो शान्ति।' किशनलाल ने अपनी राय स्पष्ट की।

'आपको भूख नहीं है, और मुझसे कह रहे हैं, मैं खाना खा लूँ।'

'कुछ समझा करो शान्ति! मेरा मानस ठीक नहीं है।'

'बिगाड़ा किसने है तुम्हारा मानस? आज विश्वास होता तो डॉक्टरों को फोन करने की आवश्यकता नहीं रहती। न मालूम कहाँ होगा बेचारा!' शान्ति ने अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहा। फिर, कुछ प्रसन्न मन से बोली- 'सुना है उसने किसी बदमाश को पकड़वाया है। इसके लिए उसे पाँच हजार का पुरस्कार

भी मिला है।'

'कब की बात है?'

'जिस दिन घर से गया था, उसके दूसरे दिन समाचार पत्र में उसका फोटो भी छपा था। मगर, हम देख नहीं सके।'

'हूँ'।

'दीपक पूछ रहा है, भैया कहाँ हैं? अभी तक आये क्यों नहीं? उसे क्या कहूँ मैं?

'मैं क्या बतलाऊँ?'

'तब फिर मैं बताऊँ उसे, कि तुम्हारे पिताजी ने उनको घर से निकाल दिया है।'

'नहीं। उसे कहो कि वे अभी तक इंगलैण्ड से ही नहीं आये।'

'मैं झूठ नहीं बोलूँगी।'

'तो मत बोलो। चुप रहो।'

'कब तक चुप रहूँगी? बच्चे तो हैं नहीं कि खिलौनों से बहला सकूँ।'

'आरती कहाँ पर है?'

'बरामदे में बैठी है वह।'

'उससे बातें करो, हो सकता है। वह धीरे-धीरे कुछ समझने लगे। पुरानी स्मृति फिर लौट आये। उसकी वस्तुएँ उसे दिखलाओ।'

'मैं अपनी तरफ से वह सब कुछ कर रही हूँ, जो डॉक्टर ने कहा है। मैंने उसे सब कुछ बतलाया। मगर वह तो अबोध बालिका की तरह, चुपचाप सुनती रहती है। उसे देखकर, मेरा तो हृदय तक रोने लग जाता है।'

किशनलाल चुपचाप कमरे से उठकर बाहर बरामदे में आ गया। उसके पीछे-पीछे शान्ति भी आ गई।

बाहर, बरामदे में एक चटाई पर, आरती चुपचाप बैठी हुई है।

किशनलाल उसके समीप जाकर बोला- 'बेटी! मुझे पहिचानो। मैं तुम्हारा पिता हूँ, और यह है तुम्हारी माँ!....याद करो बेटी! तुम शिमला घूमने गई थी। बताओ तो वहाँ क्या-क्या देखा था तुमने?'

आरती चुपचाप देखती सुनती रही।

'न तो तुम कुछ बोल रही हो, न ही कुछ समझ रही हो।.......आखिर यह हो क्या गया है तुम्हें?...हे भगवन्! कैसे ठीक होगी अब यह!'

'अब दुःख पड़ा है, तो भगवान् की पुकार लगाने लगे हैं। काश! तुम्हे पहिले ही प्रभु की याद आई होती।'

'हाँ तुम सच कह रही हो शान्ति! जब दुःख आते हैं, तभी तो उस परम प्रभु की याद आती है।'

'मैं तो आपसे पहिले से ही कह रही हूँ कि धर्म में आस्था रखो। गुरु और भगवान् का सहारा बनाए रखो। मगर, आप तो धर्म को ढकोसला मानकर सदा ही उसकी उपेक्षा करते रहे हैं। गुरुदेव के चरणों में मैं ही गई होऊँगी। आप कभी भी सच्चे हृदय से उनकी सेवा में नहीं पहुँचे।'

'नास्तिक विचारधारा की पुस्तकों ने मेरे मानस को विकृत कर दिया था शान्ति! अब मुझे अपनी गलती का आभास हो रहा है।'

'भगवान के घर देर है, अन्धेर नहीं है स्वामी। मुझे विश्वास है कि एक दिन, मेरी आरती अवश्य ठीक हो जायेगी। मेरा विश्वास और आलोक दोनों ही लौट कर मेरे पास आयेंगे। आप पता क्यों नहीं लगा रहे उनका?'

'आलोक तो मुम्बई गया है। हो सकता है वहीं से लन्दन के लिए वह रवाना हो जाये। विश्वास का अभी कुछ पता नहीं चला है। मैं कल ही टी.वी.और समाचार पत्रों में विज्ञापन दे दूँगा। अरे मोती! ओ मोती?'

जी मालिक!

'दीपक को भोजन खिला दिया?'

'जी हाँ। उन्हें भोजन और दवा दोनों खिला चुका हूँ। आपके लिये ले आऊँ मालिक?'

'हाँ, दोनों थाल यहीं ले आओ। आरती भी यहीं भोजन कर लेगी। क्यों बेटी। मेरे पास खाना खाओगी?'

आरती ने मुस्कुराकर सिर हिला दिया।

मोती, दो थालों में खाना ले आया। उन्हें रखकर वह तीन ग्लास और पानी भरा जग भी रख गया।

किशनलाल आरती के निकट बैठकर बोला– 'आओ बेटी! भोजन कर लो।

देखो तो, मोती ने आज क्या-क्या बनाया है? यह चावल है। यह नमकीन है। इधर प्लेट में काजू की कतली है। लो, तुम पहले यह खा लो। खाओ बेटी।'

आरती ने काजू की एक कतली उठाकर मुँह में रख ली। उसके साथ ही, किशनलाल भी खाने लगा।

हँसते मुस्कुराते हुए तीनों ने भोजन किया।

'शान्ति! आरती को दवा दे दो।'-भोजन से निवृत्त होकर किशनलाल ने कहा- 'मैं डॉक्टर चटर्जी के यहाँ उनसे राय लेने जा रहा हूँ। जल्दी ही लौट आऊँगा। और हाँ मोती।'

'जी मालिक!'

'छोटे बाबू को दूध पिला देना। कोई परेशानी हो, तो मुझे सूचित करना। मैं डॉ. चटर्जी के यहाँ जा रहा हूँ।'

'आप जरा जल्दी लौट आना'- शान्ति ने सामायिक के लिए तैयार होते हुए कहा।

'ठीक है'-कहता हुआ किशनलाल बाहर निकल गया। और शान्ति, अपने मन की शांन्ति के लिए सामायिक में बैठ गई।

(क्रमशः)

बाल-स्तम्भ [मार्च-2010] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'संयम की सीख' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 39 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	गौरव कुमार जैन-जयपुर	20
द्वितीय पुरस्कार-200/-	श्रीकान्त सुराणा-गंगाशहर	19.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	प्राची वोरा-इचलकरंजी	19.25
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	श्वेता आंचलिया-नरडाणा	19
	खुशबु लुणिया-अंबरपेठ	19
	निधि बुरड़- ब्यावर	19
	पीयूष जारोली-बालोतरा	19
	हर्षित जैन-जोधपुर	19

युवा-स्तम्भ

बदलते मूल्य और सामाजिक अपेक्षाएँ

श्री पदमचन्द गाँधी

मूल संस्कार एवं परम्पराएं किसी भी राष्ट्र की वे महत्त्वपूर्ण धरोहर हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जोड़ती हैं। जीवन को सुखद, सहज, सरल एवं आनन्दमयी बनाती हैं। सामाजिक मूल्यों का विकास ही समाज को सात्त्विक बल एवं सही दिशा प्रदान करता है। सहयोग, स्नेह, समर्पण, श्रद्धा, आदरभाव, समता, प्रसन्नता, सहकारिता, मधुरता, बन्धुत्व, चारुता, उदारता, विनम्रता आदि ऐसे मूल्य हैं जो जीवन को आदर्श ही नहीं बनाते, वरन् जीवन को एक 'उत्सव' की भाँति जीने का मौका देते हैं। लेकिन आधुनिकता के इस संक्रमण काल में इनके मूल्य बदल गये हैं। स्वतंत्रता में जीवन जीने की अनेक विधियाँ आविष्कृत हुई। परतंत्रता एवं उठापटक ने भी भारतीय मूल्यों को स्थिर बनाए रखा, लेकिन आधुनिकता ने तो इस थोड़े से समय में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को तेजी से क्षीण कर दिया, जिससे सम्पूर्ण सामाजिक स्थिति चरमरा गयी तथा समाज का अस्तित्व खतरे में आ गया है। आज स्थिति इतनी गम्भीर होती जा रही है कि मनुष्य पशुत्व की श्रेणी से भी निम्न स्तर पर जा रहा है।

समय की तेज रफ्तार में पुरानी परम्पराएँ, सामाजिक मूल्य, पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही पारिवारिक व्यवस्थाएँ अब आधुनिकता के नाम पर तार-तार होकर बिखर रही हैं। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संचार-व्यवस्था, इलेक्ट्रोनिक युग, विदेशी संस्कृति की घुसपैठ तथा अतिभोगवाद की संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को तीव्र रूप से प्रभावित किया है। अतिभोग के लिए आज व्यक्ति भागमभाग की आपाधापी में अधिक धनसंग्रह, विलासितापूर्ण जीवन तथा अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त होकर समाज में झूठी प्रतिष्ठा का प्रदर्शन कर अपने आपको सर्वश्रेष्ठ घोषित करना चाहता है। इसके लिए वह कोई भी घिनौना कृत्य करने को तैयार हो जाता है। आधुनिकता की आड़ में व्यक्ति बुजुर्गों से विरासत में प्राप्त संस्कारों की धरोहर तथा सामाजिक मूल्यों को धीरे-धीरे भूलता जा रहा है। इनके स्थान पर अमर्यादित जीवन तथा फूहड़पन वाली संस्कृति को ग्रहण कर रहा है।

अतिभोगवाद की संस्कृति एवं भूमण्डलीकरण के कारण व्यक्ति ने केवल अर्थोपार्जन को ही अपना एक मात्र लक्ष्य मान लिया है। उसने नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को गौण कर दिया है। आज व्यक्ति 'इजीमनी' प्राप्त करने के लिए गलत कार्य करते हुए भी डरता नहीं है। इस ईजीमनी से वह तृप्त होना चाहता है, लेकिन फिर भी वह अतृप्त एवं असन्तुष्ट नज़र आता है। "आज ही सब कुछ चाहिए। कल का धीरज नहीं रखने वाली मानसिकता से व्यक्ति नैतिकता की सभी दीवारें तोड़कर अपने जीवन को दांव पर लगा रहा है। आज व्यक्ति के पास अत्याधुनिक साधन होने के बाद भी वह सुखी नहीं है, उसे गहरी नींद का सुख नहीं मिलता, क्योंकि वह साधनों के ढेर में अजनबी बन कर 'अपनापन' ढूंढ रहा है जो उसे नहीं मिलता। आज भौगोलिक दूरियां तो कम हो गयी, लेकिन मन की दूरियां तेजी से बढ़ गयी। एक ही छत के नीचे वह अनजान की तरह रह रहा है। एकाकी जीवन पर पाश्चात्त्य प्रभाव इतना हावी हो गया है कि व्यक्ति अपनी सभी मर्यादाओं को लांघकर इन्द्रिय सुखों की लालसा में अपना अमूल्य चरित्र भी दांव पर लगा देता है तथा उच्छृंखल जीवन जीने की राह पर चला जा रहा है। आज व्यक्ति सभी प्रकार के सामाजिक, व्यापारिक, आर्थिक एवं प्राकृतिक मर्यादाओं के तट बांधों को तोड़कर आगे बढ़ रहा है। आर्थिक सत्ता हासिल करने के लिए न जाने कितने-कितने ताने-बाने बुनता है। उसके लिए मानवीय मूल्य एवं संवेदनशीलता गौण हो चुकी है। इसके कारण उसकी जीवन शैली भी अव्यवस्थित हो गयी है।

समाज के बदलते मूल्यों ने समाज की गरिमामयी अखण्डता एवं एकता को खतरा उत्पन्न कर दिया है। प्रभुत्वशाली लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ पूरे कर रहे हैं। स्वस्थ समाज नहीं रहने से समाज के प्रति समर्पण एवं सम्मान क्षीण हो गया है। मोडर्नाइजेशन एवं बढ़ती मुक्त विचारधारा के कारण समाज की परवाह किए बगैर गलत कार्यों को करने में व्यक्ति को अब डर नहीं लग रहा है। आज संयुक्त परिवार के स्थान पर एकाकी परिवार पनप रहे हैं। "माता-पिता एवं अपने बच्चों" में भी वैचारिक दरारें पड़ने के कारण परिवार टूटने की कगार पर पहुँच गये हैं। पति-पत्नी के संवेदनशील रिश्ते टूट रहे हैं। व्यक्ति एकाकी जीवन व्यतीत करने को मजबूर हो गया है, जिससे उसे कुण्ठा के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। ऐसी प्रवृत्तियों के कारण समाज में अनगिनत अनचाही बुराइयाँ प्रविष्ट हो चुकी हैं।

समाज में आडम्बर, दिखावा एवं अपव्यय बढ़ रहा है, लेकिन मन की शक्ति एवं विवेक क्षीण हो रहा है।

बदलते परिवेश में अराजकता, नग्नता एवं अनैतिकता अपने पांव पसार रही है। आधुनिक बनने के चक्कर में व्यक्ति अपने धर्म, संस्कृति एवं संस्कारों की बलि दे रहा है। आज चारों ओर मीडिया एवं टी.वी. चैनलों द्वारा नग्नता का प्रदर्शन किया जा रहा है। इनका सीधा असर समाज पर पड़ता है, खास कर युवा पीढ़ी इसे आचरित कर अपने आपको 'मोडर्न' बनाने का खुलकर प्रयास कर रही है। द्रौपदी ने चीरहरण पर कृष्ण को पुकारा था, जिससे उसकी लाज बची, लेकिन अब तो द्रौपदियाँ स्वयं भरे बाजार में अपने कपड़े फाड़कर खड़ी हो जाती हैं, लाँछन किसी निर्दोष पर लगाकर उससे पर्स, मोबाइल, अंगूठी, चैन आदि हड़प लेती हैं। इस खुले प्रदर्शन के कारण ही मानसिक प्रदूषण बढ़ता जा रहा है जिसके कारण हत्याएँ, बलात्कार, लूट जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं।

उच्च सामाजिक मूल्यों के कारण ही भारत को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर गुरुवत् मान-सम्मान मिला हुआ था, लेकिन आज आधुनिकता के नाम पर अपसंस्कृति और मूल्यहीनता का शिकार बन कर निकृष्टतम अमानवीय मनोवृत्तियों का अखाड़ा बन कर रह गया है। नैतिकता एवं सांस्कृतिक आयोजनों की आड़ में अनैतिकता और अनाचार पोषित हो रहा है। नारी स्वतंत्रता की आड़ में उनका शोषण हो रहा है। आधुनिक दिखने की चाह में फैन्सी या अभद्र कपड़ों का चलन बढ़ गया है। सिगरेट, शराब तथा मादक पदार्थों का सेवन युवा वर्ग को आधुनिकता का पैमाना प्रतीत हो रहा है। इसमें युवतियाँ भी शामिल हो रही हैं। 'पब' और 'डिस्को' संस्कृति में स्वतंत्र तथा उन्मुक्त जीवन जीने की चाह में युवा पीढ़ी लिव इन रिलेशनशिप को अपना रही है। युवा पीढ़ी सामाजिक जिम्मेदारी तो क्या पारिवारिक जिम्मेदारी को भी निभाना उचित नहीं मानती। बिना विवाह के बन्धन में बन्धे युवक-युवतियों का साथ रहना पश्चिम की तर्ज पर आधुनिक बनने के चक्कर में अप्राकृतिक सम्बन्ध बनाने की ओर धकेल रहा है। एकल परिवार के समर्थक आधुनिक दम्पती आज बुजुर्गों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार अपनाने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। ऐसे में उनका आशीर्वाद आधुनिकता की दौड़ में बेमानी हो गया है। बच्चों में संस्कार वही आते हैं जो उन्हें दिखाया जाता है या सिखाया जाता है। जो कृत्य मां-बाप करते हैं उसी का अनुसरण बच्चे करते हैं। घरेलू हिंसा,

लड़ाई-झगड़े, रिश्तों की दूरियां , बदलते परिधान ये सभी बच्चे उनके मां-बाप से ग्रहण कर रहे हैं। भविष्य में उनका आचरण कैसा होगा, जरा सोचें।

परिवार एवं समाज तभी गौरान्वित होता है जब व्यक्ति के आचरण में शुद्धता, विनम्रता, भ्रातृत्व, सहकार भावना, संस्कारित आचरण का एक उदाहरण अपने बच्चों के सामने प्रस्तुत करें तथा भौतिक कंगूरा नहीं संस्कारों की नींव बनें। शैक्षणिक संस्थाओं में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से लागू करें तथा शिक्षक बच्चों पर नैतिकता की गहरी एवं अमिट छाप छोड़ें। स्वच्छ प्रशासन द्वारा दूरदर्शन केबल चैनलों पर अंकुश लगायें, जिससे उच्च एवं पारदर्शी चरित्र के साथ सामाजिक मूल्यों को बरकरार रखा जाए।

श्रेष्ठ व्यक्ति ही समाज का निर्माण करता है। अतः व्यक्ति अपनी सोच को सकारात्मक रूप देकर समाज को संगठित करे। सामाजिक स्तर पर इन बदलती परिस्थितियों पर चिन्तन किया जाये तथा सामाजिक अंकुश लागू किया जाये। सम्पन्न एवं प्रभुत्वशाली व्यक्ति सबसे पहले समाज के सामने कृत अच्छे निर्णयों को लागू करे तथा अमल में लाये। साहित्यकार सत् व प्रेरक साहित्य का सृजन कर चाणक्य की तरह अलख जगाएँ। सन्त महात्मा, मुनिजन इन समस्याओं पर आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता के आधार पर व्यक्तियों को वास्तविक जीवन जीने की कला सिखाएँ। महिलाएँ 'अर्थ' एवं करियर के स्थान पर अपनी भावी पीढ़ी और परिवार को अधिक महत्त्वपूर्ण समझें। युवा वर्ग में परिवार, समाज व धर्म के प्रति श्रद्धा, समर्पण एवं आस्था की भावना जगे। इन सबसे निश्चित रूप से सामाजिक मूल्यों में वृद्धि होगी तथा समाज सुसंस्कृत होकर सर्वोच्च शिखर को प्राप्त कर सकेगा।

बदलते मूल्यों को रोकना है तो व्यक्ति को अनेकान्तवाद को अपनाना होगा, क्योंकि अनेकान्त दृष्टि वैचारिक संकीर्णताओं को मिटाने के साथ ज्ञान की सम्भावनाओं के अनन्त द्वार खोलती है। यह विवादों, कलह, एवं संघर्षों को मिटाने की एक अमृत औषधि ही नहीं, वरन् वर्तमान में आतंकवाद को समता पर लाने का महान रथ है। यदि अनेकान्त दृष्टि को व्यावहारिक जीवन के धरातल पर उतारा जाय तो समतामूलक, अहिंसामूलक और संघर्षविहीन स्वस्थ समाज की संरचना सम्भव होगी।

-25, बैंक कॉलोनी, महेशनगर विस्तार-'बी', गोपालपुरा, जयपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

धर्म की धुरी है नारी (2)*

डॉ. दिलीप धींग

जैन इतिहास के उजले पृष्ठों पर ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जहाँ नारी युद्धों को रुकवा देती है। आज हम देखते हैं, समाज में तरह-तरह के झगड़े हैं। कई मामले अखबारों में उछलते हैं और कई अदालतों में पहुँच जाते हैं। इससे हमारे समय, श्रम और धन का नुकसान तो होता ही है, आपसी मैत्रीभाव और प्रेम-सम्बन्ध भी तार-तार हो जाते हैं और समाज की प्रतिष्ठा को भारी धक्का लगता है। मैं तो माताओं और बहिनों से आह्वान करूँगा कि वे किसी मुद्दे पर आक्रोशित अपने परिवार के पुरुष सदस्य को धार्मिक व आपसी मामलों में मीडिया में जाने या अदालत के द्वार खटखटाने के लिए मना करने का साहस रखें। नारी की विवेकसम्मत और दूरदर्शितापूर्ण प्रेरणा बहुत प्रभावशाली होती है। यह नाजुक समय लड़ने का नहीं, कुछ रचनात्मक कार्य करने का है। वात्सल्य और करुणा की मूर्ति नारियाँ मैत्री की संदेश-वाहिकाएँ बनकर समाज का कायाकल्प कर सकती हैं।

पूर्व में स्त्री और पुरुष की कुछ भूमिकाओं का जिक्र किया। लेकिन स्त्री-पुरुष की जो सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ हैं, वे हैं- स्त्री के लिए श्राविका और श्रमणी होना तथा पुरुष के लिए श्रावक और श्रमण होना। जैसे श्रमण और श्रमणी तीर्थ होते हैं, वैसे ही श्रावक और श्राविका भी तीर्थ होते हैं। श्राविका और श्रावक होकर स्त्री-पुरुष अपने सांसारिक जीवन की अन्य सभी भूमिकाओं को नया अर्थ एवं आलोक देते हैं। आजकल हमारे धर्म-स्थानों में श्राविकाएँ 'लेडिज' हो गई हैं और श्रावक 'जेंट्स'! हमें अधिक अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग करना चाहिये। महिला संघ या समितियों के नाम में भी 'श्राविका' शब्द को प्राथमिकता देनी चाहिये। इन शब्दों में हमारी संस्कृति और साधना की सुगंध आती है।

जहाँ तक श्रमणी और श्रमण की बात है, ये मनुष्य जीवन की विशिष्ट

* जैनाचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति (आंध्रप्रदेश) द्वारा 21 फरवरी 2010 को हैदराबाद में आयोजित "आचार्य हस्ती का कथन - नारी धर्म की धुरी" विषयक संगोष्ठी में प्रदत्त व्याख्यान पर आधारित।

साधना की भूमिकाएँ हैं। साधना की सामान्य भूमिका (आगार धर्म) और विशिष्ट भूमिका (अनगार धर्म), दोनों में नारी हमेशा से आगे, बहुत आगे रही है। लेकिन इतिहास के पन्नों पर जो स्थान नारी को प्राप्त होना चाहिये था, वह उन्हें प्राप्त नहीं हुआ। सुदीर्घ काल-खण्ड में बहुत कम श्रमणियों और श्राविकाओं का जीवन-परिचय हमें मिलता है और जितना मिलता है, उनके योगदान पर हमारा मन गर्व और श्रद्धा से भर जाता है। 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' में आचार्य हस्ती कहते हैं कि तीर्थंकर काल से लेकर आज तक श्रमणियों की अविछिन्न परम्परा चली रही है, लेकिन अधिकांश का परिचय तो दूर, नामोल्लेख तक हमें प्राप्त नहीं होता है। यह सच है कि नारी धर्म की धुरी ही नहीं, धर्म और संस्कृति के भव्य प्रासाद की नींव की ईंट भी है। नारी की ममतामयी गोद में सभी तीर्थंकर, गणधर, आचार्य और महापुरुष खेले, पले और बड़े हुए हैं। नारी धर्म की धुरी बनी रही और धर्म का चक्र निरन्तर गतिमान रहा।

"जैन धर्म का मौलिक इतिहास" के तीसरे भाग में यह उल्लेख है कि मध्यकाल में दक्षिण भारत में यापनीय जैन धर्म संघ की भट्टारक परम्परा में साध्वियाँ भी भट्टारक बनीं। यहाँ तक कि वे अपने स्वतन्त्र धर्म संघ की आचार्या, अधिष्ठात्री अथवा अध्यक्षा भी होती थीं। उन साध्वी आचार्योओं ने अपने संघ का न सिर्फ कुशल नेतृत्व किया, अपितु जैन धर्म और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी उन्होंने युगान्तरकारी कार्य किया। कुछ ज्ञान केन्द्र और विश्वविद्यालय भी उन साध्वी संघों के मार्गदर्शन में चलते थे। अनेक जैन विद्वान और विदुषियाँ उन शिक्षण संस्थानों में तैयार किये जाते थे और उन्हें धर्म प्रचार के लिए दूर-दूर तक भेजा जाता था। आचार्य हस्ती कहते हैं कि स्त्रियों के विशेष योगदान के फलस्वरूप मध्ययुग में जैन धर्म कर्नाटक का एक बहुजन सम्मत धर्म बन गया था। कर्नाटक के नगर-नगर और घर-घर में जैन धर्म की आराधना होने लगी थी।

धर्म और संस्कृति के सम्यक् प्रचार के लिए आज नारी की श्राविका तथा श्रमणी दोनों ही रूपों में विशेष भूमिका की बड़ी अपेक्षा है। वर्तमान समय में स्वाध्यायी, समणी आदि रूपों में भी उसे अपनी सेवाएँ देने के सुअवसर प्राप्त हैं।

जैन समाज में कामकाजी महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है। यह शुभ है कि अधिकांश महिलाएँ अर्थोपार्जन की चिन्ता से मुक्त हैं। इसके अलावा विज्ञान और तकनीकी सुविधाओं ने महिलाओं के रोजमर्रा के कार्यों को बहुत हल्का और आसान कर दिया है। यदि महिलाएँ अनावश्यक टी.वी. देखना, कुछ व्यक्तिगत शौक, मनोरंजन, प्रमाद आदि से अपने जीवन के अनमोल समय को बचा सकें तो अनेक स्थायी महत्त्व के कार्य कर सकती हैं।

एक बात और मैं माताओं एवं बहिनों से कहा करता हूँ कि वे अपने मधुर कण्ठ में धर्म और संस्कृति के पावन गीतों को स्थान दें। ये गीत और लोरियाँ, सपने और चौबीसियाँ, भजन और स्तुतियाँ मानव-मन में संस्कार पैदा करती हैं। नारी की चौसठ कलाओं में नृत्य, गीत-संगीत सबको स्थान दिया गया है। अन्य भी कई अच्छी कलाएँ हैं, जिनमें महिला वर्ग की सहज रुचि होती है। धर्म, इतिहास और संस्कृति की प्रेरक कथाओं, संवादों, प्रतीकों आदि में इन कलाओं का प्रयोग और विकास करना चाहिये। कला के माध्यम से सामाजिक, शैक्षणिक और अन्य क्षेत्रों में भी श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा की जा सकती है। ऐसे संस्कारपरक कार्यक्रमों से युवा बहिनों को धर्म और संस्कृति के निकट लाया जा सकता है।

आचार्य हस्ती ने नारी को धर्म की धुरी कहा। धर्म को एक शब्द में कहा जाए तो वह है- अहिंसा। अहिंसा की शुरूआत होती है आहार से, और आहार का महत्त्वपूर्ण विभाग नारी के पास ही है। कहीं-कहीं सुनने में आता है कि आज कुछ गलत चीजें हमारे पवित्र रसोई-घर में प्रवेश कर रही हैं। आहार-शुद्धि और चौके की पवित्रता को कायम रखना माताओं और बहिनों का मुख्य दायित्व है। ऐसा करके वे परिवार के स्वास्थ्य और सुसंस्कारों की रक्षा करती हैं। नारी की इच्छा के बगैर किसी भी घर में अभक्ष्य वस्तुओं का प्रवेश संभव नहीं है। आहार का न सिर्फ परिवार पर, अपितु पूरे समाज पर गहरा असर होता है। भ्रूण-हत्या जैसे मामले में भी नारी की इच्छा-शक्ति ही निर्णायक बनती है। संयम और तप भी धर्म के अन्य रूप हैं, जिनकी आराधना में भी नारी हमेशा से आगे रही है। ऐसे पावन धर्म की उपासिका नारी को अब अधिक सक्रिय होकर कार्य करने की आवश्यकता है।

ऐसे अनेक तथ्य और आयाम हैं, जो जीवन और धर्म के विकास में नारी की बुनियादी तथा केन्द्रीय भूमिका को सिद्ध करते हैं। हमने कुछ आयामों की चर्चा की है। आचार्य हस्ती ने सच ही कहा था कि नारी धर्म की धुरी है। निखिल मानवता के कल्याण के लिए इस धुरी को सुदृढ़ व समर्थ बनाना हमारा सबका कर्तव्य है।

-53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

दान देने की आदत बनाओ

बी. श्रेणिक कुमार चोरडिया

दान देने की हिचकिचाहट उनको होती है, जिन्होंने दान देने की आदत न बनाई हो।

एक दुःखी आदमी ने कृपण सेठ से कुछ दान की याचना की। दुःखी आदमी ने कहा- सेठजी आप बड़े श्रीमंत है, कुछ रुपये दे दो।

सेठ ने कहा- मेरे पास कुछ नहीं है।

दुःखी ने कहा- सेठ कुछ खाना दे दो, दो दिन से कुछ नहीं खाया।

सेठ ने कहा- खाना भी मेरे पास नहीं है, यहाँ से चले जाओ।

दुःखी आदमी ने कहा- सेठ मेरे कपड़े फटे हैं, कुछ कपड़े तो दे दो।

सेठ ने कहा- मेरे पास कुछ नहीं है, चले जाओ।

दुःखी आदमी ने कहा- ठीक है सेठजी! कुछ नहीं है तो आपके पैर के पास बहुत धूल पड़ी है, वह उठाके दे दो, पर कुछ दो जरूर।

धूल देने में तो सेठ को कोई दिक्कत नहीं थी, उसने धूल उठाकर उसको दे दी। वह बहुत खुश हो गया। सेठ के मन में आया, मैंने इसको धूल ही तो दी है, धूल में इसको क्या आनन्द आया। सेठ से रहा नहीं गया, उसने उससे पूछा-तुम्हें धूल लेने में क्या आनंद आया?

आदमी ने कहा-सेठजी आपको कम से कम धूल देने की आदत तो बनी, इसलिए मुझे आनन्द आया। आज धूल देने की आदत बनी तो कल वस्त्र, आहार, पैसा देने की भी आदत जरूर बनेगी, यह मेरा विश्वास है।

मिला है तो कुछ देकर खाओ, इस आदत को अपने जीवन में उतार लो। मनुष्य भव सार्थक हो जायेगा।

-14, 'B' Vasupujya Apartment, Ist Floor,
50, Hunters Road, Choolai, Chennai-600112(T.N.)

श्रद्धा-भक्ति

आचार्य श्री हस्ती गुणाष्टक

श्री राजमल जी ओस्तवाल (अब स्वर्गस्थ)

पूज्य शांत दांत गम्भीर गणि अति ज्ञानवान महान् थे।
श्री रत्नचन्द गणि गच्छ अधिनायक परम विद्वान् थे।
तप योग साधन मौन चिंतन लीन महा गुणखान थे।
करते सविधि वंदन परम आचार्य हस्ती महान् थे ।।1 ।।

आचार्य छठवें पूज्य शोभाचन्द्र जी मुनिनाथ थे।
प्रभावना जिनधर्म की करते सतत दिन रात थे।
जिनधर्म का डंका बजाया तस शिष्य अतिशयवान थे।
करते स्मरण वंदन परम आचार्य हस्ती महान् थे ।।2 ।।

आपश्री के जन्म से पीपाड़ भी मशहूर है।
तात केवलचन्द्र नन्दन भानु तेजस् नूर थे।
रूपां सती के लाल प्यारे श्रेष्ठ संयमवान थे।
करते स्मरण वंदन परम आचार्य हस्ती महान् थे ।।3 ।।

पावन महाव्रत पंच पंचाचार सुखकर पालते।
इन्द्रिय विषय को जीतकर चारों कषाय टारते।
नववाड़ ब्रह्मचारी महामुनि आत्मनिधि गुण खान थे।
करते स्मरण वंदन परम आचार्य हस्ती महान् थे ।।4 ।।

शुद्ध समिति गुप्ति पालक सम्पदा वसु के धणी।
मुनिवृंद के सरताज थे चारित्र के चूड़ामणि।
वचन भव भय टारते निर्ग्रन्थ धीरजवान थे।
करते स्मरण वंदन परम आचार्य हस्ती महान् थे ।।5 ।।

विद्यावारिधि सद्गुणी श्रद्धा अडिग थी आपमें।
मुनि मार्ग साधक सूरमां अप्रमत्तता हद आपमें।
ज्ञाता विलक्षण आगमों के नर रत्न श्रेष्ठ महान् थे।
करते स्मरण वंदन आचार्य हस्ती महान् थे ।।6 ।।

अनुभव किया जो आपने चिंतन मनन नवनीत सम।
उस ज्ञान रश्मि से सदा हरते निशा अज्ञानतम।

षट्काय जीवों के हितैषी, निर्ग्रन्थ श्रमण शृंगार थे।
करते स्मरण वंदन परम आचार्य हस्ती महान् थे ।।7 ।।

स्वाध्याय कर ज्ञानी बनो ज्योति जगाओ ज्ञान की।
नित्य सामायिक करो तज विकथा पंच प्रमाद को।
संदेश घर-घर में गुंजाया धन्य श्रमण गुणवान् थे।
करते स्मरण वंदन परम आचार्य हस्ती महान् थे ।।8 ।।

जैनत्व जनजन में जगाते पाप ताप निवारते।
शिव सुख रिद्धिसिद्धि पाने की कला बतलावते।
निज आत्म भावों में रमण जपते सदा नवकार थे।
करते स्मरण वंदन परम आचार्य हस्ती महान् थे।

-प्रेषक : गौतमचन्द ओस्तवाल (मोक्षद्वार), बेंगलूरू

स्वाध्याय की ज्योति जगाते चलो.. ।।

(तर्ज : प्रेम की गंगा बहाते चलो.....)

श्री देवेन्द्र नाथ मोदी

स्वाध्याय की ज्योति जगाते चलो।
आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी मनाते चलो।
अध्यात्म-चेतना वर्ष में हर बन्धु को
संकल्प-व्रती बनाते चलो। हस्ती जन्म शताब्दी....... ।।
हस्ती गुरु की आज्ञा यही है, सबको स्वाध्यायी बनाओ।
अज्ञान-अंधकार मिटाकर, सारे परम ज्ञानी बन जाओ।
पाठ सामायिक-प्रार्थना का पढ़ाते चलो। हस्ती जन्म शताब्दी .... ।।
हम सच्चे और दूसरे मिथ्या, यों कहते मिथ्यात्वी।
वीतराग की वाणी सच्ची, मान रहे सम्यक्त्वी।
खींचातान मिटाते चलो। हस्ती जन्म शताब्दी........ ।।
राग-द्वेष को जीतने वाले, जिन भगवान कहाते।
उनको मानने वाले सज्जन, सुश्रावक जैन सुहाते।
सम्प्रदाय का भेद हटाते चलो। हस्ती जन्म शताब्दी...... ।।
हस्ती गुरु के आदर्शों पर गहरा ध्यान लगाओ।
उनके पावन जीवन से, निज जीवन अन्दर बैठ मिलाओ।
चेतना-वर्ष में कमियाँ दूर करते चलो। हस्ती जन्म शताब्दी........ ।।

-'हुकम', 5-ए/1, सुभाष नगर, पालरोड़, जोधपुर (राज.)

संवाद (27)

माह अप्रेल-2010 की जिनवाणी में पूछे गये निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर यहाँ प्रकाशित किए जा रहे हैं-

प्रश्न-क्या मनुष्य एक जन्म के बाद दूसरे जन्म में भी मनुष्य के रूप में ही जन्म लेता है या अपने बुरे कर्मों के कारण पशु, पक्षी अथवा कीट-पतंग जैसी योनियों में भी जन्म ले सकता है?

- एम.सी. नवलखा, जयपुर (राज.)

घेवरचन्द गोदीका-जयपुर- यह निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य पुनर्जन्म लेता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि मनुष्य एक जन्म के बाद दूसरे भव में मनुष्य ही बने। मनुष्य भव मिलना बड़ा दुर्लभ है। कौनसा जीव किस गति में जाएगा, यह उसके कर्मों के अधीन है। अपने नीच कर्मों के कारण जीव कीट-पतंगा एवं पृथ्वीकायिक आदि में भी उत्पन्न हो सकता है। मनुष्य गति का जीव चारों गतियों में जा सकता है। वह नरक में भी जा सकता है एवं देव भी बन सकता है। आयुकर्म-बंधन के समय जैसे हमारे भाव होते हैं वैसी ही गति हमें मिलती है। इसीलिये कहा गया है कि विचार हमेशा विशुद्ध रखने चाहिये। विशुद्ध विचारों के रहते कम से कम हमें पशु-पक्षी अथवा कीट-पतंगे जैसी योनियों में तो जन्मना न पड़े। इसकी साधना करते रहने से विचार में शुद्धता आती रहती है और जैसे-जैसे विचार शुद्धतर होंगे, हो सकता है वह मनुष्य योनि के कर्मबंध से पुनः मनुष्य बन जाए। मनुष्य योनि में भी जिस प्रकार का मनुष्य बने यह उसके कर्मों के अधीन है। वह गरीब, अमीर, अपंग कुछ भी बन सकता है। अतएव हमें विचारों के साथ-साथ अपने कर्म भी विशुद्धता के साथ करने चाहिये ताकि हमारे कर्म अच्छे से अच्छे बनें और पशु-पक्षियों, एकेन्द्रिय या नरक की योनि में न जाना पड़े।

सुनील बैद, भीनासर- मनुष्य एक जन्म के बाद दूसरे जन्म में भी मनुष्य के रूप में ही जन्म ले ऐसा बहुत दुर्लभ होता है। इसके लिए मनुष्य को सत्कर्म एवं धर्म आराधना करनी होती है। यह सत्य है कि बुरे कर्मों के

कारण मनुष्य को पशु-पक्षी अथवा कीट-पतंगों जैसी जीव योनियों में भी जन्म लेना पड़ सकता है। 84 लाख जीव-योनि में भटकते-भटकते जीव को मनुष्य जन्म मिलता है अतः इस दुर्लभ मनुष्य जीवन को व्यर्थ नहीं खोना चाहिए। व्यक्ति इस मानव जन्म में धर्म स्वाध्याय, पठन-पाठन, जप, तप, सामायिक, पौषध, संवर, निर्जरा आदि के द्वारा अपने किए हुए पापों का अंत करके कर्म-बंध को समाप्त कर 84 लाख जीव-योनि में जन्म लेने से मुक्ति पा सकता है। इस प्रकार पूर्ण धर्म आराधना के द्वारा मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

डॉ. पदमचन्द मुणोत, जयपुर- भगवान् महावीर की वाणी को जो गणधर सुधर्मा स्वामी ने श्री जम्बू स्वामी को फरमाया था, वह जैन धर्म के अंग रूप आगम कहलाती है। उनमें प्रतिपादित वाचना के अनुसार सभी जीव अपने बद्ध कर्मों के अनुसार 84 लाख जीवयोनियों में जन्म लेते हैं और आयुष्य कर्म पूर्ण होने पर देह त्याग रूप मरण को प्राप्त करते हैं।

चौरासी लाख जीवयोनियाँ का खुलासा निम्न प्रकार किया गया है:- चार लाख पृथ्वीकाय, चार लाख अपूकाय (पानी के काय), चार लाख तेउकाय, चार लाख वायुकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकियों एवं चौदह लाख मनुष्य- इस प्रकार चौरासी लाख जीवायोनियाँ हैं।

अतः मनुष्य भी अपने कर्मों के अनुसार किसी भी योनि में जन्म ले सकता है। मनुष्य मर कर देव बन सकता है, नरक में नारकी बन सकता है, मनुष्य बन सकता है और तिर्यञ्च भी बन सकता है। यदि तिर्यञ्च बनता है तो पशु-पक्षी, कीट-पतंग जो तिर्यञ्च है, के रूप में भी जन्म ले सकता है। मनुष्य मर कर मनुष्य ही बने यह आवश्यक नहीं है। क्रोधी मनुष्य मर कर नरक में नारकी बन सकता है। सम्यग्दर्शनी की गति देव है।

गति नाम कर्म की चार ही प्रकृतियाँ है- नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव। मनुष्य चारों गतियों में से किसी भी गति में जा सकता है।

तिर्यञ्च भी चारों गतियों में से किसी भी गति में जाकर जन्म ले सकता है। जबकि नारक, केवल मनुष्य और तिर्यञ्च इन दो गति में ही जा सकते हैं और देव भी केवल मनुष्य और तिर्यञ्च दो गति में ही जा सकते हैं।

मनुष्य जन्म दुर्लभ है। बहुत पुण्य से ही यह प्राप्त होता है। इस शरीर से ही जन्म-मरण का दुःख मिटा कर जीव मोक्षरूपी सुख को प्राप्त कर सकता है। सन्त समागम से इसी विस्तृत जानकारी बहुत अल्प समय में ही हो सकती है।

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर- आसक्ति नये जन्म का कारण है। मानव के पूरे जीवनकाल में आसक्ति की मन्दता-तीव्रता चलती है। आयुबन्ध के समय कषाय की मन्दता एवं तीव्रता का भाव ही नरक, देव, तिर्यंच और मनुष्य भव का निर्धारण करता है। अतः तत्त्वार्थसूत्रकार ने चारों आयुबन्ध के कारण बताते हुए कहा है- बहु आरम्भ और बहुपरिग्रह नरकायु का, माया तिर्यंच-आयु का, अल्प-आरम्भ, अल्प-परिग्रह, स्वभाव में मृदुता और सरलता मनुष्य-आयु का तथा सरागसंयम, संयमासंयम, अकामनिर्जरा और बालतप देवायु का बन्ध-हेतु है। (6.16-20) मनुष्य इन सभी हेतुओं को करने में समर्थ होने से नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव योनि में जा सकता है।

श्री नवलखा जी के प्रश्न के पीछे रही धारणा को समझा जाए तो तीन बातें साम्मने आती हैं-

1. टी.वी. सीरियल में पूर्वजन्मों के वृत्तान्त बताए जाते हैं, उनमें सदैव एक मानव का पूर्वजन्म मनुष्य के रूप में आता है।
2. मनोवैज्ञानिकों द्वारा किसी भी व्यक्ति को वश में कर पूर्वजन्म में ले जाया जाता है तो वह अधिकांशतः मनुष्य जन्म की बात करता है।
3. अखबारों में पूर्वजन्म के स्मरण सम्बन्धी किस्से प्रकाशित होते हैं तो उनमें भी मानव-जन्म के स्मरण का ही स्वरूप होता है।

इन सभी तथ्यों पर विचार किए जाने पर निम्नांकित बिन्दु उभरकर आते हैं -

1. मृत्यु की घटना जीवन की सर्वाधिक संवेदनशील घटना है, यही कारण

है कि यह ऐसा आकस्मिक प्रहार/ दुर्घटना है जिससे व्यक्ति नये जन्म में पूर्वजन्म को विस्मृत कर देता है। फिर वर्तमान जन्म प्रभावी होने लगता है, पूर्वजन्म की एक भी स्मरण रेखा नहीं रहती। एक जन्म और दूसरे जन्म के मध्य अन्तराल न हो तो गहरे संस्कार की स्थिति में पूर्व जन्म का स्मरण हो आता है। ऐसा प्रायः मानव-जन्म में ही सम्भव है। इसका कारण स्पष्ट है कि मन का विकसित स्वरूप मानव-जन्म में ही मिलता है। अतः मनुष्य के बाद पुनः मनुष्य भव मिलता है तो पूर्वजन्म के स्मरण की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

2. पूर्व जन्म में कोई मानव यदि पशु रहा है और उससे पूर्व के जन्म में वह मनुष्य रहा है। ऐसे व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक द्वारा पूर्वजन्म का स्मरण करवाया जाता है तो वह पशु योनि की बातें बताने में समर्थ न हो सकेगा। क्योंकि पशु योनि में चिन्तन-मनन का अवसर न होने से गहरे संस्कारों की स्थिति कम होती है, अतः मानव भव के तीव्र संस्कारों को ही बताने में समर्थ होता है।

3. उपर्युक्त प्रथम बिन्दु उन लोगों से सम्बन्धित हैं, जिन्होंने बिना साधना से पूर्वजन्म को जान लिया है। जो साधना के मार्ग पर आगे बढ़कर हस्तामलकवत् पूर्वजन्मों को देख लेते हैं वे अपने तिर्यंच भव, देव भव, नारकी भव और मनुष्य भव सभी का कथन कर सकते हैं। भगवान् महावीर पूर्व जन्मों में मनुष्य से देव बने, मेघकुमार हाथी से मनुष्य बना आदि।

इस प्रकार आगमिक एवं व्यावहारिक कारणों से स्पष्ट है कि मनुष्य पशु-पक्षी अथवा कीट-पतंग जैसी योनियों में जन्म ले सकता है।

इस प्रश्न के उत्तर हमें निम्नाङ्कित जागरुक महानुभावों से भी प्राप्त हुए हैं-

1. श्री लक्ष्मीचन्द जैन, छोटी कसरावद (म.प्र.)
2. श्रीमती पुष्पा मेहता, पीपाड़सिटी (राज.)
3. श्रीमती रेखा जैन धर्मपत्नी श्री लालचन्द जैन, अलीगढ़-टोंक (राज.)
4. श्री रणछोड़मल चौपड़ा, भिलाई (छ.ग.)

बाल-स्तम्भ

एक हाथी और सात अंधे

मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी महाराज

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जून 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

एक हाथी किसी गांव में आया तो लोग उसे देखने के लिए गये। उस गांव में सात अन्धे पुरुष थे। उनके मन में भी आया कि हम भी हाथी को देख आयें कि हाथी कैसा होता है? उन्होंने यह तो नहीं सोचा कि जब हमारी आँखें नहीं है तो हम क्या देखेंगे? परन्तु मन में देखने की प्रबल इच्छा हुई तो वहाँ पहुँच गये जहां पर हाथी था और लोगों का मेला लग रहा था। लोगों ने कहा-अरे सूरदासों, तुम लोग यहां भीड़-भाड़ में क्यों आये हो? वे बोले- हम लोग भी हाथी को देखने के लिए आये हैं। इस प्रकार वे भीड़-भाड़ में घूमते हुए हाथी के समीप पहुँचे। महावत ने भी इन लोगों को आता हुआ देखकर पूछा- "अरे बाबा, यहाँ क्या देखने को आये हो?" इन्होंने उसे भी वही उत्तर दिया कि हाथी को देखने के लिए आये हैं। सूरदासों ने उससे पूछा कि भाई आप कौन हैं? उसने कहा कि मैं हाथी को चलाने वाला महावत हूँ। सूरदास बोले- हम हाथी को देखना चाहते हैं। महावत ने कहा- यह हाथी खड़ा है और तुम लोग इसके शरीर पर हाथ फेरकर देख लो। अब वे अन्धे व्यक्ति हाथी की ओर बढ़े। उनमें से एक ने उसकी पूंछ, एक ने सूंड, एक ने दांत, एक ने कान, एक ने पेट, एक ने कुम्भस्थल और एक ने हाथी का पैर पकड़ लिया। इस प्रकार हाथी के विभिन्न अंगों पर अपने-अपने हाथ फेर करके वे सब लौट गए। आगे जाने पर कुछ मसखरों ने पूछा कि आज सातों

ही लकड़ियाँ कहाँ गई थीं? इन्होंने कहा कि हम लोग हाथी को देखने गये थे। उन्होंने पूछा कि हाथी देख आये? सूरदास बोले-हाँ, देखकर ही तो आ रहे हैं। महावत बहुत भला आदमी है, उसने हमें अच्छी रीति से हाथी को देखने दिया। लोगों ने पूछा कि हाथी को कैसे देखा? इन्होंने उत्तर दिया कि हाथ फेर-फेर कर देखा। लोगों ने कहा-अच्छा बताओ हाथी कैसा है? एक ने कहा- हाथी तो मकान के थम्भे के समान है। तब दूसरा बोला-अरे अन्धे, क्यों झूठ बोल रहा है, पहले खराब करणी की सो तो अब अन्धा बना है और फिर झूठ बोल कर क्या अगले जन्म में भी अन्धा बनना चाहता है? हाथी तो मैंने देखा है, वह तो रस्सी के समान है। तब तीसरा अन्धा उसकी बात काटते हुए बोला- अजी, ये दोनों झूठ बोल रहे हैं। हाथी न तो खम्भे के समान है और न रस्सी के समान ही। किन्तु हाथी तो केले के पेड़ के तने के समान है। तब चौथा अन्धा बोला- नहीं, नहीं, हाथी तो मूसल के समान है। इसे सुनते ही पांचवां बोला-हाथी तो सूपड़े के समान है। यह सुनकर छठा बोला- नहीं जी, हाथी तो घड़े के समान है। तब सातवां अन्धा बोला- ये सभी झूठ बोलते हैं। हाथी को मैंने अच्छी तरह से देखा है। हाथी तो चबूतरे के समान है। इस प्रकार वे अन्धे आपस में ही लड़ने-झगड़ने लगे। और वे मसखरे उनका तमाशा देखने लगे।

अंधों का झगड़ा ही चल रहा था कि इतने में एक समझदार व्यक्ति उधर से निकला। उसने उन्हें लड़ते-झगड़ते देखकर पूछा कि अरे सूरदासों, आज तुम लोग आपस में ही क्यों लड़-झगड़ रहे हो? उनमें से एक बोला- भाई सा., आँखे फूट गईं तो फूट गईं। परन्तु इन लोगों का हिया ही फूट गया है। इन लोगों की झूठी बात को कैसे मान लें? उसने पूछा कि क्या बात है? उसने कहा- हम लोग हाथी को देखकर लौट रहे हैं। लोगों के पूछने पर कोई उसे मूसल के समान और कोई सूपड़े के समान बताता है, कोई किसी प्रकार का और कोई किसी प्रकार का बताता है। अब बतायें कि इन लोगों की झूठी को कैसे सच मान लिया जाय। उसकी बात सुनकर उस समझदार आदमी ने कहा- सूरदासजी, तुम सातों ही झूठे भी हो और सच्चे भी हो। तब वे सभी सूरदास बोल उठे- आप बहुत अच्छे न्याय करने वाले मिले, जो कि सभी को एक ही लाठी से हांक रहे हैं। यह नहीं हो सकता कि सभी झूठे हों और सभी सच्चे? आप हमारा न्याय ठीक रीति से कीजिए। तब उसने कहा- देखो, तुम लोग सच्चे तो इसलिए हो कि जो अंग हाथी का तुम्हारे हाथ में आया, उसके

अनुसार तुम उसे बता रहे हो। और झूठे इसलिए हो कि तुम लोग उस एक-एक अंग को हाथी मान रहे हो। तुम लोग आपस में तनातनी क्यों करते हो? मैं कहता हूँ कि तुम सातों ने ही हाथी देखा है, इसलिए तुम सब सच्चे हो। पर उसके अंग न्यारे-न्यारे हैं। जो कहता है कि हाथी थम्भे के समान है, उसने तो हाथी के पैर देखें हैं। जो हाथी को केले के पेड़ के तने जैसा कहता है उसने हाथी की सूंड देखी है। जो हाथी को मूसल जैसा कहा करता है, उसने हाथी के दांत देखे हैं। जो घड़े के समान कहता है, उसने हाथी का माथा देखा है। जो सूपड़े के समान कहता है, उसने हाथी के कान देखे हैं। जो हाथी को चबूतरे के समान कहता है उसने हाथी का पेट देखा है। जो रस्सी के समान बताता है उसने उसकी पूंछ पकड़ी है, तब तुम लोग इन सातों ही अंगों को इकट्ठा करो तो असली हाथी का पूरा स्वरूप तुम्हारी समझ में आ जाएगा। अन्यथा नहीं आयेगा।

बच्चों, जिस प्रकार एक-एक अंग को हाथी मानने पर जैसे वे सूरदास आपस में झगड़े, इसलिए वे सब झूठे थे, क्योंकि एक अंग-रूप हाथी नहीं है, किन्तु सर्व-अंगों का समुदाय रूप ही हाथी है। इसी प्रकार जो लोग केवल भक्ति, मात्र ज्ञान, केवल क्रिया और सेवा-शुश्रूषा को ही धर्म मान रहे हैं, अतः वे झूठे हैं, क्योंकि एक अंग ही धर्म नहीं है। किन्तु ये चारों ही धर्म के अंग है, इन चारों का मिलना ही धर्म का पूर्ण स्वरूप है। इसलिए, चार निक्षेप, पांच समवाय और सात नय को इक्ट्ठे करके सर्व को स्वीकार करने पर और सभी अंगों का पालन करने पर ही धर्म सम्भव है, अन्यथा नहीं।

-'प्रवचन प्रभा' से संकलित

प्रश्नः-

1. अन्धों के मन में क्या जिज्ञासा जगी?
2. अन्धे को सूरदास क्यों कहा गया?
3. अन्धों में झगड़ा क्यों हुआ?
4. क्या आप समझदार व्यक्ति द्वारा किए गए समाधान से सहमत हैं?
5. चार निक्षेप और पाँच समवाय बताइये।
6. धर्म क्या है?
7. इस कहानी में जैन दर्शन का कौनसा प्रसिद्ध सिद्धान्त प्रतिपादित है?

(बाल-स्तम्भ, मार्च 2010 का परिणाम पृष्ठ सं. 70 पर देखें)

स्वास्थ्य विज्ञान

शिवाम्बु (स्वमूत्र) चिकित्सा

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

मानव शरीर अपने आप में परिपूर्ण होता है। इसमें अपने आपको स्वस्थ रखने की क्षमता होती है। आवश्यकता है अपनी क्षमताओं को पहचानने, समझने की तथा आवश्यकतानुसार उसका सही उपयोग करने की। अज्ञान अथवा अधूरा ज्ञान एवं उसके साथ एक पक्षीय ज्ञान का पूर्वाग्रह तथा अपनी-अपनी पद्धतियों पर सम्यक् चिन्तन के अभाव में उपचार का सम्यक् निर्णय नहीं होता।

रोग अनेक : दवा एक-

दुनिया में रोग मुक्त करने के लिए हजारों दवाइयाँ उपलब्ध हैं, जिनका रोगों की रोकथाम, उपचार एवं परहेज के रूप में उपयोग किया जाता है। सभी दवाओं का शरीर के अंगों पर अपना अलग-अलग प्रभाव अथवा दुष्प्रभाव पड़ता है। आँख के रोगों के निवारण हेतु दवा कान में नहीं डाली जा सकती। नाक में डालने वाली दवा मुँह में नहीं ली जा सकती। परन्तु शिवाम्बु बिना किसी दुष्प्रभाव के रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली, स्वयं के शरीर से निर्मित ऐसी दवा है, जिसका उपयोग कान, आँख, नाक, मुँह, त्वचा आदि से सम्बन्धित सभी रोगों में होता है। यह स्वस्थ अवस्था में रोगों के बचाव हेतु और रोगावस्था में उनके निवारण के लिए सभी परिस्थितियों में बेहिचक प्रयोग में लिया जा सकता है। इसी कारण शिवाम्बु का नियमित सेवन करने वाला किसी भी छूत की बीमारी से अथवा किसी संक्रामक रोग से प्रभावित नहीं होता। फिर वह रोग स्वाइन फ्लु हो या चिकनगुनियाँ, चेचक हो या अन्य कोई महामारी।

शिवाम्बु हानिकारक तत्त्व नहीं-

आज वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिवाम्बु गुर्दों द्वारा रक्त के शुद्धीकरण से प्राप्त जीवनोपयोगी जल का वह भाग है, जिसमें शरीर के लिए उपयोगी सैंकड़ों ऐसे तत्त्व होते हैं, जो रक्त में होते हैं परन्तु जिनका शरीर तत्काल उपयोग नहीं कर पाता और उनको संचय करने तथा रखने के लिए शरीर

में अलग व्यवस्था नहीं होने से उसको विसर्जित करना पड़ता है। ऐसे उपयोगी तत्त्व जो आवश्यकता से ज्यादा होते हैं, शिवाम्बु के माध्यम से शरीर के बाहर चले जाते हैं।

शिवाम्बु गंदा, खराब, विषैला, हानिकारक, विजातीय तत्त्व नहीं है, अपितु स्वास्थ्यवर्द्धक, जीवनोपयोगी, शरीर द्वारा निर्मित रासायनिक प्रयोगों द्वारा बना जल है। शिवाम्बु में सैकड़ों उपयोगी खनिज, रसायन, हारमोन्स, एन्जाइम्स, विटामिन एवं पोषक तत्त्व होते हैं जो विष नाशक एवं पीड़ा शामक होने के साथ शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाले होते हैं।

दवाओं के उत्पादन में शिवाम्बु का प्रयोग–

विश्व के आधुनिक दवा निर्माताओं ने शिवाम्बु से प्राप्त जीवनोपयोगी आवश्यक तत्त्वों तथा अन्य भौतिक तत्त्वों के योग से कैन्सर, एड्स, टी.बी., हृदय रोग, दमा, नपुंसकता, गुर्दा आदि के असाध्य रोगों के उपचार हेतु बहुमूल्य प्राणदायिनी दवाइयों और इंजेक्शनों का व्यापक पैमाने पर निर्माण प्रारम्भ कर दिया है। हृदय रोगियों को दिया जाने वाला **Urokine,** जो महिलाएँ गर्भवती नहीं होती, उनके लिए दी जाने वाली **Profasi** तथा अन्य असाध्य रोगों के लिए उपयोगी **Serocruption, Bromocirptione, Meprate, Ukidon, Pergonal(11mg) Metrodin HP, Urofollitrophin (FHS)** आदि अनेक दवाइयों के निर्माण में शिवाम्बु का प्रयोग होता है।

सौन्दर्य प्रसाधनों में शिवाम्बु का प्रयोग–

शिवाम्बु सर्वोत्तम एन्टीबायोटिक, शेविंग क्रीम, दाढ़ी बनाने के बाद प्रयोग में लिया जाने वाला लोशन, बालों को मुलायम बनाने वाला शैम्पू एवं दांतों को साफ करने वाला दंत-मंजन है। इसी कारण विदेशों में सौन्दर्य प्रसाधनों तथा दंत मंजनों में शिवाम्बु का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है। आज सौंदर्य प्रसाधन के नाम पर जीवों पर जो निर्दयता, क्रूरता एवं हिंसा हो रही है, उसका शिवाम्बु सस्ता, सुन्दर, प्रभावशाली एवं दुष्प्रभावों से रहित अहिंसक विकल्प है।

शिवाम्बु से रोग निदान–

स्वादहीन, सुगंधहीन, प्रातःकालीन प्रथम विसर्जित होने वाला शिवाम्बु अच्छे पाचन एवं स्वास्थ्य का प्रतीक होता है। शिवाम्बु चिकित्सा में रोग के

निदान की भी आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि शरीर में रोगों की आवश्यकतानुसार ही इसका निर्माण होता है। इसी कारण रोगी को जहाँ तक हो, अपने शिवाम्बु का ही सेवन करना चाहिये, भले ही मधुमेह के कारण मूत्र में शूगर अथवा कैंसर आदि रोगों के कारण उसमें पस अथवा बदबू भी क्यों नहीं आती हो।

शिवाम्बु का स्वभाव पर प्रभाव-

शिवाम्बु में विभिन्न प्रकार के हारमोन्स होने से इसके सेवन से शारीरिक एवं मानसिक विकार दूर होने से मानव का स्वभाव बदलता है। व्यक्ति होशियार व मेधावी बनता है। स्मरण शक्ति तेज होती है। बुद्धि विकसित होती है। तनाव घटता है। निर्भयता एवं साहस विकसित होता है। चेहरे का तेज, वाणी में जोश, इन्द्रियों की क्षमता बढ़ती है व मनोबल दृढ़ होता है। जीवन में उत्साह बना रहता है। मन में शांति बढ़ती है। मांसाहारी को शाकाहारी बनने तथा दुर्व्यसनी को निर्व्यसनी बनने की स्वतः प्रेरणा मिलने लगती है और व्यक्ति सद्गुणों की तरफ प्रेरित होने लगता है। शिवाम्बु पान करने वालों के दुर्व्यसन आसानी से छूटने लगते हैं।

शिवाम्बु के प्रयोग की विधियाँ-

शिवाम्बु का प्रयोग अलग-अलग रोगों में अथवा रोगों की रोकथाम हेतु अलग-अलग ढंग से किया जाता है। पीने के लिये प्रातःकालीन प्रथम शिवाम्बु सर्वश्रेष्ठ होता है। रात्रिकालीन निद्रा में व्यक्ति अपने मानवीय स्वभाव में ही होता है। कोई व्यक्ति कितना भी क्रूर, हिंसक, क्रोधी, निर्दय एवं अशान्त क्यों न हो, निद्रा में तो वह शांत और तनाव मुक्त ही होता है। अतः उस समय शरीर में जो हारमोन्स के निर्माण होते हैं, वे विशेष स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। अतः प्रातःकालीन शिवाम्बु अधिक लाभदायक होता है। परन्तु जो शान्त, तनाव-मुक्त, सामायिक-स्वाध्याय द्वारा समभाव की साधना करने वाले, ध्यान अथवा भक्ति में सदैव लीन रहते हैं, वे कभी भी अपने शिवाम्बु का प्रयोग कर सकते हैं।

शिवाम्बु औषधि ही नहीं रसायन है। उपवास के साथ शिवाम्बु का सेवन करने से विशेष लाभ होता है। शिवाम्बु पीने के बाद कम से कम एक घंटे तक कुछ भी खाना-पीना नहीं चाहिये। आँखों में, कान में, मुँह में, एनिमा आदि के

रूप में ताजा शिवाम्बु को ही उपयोग में लेना चाहिये, परन्तु त्वचा सम्बन्धी रोगों में जितना पुराना शिवाम्बु होता है उतना अधिक प्रभावशाली होता है। असाध्य रोगों में शिवाम्बु पीना, शिवाम्बु का एनिमा लेना, रोगग्रस्त निष्क्रिय भाग पर शिवाम्बु का लगाना अथवा मसाज करना, बवासीर वाले भाग को शिवाम्बु से गीला रखना लाभदायक होता है।

शिवाम्बु कब और कितना सेवन करें?

शिवाम्बु गर्म प्रकृति का होने से शिवाम्बु पान की एक जैसी विधि का प्रयोग न्याय संगत नहीं हो सकता है। सर्दी के मौसम में अथवा कफ प्रकृति वाले उसका

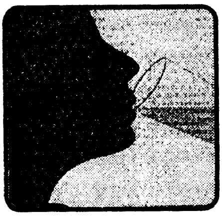

अधिकाधिक प्रयोग कर सकते हैं। वर्षा के मौसम में शिवाम्बु की मात्रा सर्दी की अपेक्षा थोड़ी कम प्रयोग करनी चाहिए। गर्मी के मौसम में तथा पित्त प्रकृति वालों को शिवाम्बु का पान अपेक्षाकृत कम करना चाहिए।

जो व्यक्ति दुर्व्यसनों से ग्रसित हैं, अथवा किसी प्रकार की दवा ले रहे हैं अथवा जिनका खान-पान तामसिक है, उनको शिवाम्बु का अधिक सेवन करना चाहिए, ताकि थोड़े समय में उनके दुर्व्यसन छूट सकें। इसी प्रकार जिनके शरीर में मोटापा अथवा चर्बी ज्यादा है, उन्हें शिवाम्बु का सेवन अधिक मात्रा में करना चाहिये तथा जो दुबले पतले हैं, उन्हें शिवाम्बु का सीमित मात्रा में ही सेवन करना चाहिये।

विविध चिकित्साओं के साथ शिवाम्बु का प्रयोग-

हथेली और पगथली में शिवाम्बु का मर्दन करने से वहाँ जमे विकार अपना स्थान छोड़ने लगते हैं। अतः उसके पश्चात् किया गया एक्यूप्रेशर उपचार, अधिक प्रभावशाली हो जाता है। चुम्बक से शिवाम्बु में चुम्बकीय गुण, रंगीन बोतलों में धूप में रखने से अथवा अन्य विधि द्वारा रंगों की प्रकाश किरणें डालने से रंगों के गुण, पिरामिड पर रखने से पिरामिड ऊर्जा के संचय आदि के द्वारा, उसकी प्रभावशीलता बढायी जा सकती है, तथा एक साथ अनेक चिकित्सा पद्धतियों का लाभ लिया जा सकता है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

website: chordiahealthzone.com

कविता

उदारता

डॉ. रमेश "मंयक"

उदारता लाती है
दृष्टि में व्यापकता
विचारों में विशालता
और आचरण में
सर्वहित चिन्तन की गहनता।

उदारमना व्यक्ति करता है
व्यक्तिगत स्वार्थों का त्याग
बनता है सहयोगी
पर-हित साधन में
क्षण भर के लिए भी
नहीं लाता स्वहित मन में।

उदारता से विकसित होती
समाज में प्रतिष्ठा
मानव मात्र के प्रति निष्ठा
और व्यवहार में शिष्टता।

उदारता
प्रज्ञा को बढ़ाती है
ज्ञान कोश को समृद्ध बनाती है
मृदु वाणी जीवन में
चार चाँद लगाती है
सभी के विचारों को करती आत्मसात्
जन-कल्याण की बाँटती सौगात

-बी-8, मीरा नगर, चितौड़गढ़ (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (5)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह पंचम किश्त है। प्रतियोगी को अपने उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जून 2010 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 231 से 290 तक से प्रश्न)

(अ) मुझे पहचानो-

1. इन्द्राणियों ने मेरी परीक्षा ली, पर मैं विचलित नहीं हुआ।
2. मैंने अपनी श्रद्धा का, सम्यक्त्व धर्म का लेशमात्र भी त्याग नहीं किया।
3. मैंने गर्भ में ही महामारी रोग को शान्त किया।
4. हमने मिथिला पर आक्रमण किया।
5. मैंने अनेक स्थानों पर भोजनशालाएँ खुलवाई।

(आ) किसने किससे कहा?

6. इसने पूर्वजन्म में आयंबिल-वर्द्धमान तप किया था।
7. संसार में आत्मा, परलोक, पुण्य-पाप आदि कुछ नहीं हैं।
8. आप प्रव्रजित हो रही हैं तो हमारा सहायक कौन होगा?
9. आप लोग अपनी नाक ढांप कर क्यों बैठ गये हो?

10. मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि तुम सम्यक्त्व का पालन करो।

(इ) अंकों में उत्तर दीजिये-

11. अर्हत् मल्ली के साथ..........राजकुमारियों ने भी दीक्षा ली।

12. बारह चक्रवर्तियों में से ....चक्रवर्ती मोक्ष में गये।

13. ....वर्ष के बाद आयुधशाला में चक्ररत्न उत्पन्न हुआ।

14. अरनाथ जी के.......गणधर हुए।

15. सातों महामुनियों ने........वर्ष तक श्रमण पर्याय का पालन किया।

(ई) एक शब्द में उत्तर दीजिए-

16. किस मुनि ने स्त्रीवेद का बन्ध किया?

17. प्रभावती के दोहद को किसने पूर्ण किया?

18. काशी नरेश शंख के पास किसने मल्लीकुमारी की प्रशंसा की?

19. भगवान् मल्लीनाथ का छद्मस्थ काल कितना था?

20. भगवान् मल्लीनाथ जी की पालकी का क्या नाम था?

(उ) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

21. राजन्!......आपके सुन्दर शरीर में कीड़े उत्पन्न हो गये हैं।

22. भद्रा ने.........पुत्ररत्न को जन्म दिया।

23. कुंथुनाथ जी बाईस हजार वर्ष तक.........राजा के पद पर रहे।

24. महाराज कुम्भ ने........को बुलाया और उन्हें कुण्डल पहना दिये।

25. तत्काल देवों द्वारा..........उद्यान में समवसरण की रचना की गई।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (3) का परिणाम

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती रितू जी गिड़िया-सिंकदराबाद

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती विद्या जी सिंघवी-बदनावर(म.प्र.)

तृतीय पुरस्कार-श्रीमती कमला जी सिंघवी-भड़गांव (महा.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. श्रीमती निर्मला राजेन्द्र जी बोरा-इचलकरंजी (महा.)
2. श्रीमती निशा जी जैन-अलीगढ़ (राज.)
3. श्रीमती वसंता राजेश जी गुगलिया-हैदराबाद (आ.प्र.)
4. श्रीमती पुष्पा हस्तीमल जी गोलेछा-ब्यावर (राज.)
5. श्री चिन्मय जी जैन-दुर्ग (छतीसगढ़)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

बंध-तत्व- श्री कन्हैयालाल लोढ़ा, ***प्रकाशक***- प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान) फोन : 0141-2524827, ***पृष्ठ***-78+236, ***मूल्य***-150 रुपये, ***संस्करण***- 2010

नव तत्त्वों में प्रत्येक तत्त्व पर श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा की स्वतन्त्र पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। उसी क्रम में बन्ध तत्त्व पर यह महत्त्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई है, जिसमें अष्टविध कर्मों एवं उनकी उत्तर प्रकृतियों का नूतन दृष्टि से विवचेन हुआ है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, नाम, गोत्र एवं अन्तराय कर्म के सम्बन्ध में कृत विवेचन विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करता है तथा कुछ तार्किक गुत्थियों का समाधान प्रस्तुत करता है। लोढ़ा साहब स्वतन्त्र मौलिक चिन्तक है, अतः उनकी कृति को उसी दृष्टि से देखा जाना चाहिए। पुस्तक की भूमिका प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सागरमल जैन द्वारा लिखित है तथा सम्पादन डॉ. धर्मचन्द जैन ने किया है।

उजाले के अंकुर- श्री प्रमोद भण्डारी 'पार्थ', ***प्रकाशक***- सोहन बाबू प्रकाशन, गणेश घाटी, देवगढ़, जिला-राजसमन्द-313331 (राज.) ***पृष्ठ***-16+148, ***मूल्य*** 120 रुपये, ***संस्करण*** - 2009

यह आधुनिक कविता संग्रह है, जिसमें कवि ने प्राकृतिक सौन्दर्य, पुरुषार्थ, संकल्प, संघर्ष, प्रेम, रिश्ते, परिवार, अच्छे लोग, देशभक्ति, विडम्बना, नश्वरता, अकर्मण्यता आदि विविध विषयों पर प्रभावी अभिव्यक्ति की है। पुरुषार्थ की प्रेरणा करते हुए कवि लिखता है-

आओ आलोक की पालकी को
कंधा दें
चलो, दिवस को
पुरुषार्थ का पर्याय सिद्ध करें
जब चारों ओर उजाला है
तब अंधेरों को
क्यों कर मन में जगह बनाने दें?

इस कविता संग्रह में कुल 62 कविताएँ इसी प्रकार भावपूर्ण एवं सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण हैं।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युग प्रवर्तक, युगमनीषी, आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्मशताब्दी वर्ष 2011 को उत्कृष्ट रूप से मनाने के लिए अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा पंचवर्षीय मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई गई। इस योजना में मेधावी छात्रों को लाभान्वित कर उनका व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन करने का लक्ष्य है। इस योजना के माध्यम से गत चार वर्षों से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। छात्र चयन समिति द्वारा आवेदन-पत्र मंगवा सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है-

नियमावली

1. आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।
2. आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।
3. आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।
4. आमंत्रित विधार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा।
5. छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार हैं -

Class	Up to 10th	Class 11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

6. चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेगें। इससे कम अंक वालो को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।
7. सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट-लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकुलतानुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता-आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-B.Budhmal Bohra, No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79, Ph & Fax No.- 044-42728476, Email-guruhasti_scholarship@yahoo.com

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है एवं आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Xerox) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन पत्र Download कर सकते हैं।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 मई, 2010)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9	: 24 मार्च से 14 अप्रेल तक गढ सिवाना बिराजे। यहाँ से 15 अप्रेल को विहार कर खाखरलाई, कुपावास होते हुए 17 अप्रेल को कनाना पधारे। 20 अप्रेल को विहार कर जानियाना, राघवदास की बगीची होते हुए 22 अप्रेल को बालोतरा में मंगलमय पदार्पण हुआ है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6	: गढ सिवाना से 12 अप्रेल को विहार कर कुशीप, थापन, आसोतरा होते हुए 16 अप्रेल को बालोतरा पधारे हैं।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 10	: सामायिक-स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक, जोधपुर में विराजमान हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: वैशाली नगर, अजमेर से 3 अप्रेल को विहार कर लाखन कोटड़ी आदर्श नगर, माखुपुरा होते हुए 28 अप्रेल को हटुण्डी पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8	: उमरी से विहार कर वारासिवनी, वारा, कायदी, दरा होते हुए 30 अप्रेल को खापेवाड़ा पदार्पण हुआ है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8	: सूरत से विहार कर बरासा, धोरण-पारडी, चौकड़ी, कोसम्बा होते हुए बड़ौदा की ओर विहार चल रहा है।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	: नदबई से 2 अप्रेल को विहार कर पहरसर, बारनी, सेवर होते हुए 8 अप्रेल

		को भरतपुर पदार्पण हुआ है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6	:	सिवाना से विहार कर 22 अप्रेल को बालोतरा पधारे हैं।
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	गढ़सिवाना से विहार कर 11 अप्रेल को बालोतरा पधारे हैं।
सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	गढ़सिवाना से विहार कर 22 अप्रेल को बालोतरा पधारे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	बैंगलोर के विभिन्न उपनगरों में विचरण चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	गढ़ सिवाना से विहार कर 9 अप्रेल को बालोतरा पधारे हैं।
महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	:	जोधपुरशहर से सालावास, सातला होते हुए 27 अप्रेल को दूधिया पधारे हैं।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	अमरावती में सुखशांतिपूर्वक विराजमान हैं।

आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के पावन-सान्निध्य में गढ़ सिवाना एवं फिर बालोतरा में धर्म-साधना की लहर

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 15 के पावन सान्निध्य में सिवांची पट्टी के गढ़ सिवाना में तथा अब बालोतरा में धर्म की गंगा बह रही है।

महावीर जयन्ती के पश्चात् भी गढ़ सिवाना में संतों एवं महासतीवृन्द की उपस्थिति से तथा श्रावक-श्राविकाओं के धर्म-साधना हेतु आगमन से सिवाना मानो धर्मनगरी बन गया। यहाँ पर विभिन्न नगरों एवं ग्रामों के श्रावकों एवं संघों का आगमन हुआ। 1 अप्रेल को विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. के चातुर्मास की विनति लेकर मुकटी संघ उपस्थित हुआ। गुरुभक्त श्री केवलमल जी लोढ़ा जयपुर से सपरिवार दर्शनार्थ पधारे। बैंगलोर से श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल सदार पधारे, वे निरन्तर सात वर्षों से वर्षीतप कर रहे हैं तथा आगमी वर्ष

की आराधना हेतु उन्होंने व्रत-नियम स्वीकार किया। 4 अप्रेल को आगोलाई एवं गोटन से उग्र विहार कर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9 सिवाना पधारे। इसी दिन वापी संघ भी चातुर्मास की विनति लेकर प्रस्तुत हुआ। श्री प्रकाशचन्द जी गोलेछा, बैंगलोर ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। 8 अप्रेल को संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा एवं आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति के सह संयोज़क श्री अशोक जी कवाड़ दीक्षा प्रसंग से उपस्थित हुए।

व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा सिवाना से विहार कर 9 अप्रेल को बालोतरा पधार गयी थी। यहाँ उन्होंने प्रवचन सभा में जो प्रेरणा की उसके फलस्वरूप प्रतिदिन उपवास, बेला और तेला तप की लड़ी नियमित रूप से चल रही है, जो संतों के विराजने तक निरन्तर चलती रहेगी। सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा. आदि ठाणा विहार कर 13 अप्रेल को बालोतरा पधारे। उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा ने 12 अप्रेल को सिवाना से विहार किया तथा 16 अप्रेल को बालोतरा पधार गये। पूज्य आचार्यप्रवर ने 15 अप्रेल को सिवाना से विहार किया एवं मार्गवर्ती ग्रामों को फरसते हुए 22 अप्रेल को बालोतरा में मंगल-प्रवेश किया। बालोतरा प्रवेश का वह दिन चिरस्मरणीय बन गया। बालोतरा में संघनायक का पदार्पण 18 वर्ष पश्चात् हुआ। प्रवेश का दृश्य अद्‌भुत था। संत-सतियों एवं श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में शालीन प्रवेश का यह नजारा सबको प्रभावित कर रहा था। राघवदास जी की बगीची से मंगल विहार किया एवं बालोतरा की चिरप्रतिक्षित धरा आपके श्रीचरणों से सुशोभित हुई। मार्ग में बालोतरावासी विहार का लाभ लेने के दृष्टिकोण से एक-एक कर एवं समूह में सम्मिलित होते रहे। जयघोष से गगनमण्डल गुंजायमान हो गया। स्थानक भवन पधारते-पधारते सैंकड़ों भाई-बहिनों की संख्या गलियों एवं सड़कों में सुदूर तक दृष्टिगत हो रही थीं।

22 अप्रेल को नित्य की भाँति 9 बजे मंगल-प्रवचन प्रारम्भ हुए। सर्वप्रथम तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने लक्ष्य के प्रति दृढ़ता से चरण बढ़ाने हेतु आह्वान किया। प्रवचन सभा में आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर के पधारने के पश्चात् भावुक श्रद्धाशील भक्तों ने अपनी भावाभिव्यक्ति श्रद्धा सहित प्रस्तुत की। बालोतरा संघ के उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी बांठिया ने ओजपूर्ण

शब्दों में बालोतरा शहर पर, यहाँ के भक्तों पर निरन्तर किए जा रहे उपकारों के प्रति आभार प्रकट किया। श्रीमती कौशल्या जी सालेचा ने काव्य पंक्तियों के माध्यम से अपनी भावना रखी। युवा कार्यकर्ता श्री कमलेश जी चौपड़ा ने भजन के माध्यम से बालोतरा नगरी के गौरवपूर्ण इतिहास से परिचय कराते हुए हस्ती पट्टधर गणि हीरा का भावभरा स्वागत किया। साध्वीमण्डल की ओर से व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. ने अपनी प्रतिभा से रचित काव्यमय रचना के माध्यम से आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं समस्त संत-रत्नों, गुरुणी जी एवं सभी संघाटकों के प्रमुखों का प्रभावी गुणानुवाद एवं अभिनन्दन किया। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने 18 वर्ष पूर्व के चातुर्मास का उल्लेख करते हुए कहा कि आज का परिदृश्य देखकर सावन-भादवा याद आ गया है। पूज्य आचार्यप्रवर ने मार्मिक शब्दों में भक्तों की भावना का समादर करते हुए फरमाया कि मानव का कर्त्तव्य क्या होता है, इसे समझने की आवश्यकता है। जो करणीय है उसे नहीं किया जा रहा है तथा जो अकरणीय है उसे किया जा रहा है। हमें अकरणीय का अवलम्बन लेने की भावना का परित्याग कर करणीय का आचरण कर मानव कहलाने का अधिकारी बनना चाहिए। आचार्यश्री ने इस प्रवनच सभा में साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. का घोड़ों का चौक, जोधपुर एवं विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. का चातुर्मास गांधीनगर (गुजरात) के लिए स्वीकृत किया। आचार्य भगवन्त के पुण्यातिशय एवं प्रभावी प्रेरणा से आजीवन शीलव्रत के खंद हो रहे हैं। यहाँ के श्रावक-श्राविकाओं की भावना श्रेष्ठ है। प्रातःकाल दर्शन-वन्दन हेतु आने वालों का क्रम बना रहता है। अधिकतर भाई-बहन प्रातःकाल दर्शन लाभ लेने के पश्चात् ही अन्य प्रवृत्ति करने की भावना रखते हैं। आचार्य भगवन्त प्रायः प्रतिदिन प्रवचनामृत से लाभान्वित कर रहे हैं। पूज्य श्री द्वारा समता एवं सहनशीलता पर लम्बे समय से प्रवचन फरमाये जा रहे हैं। दया-संवर के प्रत्याख्यान प्रायः प्रतिदिन हो रहे हैं।

सिवांची एवं मालाणी क्षेत्र के हृदयस्थल बालोतरा शहर का नया स्थानक धर्माराधना का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है। आचार्य भगवन्त एवं उपाध्यायप्रवर के पावन सान्निध्य में चतुर्विध संघ धर्म-ध्यान का लाभ उठा रहा हैं। यहाँ हर बालक, युवा और वृद्ध प्रमुदित एवं उत्साहित नज़र आ रहा है तथा

संत-सेवा एवं संघ-सेवा में संघ-सदस्य अहर्निश तत्पर हैं। प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्र-वाचना (दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र), धर्मतत्त्व-चर्चा आदि निराबाध रूप से अनवरत जारी हैं। ज्ञानाराधना, व्रताराधना, तपाराधना का पावन-प्रसंग बना हुआ है। तेले की लड़ी के अतिरिक्त दस, आठ तथा पाँच की तपस्याएँ भी हुई हैं।

दर्शन-वन्दन हेतु पाली, जोधपुर, पीपाड़, ब्यावर, आगोलाई, पचपदरा, सोजत, गोटन आदि ग्राम-नगरों से प्रायः पधारना लगा रहता है। चेन्नई वालों की प्रायः हरदिन उपस्थिति रही है। जागीरदार परिवार स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का लाभ पदार्पण के दिन से ही प्रफुल्लित भाव से ले रहा है।

दो चातुर्मासों की घोषणा

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने 22 अप्रेल 2010 को बालोतरा में साधु मर्यादा के आगारों के साथ निम्नांकित चातुर्मासों की घोषणा की है-

1. **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा** — **घोड़ों का चौक (जोधपुर)**
2. **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा** — **गांधीनगर (गुजरात)**

अध्यात्म चेतना वर्ष में इस माह ग्यारह दीक्षाओं का सुयोग

श्री जैन रत्न संघ में यह प्रथम अवसर है जब एक माह के दो दिनों में 11 दीक्षाएँ सम्पन्न हो रही हैं। अध्यात्म-चेतना वर्ष की यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। मुमुक्षु बहनों की दीक्षा निम्नानुसार सम्पन्न होगी।

(1) बालोतरा (राज.) में सम्पन्न होने वाली दीक्षाएँ

मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिका जैन

मुमुक्षु बहिन सुश्री कोमल कोठारी

मुमुक्षु बहिन सुश्री समता जैन

मुमुक्षु बहिन सुश्री ट्विंकल सालेचा

मुमुक्षु बहिन सुश्री वर्षा सालेचा

उक्त पाँच दीक्षाएँ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर **पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** के मुखारविन्द से तथा परम श्रद्धेय **उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म. सा.**, प्रभृति मुनिपुंगवों की मंगलमनीषा से एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती **श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** की नेश्रायवर्तिनी तत्त्वचिन्तिका महासती **श्री रतनकंवर जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री सोहनकंवर जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री इन्दुबालाजी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री निःशल्यवती जी म. सा.**, व्याख्यात्री महासती **श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में होगी।

दीक्षा स्थल-श्री वर्द्धमान आदर्श विद्या मन्दिर, विमलनाथ कॉलोनी, बालोतरा (राज.)

सम्पर्क सूत्र-श्री डूंगरचन्दजी श्रीश्रीमाल 9251311717, श्री नेमीचन्दजी अन्याव 9413525132, श्री खीमराजजी भण्डारी 9414108811, श्री ओमप्रकाशजी बांठिया 9461522309, श्री छगनलालजी वैदमुथा 9460541805, श्री धर्मेशजी चौपड़ा 9414108191

(2) भरतपुर (राज.) में सम्पन्न होने वाली दीक्षा

मुमुक्षु बहिन सुश्री विजयश्री (एलिजा) जैन

यहाँ पर विदुषी महासती **श्री सौभाग्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा का सान्निध्य प्राप्त होगा।

दीक्षा स्थल-राजेन्द्र सूरि जैन कीर्ति मन्दिर, सेवर रोड, भरतपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-श्री सुभाषचन्द जी जैन, 9828502515, श्री विरेन्द्र जी जैन, 9414023392

(3) बैंगलोर (कर्नाटक) में सम्पन्न होने वाली दीक्षाएँ

मुमुक्षु बहिन श्रीमती मंजू जी डागा

मुमुक्षु सुश्री शिल्पा जी श्रीश्रीमाल

मुमुक्षु बहिन सुश्री प्रीति जी कानुंगा

मुमुक्षु सुश्री शिल्पा जी बागरेचा

यहाँ पर व्याख्यात्री महासती **श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि ठाणा का सान्निध्य प्राप्त होगा। **बैंगलोर में 15 मई को ही कुछ और दीक्षाएँ होना सम्भावित है।**

दीक्षा स्थल-मराठा हॉस्टल, गुलटेम्पल रोड, बैंगलोर (कर्नाटक)

सम्पर्क सूत्र-श्री यशवन्त जी सांखला, 09845019669, श्री रमेश जी गुन्देचा, 09845499907

23 मई को चांगोटोला (म.प्र.) में सम्पन्न होने वाली दीक्षा

मुमुक्षु मंगला बहिन

यहाँ पर व्याख्यात्री महासती **श्री तेजकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा का सान्निध्य प्राप्त होगा।

दीक्षा स्थल-जैन स्थानक भवन, पो. चांगोटोला, जिला-बालाघाट (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र-श्री विनोद जी बोथरा, 09425138532, श्री निलेश जी चोरडिया, 09407314581

चांगोटोला पहुँचने का मार्ग-बालाघाट-जबलपुर नेरोगेज रेलमार्ग के मध्य चांगोटोला पैसेंजर हाल्ट रेलवे स्टेशन है। यहाँ पर प्रतिदिन 10 पैसेंजर ट्रेनों का ठहराव है। सतपुड़ा एक्सप्रेस एवं देर रात्रि की 2 ट्रेनें यहाँ से ढ़ाई कि.मी. दूरस्थ नगरवाड़ा रेलवे स्टेशन पर रुकती है। जयपुर से जबलपुर सीधी ट्रेन है। मुम्बई-हावड़ा रेलमार्ग पर गोन्दीया स्टेशन उतर कर वहाँ से 40 कि.मी. बालाघाट है जहाँ से चांगोटोला सड़क एवं रेलमार्ग दोनों से पहुँचा जा सकता है।

अनुरोध

आपसे विनम्र अनुरोध है कि दीक्षा महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पण के साथ जैन भागवती दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

मुमुक्षु बहिनों का अनेक संघों द्वारा अभिनन्दन

बालोतरा, भरतपुर एवं बैंगलोर में 15 मई को तथा चांगोटोला में 23 मई को प्रव्रज्या अंगीकार करने वाली मुमुक्षु बहिनों का देश के विभिन्न राज्यों एवं ग्रामों के संघों द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया। मुमुक्षु बहिनें जहाँ भी गई वहाँ उन्होंने अपने वैराग्यपरक भावों की अभिव्यक्ति की। संत-सतियों के दर्शन किए एवं उनसे आशीर्वाद लिया। श्रावक-श्राविकाओं ने उनके भावों का अनुमोदन किया तथा प्रतीकात्मक अभिनन्दन किया। गढ़ सिवाना, जोधपुर, जयपुर, सूरत, मुम्बई, जलगाँव, नागपुर, बैंगलोर, चेन्नई, सेलम, ईरोड, पाण्डिचेरी, भरतपुर, अजमेर, सवाईमाधोपुर, बागबहरा आदि ग्राम-नगरों में मुमुक्षु बहिनों का

अभिनन्दन किया गया। अनेक शहरों में मुमुक्षु बहिनों के वरघोड़े आयोजित हुए। इन दीक्षाओं के प्रति उत्साह एवं उमंग का माहौल सर्वत्र देखा जा रहा है।

अक्षयतृतीया के तपाराधकों के लिए आवश्यक सूचना

तप एवं दान के विशिष्ट पर्व अक्षयतृतीया पर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. बालोतरा विराजेंगे। वर्षीतप के आराधकों से निवेदन है कि अध्यात्म-चेतना वर्ष के अन्तर्गत अक्षयतृतीया 16 मई 2010 को उपस्थित हो रही है। अक्षय तृतीया पर पधारने वाले एवं प्रत्याख्यान अंगीकार करने वाले सभी तपाराधक बालोतरा संघ के पदाधिकारियों अथवा संघ कार्यालय, जोधपुर को पूर्व सूचना देकर अनुगृहीत करें। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री, 9314710985*

पोरवाल एवं महाराष्ट्र क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-यात्रा सम्पन्न

पोरवाल क्षेत्र- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 15 से 20 मार्च 2010 तक पोरवाल क्षेत्र सवाईमाधोपुर के महावीर नगर, आलनपुर, आवासन मण्डल, बजरिया, सवाईमाधोपुर शहर, फलोदी क्वारी, कुश्तला, पचाला, चौरू, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़, उनियारा, बाबई, इन्द्रगढ़, सुमेरगंजमण्डी, जरखोदा, देई, नैनवा, दूणी, देवली, रामपुरा कोटा, केशवपुरा कोटा, महावीर नगर कोटा, विज्ञान नगर कोटा आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रचार कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ की मार्गदर्शक श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया के परामर्शदाता श्री लल्लूलाल जी जैन-आवासन मण्डल, संयोजक श्री हरकचन्द जी जैन-बजरिया की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी

संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्रों की स्थापना की गई, आगामी परीक्षा 1 अगस्त 2010 हेतु 78 आवेदन पत्र भरवाये गये, 35 नये स्वाध्यायी बनाये गये, पुराने स्वाध्यायियों की इस वर्ष सेवा देने हेतु स्वीकृति प्राप्त की गई एवं बोर्ड के पूर्व संचालित केन्द्रों की समीक्षा की गई। पर्युषण में स्वाध्यायी भेजने हेतु 14 क्षेत्रों की मांगे प्राप्त हुईं। परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष को 'अध्यात्म-चेतना वर्ष' के रूप में मनाने की जानकारी देने के साथ ही सभी क्षेत्रों में अधिक से अधिक व्रत-नियम ग्रहण करने की भी प्रेरणा की गई। आचार्य भगवन्त के जीवन ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आयोजित द्वितीय खुली किताब प्रतियोगिता की जानकारी दी गई तथा प्रश्नपुस्तिका एवं ग्रन्थ वितरित किए गए। जिनवाणी एवं स्वाध्यायशिक्षा के सदस्य भी बनाये गये। सभी स्थानों पर स्थानक में सामूहिक प्रार्थना एवं स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा की गई।

महाराष्ट्र क्षेत्र- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ-जोधपुर, महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ-जलगांव तथा अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड-जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 14 से 19 अप्रेल 2010 तक दो ग्रुपों में महाराष्ट्र के धरणगांव, लासुर, चिंचाला, होलनांथा, शिरपुर, नरडाणा, बेटावद, मांडल, अमलनेर, पारोला, मुकटी, फागणा, बोरकुंड, धुलिया, कासारे, ताहराबाद, सौंदाणा, उमराणा, चांदवड़, नांदगांव, नागद, कजगांव, भड़गांव, पहुर, लोणरी, शेन्दुर्णी, भराड़ी, सिल्लोड़, भोकरदन, जालना, देवलगांव मही, चिखली, बुलढाणा, मोताला, नांदुरा, मलकापुर, मुक्ताई नगर, इच्छापुर, बोदवड़, फत्तेपुर, वाकड़ी, तोंडापुर, वाकोद आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रचार कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ की मार्गदर्शक श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर, सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश मेहता, महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री हीरालाल जी मण्डलेचा की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई। साथ ही महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के अध्यक्ष श्री दलीचन्द जी चोरडिया, उपाध्यक्ष श्री कस्तुरचन्द जी बाफना, श्रीमती विजया जी मल्हारा, संयोजक श्री प्रकाशचन्द जी जैन, वरिष्ठ सुश्रावक श्री बंशीलाल जी बोथरा, श्री पारसमल जी

कांकरिया, श्री राजेन्द्र जी मल्हारा, कार्यकारिणी सदस्य श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल, श्री माणकचन्द जी गादिया, युवक परिषद् जलगांव के अध्यक्ष श्री महावीर जी बोथरा तथा आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री मनोज जी संचेती-जलगांव की भी अल्पकालीन सेवाएँ प्रचार-कार्यक्रम के दौरान प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, बच्चों हेतु संस्कार केन्द्र प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। प्रचार-प्रसार के दौरान 17 नये स्वाध्यायी बनाए गए। पर्युषण हेतु 16 मांगें भी प्राप्त हुईं। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्र खोले गये, पुराने केन्द्रों को पुनः प्रारम्भ किया गया तथा आगामी परीक्षा हेतु 132 आवेदन पत्र भरवाए गए। परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष को 'अध्यात्म-चेतना वर्ष' के रूप में मनाने की जानकारी देने के साथ ही सभी क्षेत्रों में अधिक से अधिक व्रत-नियम ग्रहण करने की भी प्रेरणा की गई। आचार्य भगवन्त के जीवन ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आयोजित द्वितीय खुली किताब प्रतियोगिता की जानकारी दी गई तथा प्रश्नपुस्तिका एवं ग्रन्थ वितरित किए गए। जिनवाणी एवं स्वाध्याय शिक्षा पत्रिका के सदस्य भी बनाए गए। सभी स्थानों पर स्थानक में सामूहिक प्रार्थना, सामायिक एवं स्वाध्याय, शाकाहार तथा सदाचारी जीवन जीने की प्रभावी प्रेरणा से सब प्रमुदित थे। प्रचार कार्यक्रम के दौरान विभिन्न स्थानों पर अन्य सम्प्रदाय के सन्त-सती-मण्डलों के दर्शन-वन्दन-प्रवचन श्रवण का लाभ भी प्राप्त हुआ। *-नवरतन डागा, संयोजक*

आचार्य हस्ती शताब्दी करुणा रत्न अवार्ड से सात व्यक्तित्व सम्मानित

चेन्नई- आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अनेकविध कार्यक्रम सम्पूर्ण देश में आयोजित हो रहे हैं। उनमें एक विशिष्ट कार्यक्रम चेन्नई में सम्पन्न हुआ। यहाँ आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी समिति तथा करुणा इण्टरनेशनल के संयुक्त तत्त्वावधान में 5 अप्रेल 2010 को आलवार पेट स्थित म्यूजिक अकादमी में आयोजित समारोह में वैज्ञानिक एवं सांसद पद्मविभूषण डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन के कर कमलों से करुणा एवं अहिंसा के क्षेत्र में कार्य करने वाले अग्रांकित व्यक्तियों को एक-एक लाख रुपये की राशि एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान कर

सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री एलिप धर्माराव ने की। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न संरक्षक मण्डल के संयोजक एवं उद्योगपति श्री मोफतराज जी मुणोत इस समारोह के विशिष्ट अतिथि थे। ये **सभी पुरस्कार सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्रावकरत्न श्री पी.एस. सुराणा के द्वारा सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल एटोर्नीज की ओर से प्रदान किए गए-**

1. पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन, प्रसिद्ध पत्रकार एवं लेखक, मुम्बई।
2. श्री सुरेन्द्र एम. मेहता, प्रबंध निदेशक, अहिंसा रिसर्च फाउण्डेशन, चेन्नई एवं बेरिस्टर विपिन भाई शाह, मुम्बई ।(संयुक्त रूप से)
3. श्री वी. मुरलीधन एवं श्रीमती भुवनेश्वरी मुरलीधरन, सेवालय, चेन्नई। (संयुक्त रूप से)
4. डॉ. एस चिन्नी कृष्णा, चेयरमेन ब्लू क्रॉस एवं डॉ. श्रीमती नन्दिता कृष्णा (संयुक्त रूप से) (ये दोनों पुरस्कार ग्रहण करने हेतु उपस्थित नहीं हो सके।)

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की सदस्याओं के मंगलाचरण से हुआ। सुराणा एण्ड सुराणा एटोर्नीज के मुख्य कार्यकारी अधिकारी **डॉ. विनोद सुराणा** ने अवार्ड के उद्देश्य और महत्त्व पर प्रकाश डाला। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष **श्री पी. शिखरमल सुराणा** ने आचार्य हस्ती का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रभावशाली शब्दों में प्रस्तुत किया। (जो इसी अंक में पृथक् से अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित है) डॉ. स्वामीनाथन ने अवार्ड प्रदान करने के पश्चात् प्रदत्त अपने उद्बोधन में करुणा और शाकाहार के कार्यों को प्रेरक बताया तथा कहा कि युवाओं को ऐसे कार्यों में आगे आना चाहिए। **विशिष्ट अतिथि श्री मोफतराज जी मुणोत** ने कहा कि भगवान् महावीर की अहिंसा मात्र Non-Violence नहीं है, अपितु इसमें करुणा और मैत्री की विमल धाराएँ बहती हैं, तथा उसका विस्तार मानव तक ही सीमित नहीं, अपितु प्राणिमात्र तक व्याप्त है। **पद्मश्री डॉ. मुजफ्फर हुसैन**, मुम्बई ने अपनी विचाराभिव्यक्ति में कहा कि सरकार को राजस्व के रूप में प्राप्त आयकर का1% पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं के कल्याण के लिए खर्च करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कोई भी धर्म करुणा के बिना धर्म हो ही नहीं सकता। आने वाले कल को बेहतर बनाने के लिए अहिंसा और करुणा के अलावा कोई उपाय नहीं है। भूकम्प और प्राकृतिक

आपदाओं के लिए भी उन्होंने बढ़ती जीव हत्या और बूचड़खानों को जिम्मेदार ठहराया।

समारोह अध्यक्ष न्यायमूर्ति धर्माराव ने कहा कि अहिंसा परम धर्म है। सभी जीवों के प्रति दयाभाव और शाकाहारी जीवन शैली से उसका पूर्ण पालन संभव है। सर्वोच्च न्यायालय के कुछ न्यायिक निर्णयों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि मानवाधिकारों की तरह पशु-पक्षियों का संरक्षण भी आवश्यक है।

आरम्भ में करुणा इण्टरनेशनल के **अध्यक्ष श्री दुलीचन्द जैन** ने स्वागत भाषण दिया। रत्न संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष गौतम हुण्डीवाल, श्राविका संघ की राष्ट्रीय अध्यक्ष मधु सुराणा, डॉ. अशोक कवाड़, सुरेश कांकरिया आदि ने अतिथियों का मुक्ताहार, शॉल आदि से सम्मान किया। समारोह में करुणा अन्तरराष्ट्रीय के बीकानेर केन्द्र को प्रथम तथा चेन्नई और कुरनूल केन्द्र को द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किये गये। पुरस्कार चयन समिति के अध्यक्ष कैलाशमल दुग्गड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया। अन्त में महासचिव पदम टाटिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। ये समाचार चेन्नई के सभी समाचार-पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित हुए हैं।

जयपुर एवं जोधपुर में धार्मिक शिक्षण शिविर

जयपुर- आज के भौतिक वातावरण में बच्चों को सुसंस्कारित करने के लिए श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर द्वारा जयपुर शहर के अनेक स्थानों पर शिविर का आयोजन किया जा रहा है। सुबोध स्कूल में 16 मई से 13 जून 2010 तक शिविर आयोजित होगा। इसके अतिरिक्त अन्य आठ स्थानों मालवीयनगर, महावीर नगर, जवाहर नगर, विद्याधर नगर, श्याम नगर, नित्यानन्द नगर, तिलक नगर, लालकोठी में 23 मई से 13 जून 2010 तक शिविर आयोजित होगा। शिविर में भाग लेने हेतु सम्पर्क सूत्र हैं- ***श्री अनन्त सेठ, शाखा प्रमुख***-*9929996000,* ***श्री प्रशान्त कर्नावट, शाखा सचिव***-*9414077715*

जोधपुर-प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बालक-बालिकाओं में ज्ञानार्जन हेतु श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा जोधपुर शहर के आठ स्थानों- घोड़ों का चौक, पावटा, लक्ष्मीनगर, सिंहपोल, हाउसिंग बोर्ड, प्रतापनगर, नेहरू पार्क एवं सरस्वती नगर में शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर 18 मई से 06 जून 2010 तक आयोजित होगा। ***सम्पर्क फोन नं.*** *-0291-2624891*

निबन्ध प्रतियोगिताओं के परिणाम

1. 'मानवीय आहार-शाकाहार' निबंध प्रतियोगिता

हैदराबाद- जैनाचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में जैनाचार्य हस्ती जन्म शताब्दी समिति (आ.प्र.) एवं करुणा इन्टरनेशनल क्लब, हैदराबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित **''मानवीय आहार-शाकाहार''** निबंध प्रतियोगिता में 292 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं। परिणाम इस प्रकार है- **प्रथम**- सुश्री समता रजावत जैन, चौमहला,जिला-झालावाड़(राज.) 3000 रु., **द्वितीय**- श्री ऋषभ कुमार मुरड़िया, कानोड़, जिला-उदयपुर (राज.) 1500 रु., **तृतीय**- सुश्री शीतल चौपड़ा जैन, करवड़, जिला-झाबुआ (म.प्र.) 1000 रु., **बीस सांत्वना पुरस्कार (500 रुपये प्रत्येक)**- श्रीमती मैना बाई बोहरा, बैंगलोर (कर्नाटक), श्रीमती ऋतु कचोलिया, ब्यावर (राज.), श्री सौरभ गुन्देचा, बड़ौद (म.प्र.), सुश्री मीनाक्षी सुराणा जैन, एडवोकेट, नागौर (राज.), सुश्री अंकिता चण्डालिया, ब्यावर (राज.),श्रीमती संगीता लोढ़ा, परली बैजनाथ, बीड़ (महाराष्ट्र), सुश्री भव्या पारीक, बीकानेर (राज.), श्री ताराचन्द आहूजा, श्री विजय नगर, श्री गंगानगर (राज.), श्री पुखराज जैन, अजमेर (राज.), श्रीमती सरिता सुराणा जैन, सिकन्दराबाद (आ.प्र.), श्रीमती आशा जयकुमार चौपड़ा, बुलढ़ाणा (महा.), श्रीमती ममता नीतिनकुमार झांबा, बुलढ़ाणा (महा.), श्री पुष्पेन्द्र कुमार जैन, ललितपुर (उ.प्र.), श्रीमती नम्रता प्रीतेश लोढ़ा, पाहुर, जलगाँव (महा.), श्री पवन कुमार जैन, आवर, झालावाड़ (राज.), सुश्री हिना कोठारी, जयपुर (राज.), सुश्री सोनल बंगानी, धमतरी (छ.ग.), श्रीमती सुमन कांकरिया, राजनांदगाँव (छ.ग.), श्रीमती आरती राजेन्द्रकुमार मूथा, अमरावती (महा.),श्रीमती कमला सेठिया,मसूदा,अजमेर (राज.)

2. 'भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध' निबंध प्रतियोगिता

हैदराबाद- जैनाचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न श्राविका मंडल हैदराबाद (आ.प्र.) द्वारा आयोजित **'भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध'** विषयक निबंध प्रतियोगिता में 122 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं। परिणाम इस प्रकार हैंः- **प्रथम**- सुश्री मिनाक्षी जैन, नागपुर (महा.)-3000 रु., **द्वितीय**- सुश्री श्रद्धा विजयकुमार नाहर, मलकापुर (महा.)- 1500 रु., **तृतीय**- सुश्री डॉ. शैलेजा अरोड़ा, जयपुर (राज.), **बीस सांत्वना पुरस्कार**

(500 रुपये प्रत्येक)- सुश्री समता रजावत जैन, चौमहला, श्रीमती सीमा धींग, उदयपुर (राज.), श्री पारसमल चण्डालिया, ब्यावर (राज.), श्रीमती मैनादेवी गिड़िया, सिकन्द्राबाद (आ.प्र.), श्री ऋषभ कुमार मुरड़िया, कानोड़ (राज.), श्रीमती रजनी विकास सिंहल, धुलिया (महा.), श्रीमती कान्तादेवी छाजेड़, समदड़ी (राज.), श्रीमती बीना जैन, अलीगढ़ (उ.प्र.), श्री संदीप मेहता-बोरावड़ (राज.), श्रीमती आरती मुथा जैन, अमरावती (महा.), सुश्री रूपेन्द्र कौर, हैदराबाद (आ.प्र.), श्री अरिहन्त जैन, जयपुर (राज.), श्री (डॉ.) राजनारायण अवस्थी, हैदराबाद (आ.प्र.), श्री अनिलकुमार जैन-कोटा (राज.), श्रीमती पुष्पलता गाँधी, जोधपुर (राज.), श्रीमती रेखा नंगावत-मैसूर (कर्णाटक), श्रीमती निर्मला परमार, हैदराबाद (आ.प्र.), सुश्री प्रीति सैनी, शाहगढ़ (म.प्र.) श्रीमती शोभा रस्तोगी, खम्मम (आ.प्र.), श्री जितेन्द्र चौरड़िया, खींचन (राज.)

-श्रीपाल देशलहरा, प्रधान सचिव

जलगांव में धार्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ग्रीष्मावकाश में धार्मिक शिक्षण शिविर दिनांक 20 से 25 अप्रेल 2010 तक श्री रतनलाल सी.बाफणा गौ सेवा अनुसन्धान केन्द्र, कुसुम्बा, जलगांव में आयोजित किया गया। इस शिविर में जलगांव तथा आस-पास के लगभग 225 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविरार्थियों को पाँच कक्षाओं में विभाजित करके सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, 67 बोल, कर्मप्रकृति, समिति गुप्ति, गुणस्थान स्वरूप, तत्त्वार्थ सूत्र का दूसरा अध्याय, उत्तराध्ययन सूत्र का आठवां अध्ययन आदि के साथ सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास कैसे जगाएँ समय-प्रबन्धन आदि का विद्वान प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षकों के रूप में श्री अशोक जी कवाड़-चैन्नई, श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव, श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री हीरालाल जी मंडलेचा-जलगांव, श्री मनोज जी संचेती-जलगांव, श्री माणकचन्द जी गादिया-चालीसगांव, श्री अलंकार जी मुणोत-कटंगी, मधुबाला दर्डा-जलगांव की सेवाएँ तथा अंशकालीन रूप में श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर की भी सेवाएँ प्राप्त हुईं। शिविर में सामायिक स्वाध्याय विषय पर वक्तृत्व स्पर्धा आयोजित की गई, जिसमें 35 शिविरार्थियों ने भाग लिया। इस

प्रतियोगिता में मीनल समदड़िया-प्रथम, रश्मि कोटेचा-द्वितीय, रंजना जी गोलेच्छा-तृतीय विजेता रहीं।

25 अप्रेल 2010 को शिविर का समापन समारोह एवं क्षेत्रीय स्वाध्यायी सम्मेलन आयोजित किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री नवरतनजी डागा-जोधपुर (संयोजक-स्वाध्याय संघ), विशिष्ट अतिथि श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर (सचिव-स्वाध्याय संघ) थे। श्री रतनलाल सी. बाफणा-जलगांव (संयोजक-शासन सेवा समिति), श्री कस्तूर चंद जी बाफणा-जलगांव, श्री कंवरलाल जी संघवी-जलगांव, श्री महावीर जी बोथरा-जलगांव से मंच सुशोभित था। शिविरार्थियों को ज्ञान बढाने एवं स्वाध्यायी बनने हेतु प्रेरित किया गया। विशिष्ट स्वाध्यायियों में से निम्नांकित सात स्वाध्यायियों को माला, शॉल एवं 1100 रुपये की नकद राशि देकर सम्मानित किया गया- 1. श्री मुकेश बुरड़-शिरपुर, 2. श्री चन्द्रकांत हिरण-कजगांव, 3. श्री विलास कोचर-फत्तेपुर, 4. श्री अनिल कोठारी-जलगांव, 5. सौ. वसन्ता बाई संकलेचा-नरडाणा, 6. सौ. सरला बम्ब-भड़गांव, 7.सुश्री दीपा दुगड़-मुकटी। इस शिविर में 14 नये स्वाध्यायी बनाये गये। 50 शिविरार्थियों ने शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र भरे।

सभी शिविरार्थियों, अध्यापकों एवं स्वाध्यायियों को सम्मानित किया गया। शिविरार्थियों के आवास, भोजन, पुरस्कार एवं यात्रा व्यय आदि की समुचित व्यवस्था श्री रतनलाल सी. बाफणा परिवार-जलगांव की ओर से की गई। शिविर का सफलता पूर्वक संचालन श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव ने किया।

स्वाध्यायियों हेतु आवश्यक सूचनाएँ

स्वाध्यायी निर्देशिका प्रकाशन- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्ष 1996 में प्रकाशित 'स्वाध्यायी-निर्देशिका' का पुनः प्रकाशन किया जाना है। इस हेतु स्वाध्याय संघ, जोधपुर के सभी स्वाध्यायियों से निवेदन है कि 'स्वाध्याय-शिक्षा' में प्रकाशित स्वाध्यायी परिचय पत्र पूर्ण रूप से भरकर कार्यालय को शीघ्रातिशीघ्र प्रेषित करने का श्रम करावें ताकि उनका विवरण निर्देशिका में सम्मिलित किया जा सके। निर्देशिका हेतु स्वाध्यायियों के विचार एवं सुझाव भी आमंत्रित हैं।

जिनवाणी मासिक पत्रिका अर्द्धमूल्य में उपलब्ध- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के जो वर्तमान में सक्रिय स्वाध्यायी हैं, तथा अभी तक जिनवाणी मासिक पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, वे इस पत्रिका के आजीवन सदस्य अर्द्धमूल्य में बन सकते हैं। स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री नवरतन जी डागा ने अपने सुपुत्र चि. पुनीत डागा संग खुशबू के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में 100 स्वाध्यायियों को अर्द्धमूल्य पर जिनवाणी के आजीवन सदस्य बनाने की घोषणा की है। अतः इच्छुक स्वाध्यायी अर्द्धमूल्य 250/-स्वाध्याय संघ कार्यालय में भिजवाकर जिनवाणी की आजीवन सदस्यता ग्रहण कर सकते हैं।- *नवरतन डागा-संयोजक, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर (राज.)*

अध्यात्म चेतना वर्ष में अनेक कार्यक्रम

चेन्नई- आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई एवं सहयोगी संस्थाओं द्वारा आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ मानव सेवा एवं जीव दया के रचनात्मक कार्य भी किये जा रहे हैं-

1. 27 फरवरी 2010 को चार अनाथ आश्रमों में मिठाई एवं नमकीन के पैकेटों का वितरण किया गया।
2. गौशाला में पशुओं को सूखा चारा डाला गया।
3. 28 मार्च 2010 महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में चेन्नई के किलपॉक स्थित राजकीय मानसिक मरीजों के अस्पताल में करीब 1600 मरीजों को सुबह का नाश्ता एवं दोपहर का भोजन करवाया गया।
4. 28 मार्च 2010 को श्रीमान् सुधीरकुमार जी सुराणा (सुपुत्र स्व. श्री अमरचंद जी सुराणा) सहसंयोजक, आचार्य हस्ती अध्यात्म चेतना समिति ने एक मोबाइल क्लिनिक वाहन संघ को भेंट किया है, जिसके द्वारा गाँव-गाँव जाकर निःशुल्क चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवाई जाएगी।
5. जीव-दया कार्यक्रम के अन्तर्गत 100 गायों को अभयदान दिलवाने का लक्ष्य रखा गया है। उन गायों को भयमुक्त कर जैन समाज द्वारा संचालित विभिन्न गौशालाओं में छोड़ा जायेगा। *-उगमचंद कांकरिया, मंत्री*

लर्न और टर्न ज्ञान प्रतियोगिता

मैत्री चैरिटेबल फाउन्डेशन, दिल्ली द्वारा खुली किताब प्रतियोगिता के अन्तर्गत साध्वी युगल निधि-कृपा द्वारा विरचित **'आत्मा के स्टेशन'** पुस्तक पर

लर्न और टर्न ज्ञान प्रतियोगिता का प्रारम्भ 25 मई 2010 को होने जा रहा है। इस प्रतियोगिता में 8 से 18 वर्ष के बच्चे भाग ले सकते हैं। सभी बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार राशि 8 से 12 वर्ष तक के बच्चों के लिएः- **बम्पर पुरस्कार-** 7777/-रुपये, **प्रथम पुरस्कार-** 5555/- रुपये, **द्वितीय पुरस्कार-** 4444/- रुपये और **तृतीय पुरस्कार-** 1111/- रुपये तथा 13 से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिएः- **बम्पर पुरस्कार-** 11,111/- रुपये, **प्रथम पुरस्कार-** 7777/- रुपये, **द्वितीय पुरस्कार-** 4444/- रुपये और **तृतीय पुरस्कार-** 1111/- रुपये होंगी। प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि 10 अक्टूबर 2010 है। जो इस प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक हैं वे 250 रुपये रजिस्ट्रेशन फीस जमा कराएँ। एक घर के दो बच्चे हो तो दूसरे बच्चे के लिए मात्र 100 रुपये अधिक देने होंगे। हिन्दी या अंग्रेजी, जिस भाषा में पुस्तक चाहिए, उसका उल्लेख अवश्य करें। www.sadhviyugal.com से रजिस्ट्रेशन फार्म को लोड डाउन किया जा सकता है। *सम्पर्क सूत्र-मैत्री चैरिटेबल फाउन्डेशन, B-117, okhla Industrial Area, Phase-I, Delhi, Mob.-093130-93444*

वर्क है मांसाहार, करें इसका बहिष्कार

चाँदी का वर्क मांसाहार है, इस तथ्य को दैनिक भास्कर समाचार पत्र द्वारा अपने विभिन्न संस्करणों में उद्घाटित किया गया है तथा वर्क के बहिष्कार का एक अभियान चल रहा है। जोधपुर के अनेक मिठाई विक्रताओं, पुजारियों और उपभोक्ताओं ने वर्क का प्रयोग नहीं करने का संकल्प लिया है। चाँदी के वर्क में निकल और केडमियम एल्युमीनियम जैसी जहरीली धातुओं का मिश्रण किया जाता है। जैन समाज के हर सदस्य से अनुरोध है कि वह वर्क का प्रयोग न करे। विवाह समारोह में आयोजित भोजों में मिठाई पर वर्क का पूर्णतः निषेध रखा जाए।

-सम्पादक

प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर अध्ययनशाला

भोगीलाल लहेरचन्द भारतीय संस्कृति विद्या मंदिर, दिल्ली द्वारा दिनांक 9 से 30 मई 2010 तक 22 वें अखिल भारतीय ग्रीष्मकालीन प्राकृत भाषा एवं साहित्य की अध्ययनशाला का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें देश के कोने-कोने से लगभग 50 प्रतिभागी प्रारम्भिक व उत्तर दो स्तरीय कक्षाओं में भाग लेने की सम्भावना है।

'संस्कार' पुस्तक पर खुली किताब प्रतियोगिता

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शांत क्रान्ति संघ के तत्त्वावधान में श्री वीर संघ, अहमदाबाद द्वारा (डॉ.) साध्वी चिन्मय श्री विरचित 'संस्कार' पुस्तक पर खुली किताब प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। पूर्ण अंक प्राप्त करने वाले को एक लाख रूपये का विशेष पुरस्कार तथा प्रथम पुरस्कार- 50000 रुपये, द्वितीय पुरस्कार- 25000, तृतीय पुरस्कार-10000 रुपये, चतुर्थ पुरस्कार- 5000 रुपये एवं पंचम पुरस्कार-2000 रुपये का देय है। सांत्वना पुरस्कार 100 प्रतियोगियों को (500 रुपये प्रत्येक) दिए जाएंगे। इसके अतिरिक्त 450 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 5 प्रतियोगियों को 1000 रुपये तथा 400 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया जाएगा। 'संस्कार' पुस्तक का मूल्य 299 रुपये तथा प्रश्न पुस्तिका का मूल्य 50 रुपये है। प्रश्न पुस्तिका जमा करवाने की अन्तिम तिथि 5 नवम्बर, 2010 है। **सम्पर्क सूत्र-** श्री विजय ने. पटवा फोन नं.-020-24240512, 098501-27307, श्री हस्तीमल गोखरू, मुम्बई-09322990776, श्री विनोद कोठारी, उदयपुर - 09460208022, वेबसाइट- www.sanskarkranti.com

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका परिषद् एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 15 फरवरी से 17 फरवरी 2010 तक हाउसिंग बोर्ड में श्राविकाओं के लिए शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 25 बहिनों ने भाग लिया। इस शिविर में आंशिक रूप से श्री धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं श्री अरूण जी मेहता-पूर्व संयोजक, वात्सल्य निधि ने तथा पूर्ण रूप से श्रीमती मोहनकौर जैन, शिविर संयोजिका, अ.भा. श्राविका मण्डल एवं सुश्री अल्फा सुराणा, सदस्य, अ.भा. श्राविका मण्डल ने अध्यापन कार्य किया। इसके अनन्तर 1 अप्रेल से 3 अप्रेल 2010 तक लक्ष्मीनगर में त्रिदिवसीय शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 90 बहिनों ने भाग लिया। इसमें श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड ने 25 बोल का विस्तृत अध्ययन करवाया। ऐसे आडम्बर रहित शिविर की सबने सराहना की।

जयपुर- राजस्थानी हिन्दी ग्रंथ अकादमी, स्वयंसिद्धा संस्था एवं श्री जैन रत्न

श्राविका मण्डल, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में राज्यस्तरीय सर्जनात्मक त्रिदिवसीय लेखन कार्यशाला का आयोजन डॉ मंजुला जी बम्ब एवं डॉ. दीपा जी जैन के सहयोग से किया गया। इसमें 70 महिलाओं ने बडे उत्साह से भाग लिया। कार्यशाला में लेख, कहानी, संवाद, संस्मरण आदि हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को विषय-विशेषज्ञ न्यायमूर्ति शिवकुमार जी शर्मा, डॉ. आर.डी. सैनी, प्रो. रमेश के. अरोडा, डॉ. राकेश व्यास, अशोक राही, हरीश कर्मचन्दानी (दूरदर्शन डॉयरेक्टर), सौम्या विशिष्ट, रामानन्द राठी, डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, डॉ. दुष्यन्त आदि ने बहुत विस्तार से समझाया। सभी महिलाओं ने बड़े उत्साह एवं लगन के साथ सुन्दर ढंग से गृह कार्य की प्रस्तुति दी थी। *-उर्मिला बोथरा-अध्यक्ष, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर*

जोधपुर- आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्मशताब्दी को आध्यात्मिक चेतना वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। जोधपुर श्राविका मण्डल की ओर से विविध कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। अभी तक तीन शिविरों का आयोजन हो चुका है एवं आगामी शिविर जून मास में आयोज्य है। इसी क्रम में नवकार मंत्र का जाप प्रतिदिन एक घंटा विभिन्न क्षेत्रों के स्थानकों में हो रहा है। नवकार मंत्र का कार्यक्रम पूरे वर्ष चलेगा। नवकार मंत्र का जाप 30 दिसम्बर 2009 से प्रारम्भ किया गया। अभी तक जाप का कार्यक्रम सिंहपोल, प्रतापनगर, पावटा, हाउसिंग बोर्ड में हो चुका है, अब नेहरू पार्क में चल रहा है। इसके पश्चात् लक्ष्मी नगर, सरस्वती नगर, घोड़ों का चौक आदि क्षेत्रों में चलाया जायेगा। इसमें करीब 50-60 बहिनें भाग लेती हैं एवं रविवार को उनकी संख्या 100 तक पहुँच जाती है। *- सुनीता मेहता, अध्यक्ष- श्राविका मण्डल, जोधपुर*

वैशाली- प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली द्वारा 23 फरवरी, 2010 को 'आचार्य कुन्दकुन्द व्याख्यानमाला' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम डॉ. देवनारायण शर्मा, पूर्व निदेशक, प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली की अध्यक्षता तथा डॉ. कमलेश कुमार जैन, आचार्य, जैन-बौद्ध दर्शन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. शर्मा ने कहा कि आचार्य कुन्दकुन्द ने निश्चय और व्यवहारनय के माध्यम से अध्यात्मवाद का उपदेश दिया है। मुख्यातिथि डॉ.

जैन ने आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा उपदिष्ट लोक-कल्याण की भावना को आज भी प्रासंगिक बताया। इस व्याख्यानमाला में डॉ. उपेन्द्र मिश्र-बिहार, डॉ. रामजी राय-आरा, डॉ. रवीन्द्र कुमार-बिहार, डॉ. राजीव कुमार-जैतपुर ने विशेष व्याख्यान दिए।

बैंगलोर-श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के दिशा निर्देशन में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, हनुमंत नगर द्वारा सप्त दिवसीय जैन संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 142 शिविरार्थियों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। समापन समारोह के अवसर पर महिला मण्डल, हनुमन्त नगर की सदस्य निर्देशिका का विमोचन श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने किया।

जोधपुर-श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन नवयुवक मण्डल, जोधपुर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता- 'धर्म जीवन में क्यों जरूरी है?' का महावीर जंयती के पावन अवसर पर परिणाम घोषित किया गया। विजेता इस प्रकार हैं- प्रथम-1101/- सुश्री समता रजावत-चौमहला, द्वितीय-501/- श्रीमती रितु जैन-ब्यावर, सुश्री शीतल चौपड़ा-करवड़, तृतीय-251/- श्री जितेन्द्र चौरडिया-खींचन, सुश्री स्वाति संचेती-मलकापुर, सुश्री त्रिशला (प्राची) श्रीश्रीमाल-बालोद। इसके अतिरिक्त पाँच सांत्वना पुरस्कार 101/- रुपये के दिए गए।

-नितेश नागौता जैन, महामंत्री

बधाई/चुनाव

जयपुर- प्रो.संजीव भानावत, अध्यक्ष, जन संचार केन्द्र, राजस्थान विश्व-

विद्यालय को पब्लिक रिलेशन्स कौंसिल ऑफ इण्डिया की ओर से 'हॉल ऑफ फ्रेम इन पी आर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री मणिशंकर अय्यर द्वारा प्रशस्ति पत्र, ट्राफी तथा शॉल ओढ़ाकर प्रदान किया गया। प्रो. भानावत को यह सम्मान पत्रकारिता, जन संचार एवं जनसम्पर्क के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया है। आप जिनवाणी के सम्पादक भी रहे हैं तथा सम्प्रति 'कम्यूनिकेशन टूडे' का सम्पादन कर रहे हैं।

उज्जैन- शब्द प्रवाह साहित्य मंच, उज्जैन द्वारा डॉ. दिलीप धींग को शब्द श्री की

उपाधि से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से प्रकाशित 'मुक्तक मुक्ता' के लेखक के रूप में दिया गया। यह कृति शब्द प्रवाह साहित्य सम्मान के लिए चतुर्थ स्थान पर चुनी गई।

बून्दी- श्री शरद डागा सुपुत्र श्रीमती चित्रा एवं श्री हेमन्त जी डागा ने **M.B.B.S.** की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। वे श्रद्धानिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ युवारत्न हैं।

मुम्बई- सुश्री प्रतिभा कुम्भट सुपुत्री श्रीमती शशिजी एवं श्रीमान् अजित कुम्भट ने **Company Secretary** की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की है। वर्तमान में आप **L.L.B. Final** मुम्बई विश्वविद्यालय से कर रही हैं। आपकी धार्मिक क्रियाओं में भी पूर्ण श्रद्धा व रुचि है।

दिल्ली- श्री अविनाश मेहता पुत्र श्रीमती नीता एवं श्री अरुणकुमार मेहता सुपौत्र

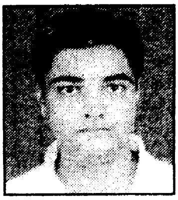

श्रीमती शान्ति देवी एवं स्व. श्री पारसराज मेहता ने कम्प्यूटर साइन्स में इन्जीनियरिंग की परीक्षा दिल्ली से उत्तीर्ण कर वर्तमान में आई.आई.टी., बैंगलोर से **M-Tec.** कर रहे हैं। उन्होंने डायरेक्टर्स मेरिट लिस्ट जनवरी-2010 में स्थान प्राप्त किया है।

जलगाँव- श्री महावीर चन्द बोथरा (अर्पित एग्रो इण्डस्ट्रीज, जलगाँव) सुपुत्र श्री

सोहनलाल जी बोथरा को महाराष्ट्र शासन द्वारा मुम्बई में स्माल स्केल इंडस्ट्री में कृषि उत्पादों के निर्यात हेतु वर्ष 2008-2009 के लिए राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार महाराष्ट्र के उद्योग मंत्री श्री राजेन्द्र बाबू दर्डा एवं उद्योग राज्यमंत्री श्री सचिन अहिर के कर-कमलों से दिया गया। आप श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जलगाँव शाखा के अध्यक्ष हैं।

जलगांव- श्री गौरव बाफना सुपुत्र श्रीमती सजनी देवी एवं श्री राजेन्द्र कुमार जी

बाफना एवं सुपौत्री स्व. श्री नेमीचन्द जी बाफना, गोटन ने जी.एस.मेडीकल कॉलेज परेल, मुम्बई एवं **K.E.M.** हॉस्पिटल मुम्बई से **MBBS** प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। श्री गौरव बाफना ने **MH CET** में भी सम्पूर्ण महाराष्ट्र में छठा स्थान तथा पूरे जलगांव जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

बून्दी- डॉ. एस.एल. नागौरी ने 121 पुस्तकें लिखकर लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड

रिकॉर्ड्स-वर्ष 2010 में गौरवशाली स्थान प्राप्त किया है।

जोधपुर- श्री पारसमल चौपड़ा पुत्र स्व. श्री प्रेमलाल जी चौपड़ा AIFTP Central Zone के चेयरमेन एवं राजस्थान ग्रीवेन्सेज रीड्रेसल सैल समिति (Vat) के सदस्य नियुक्त किए गए हैं।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती विमलादेवी जी मेहता धर्मपत्नी श्री

नौरतन जी मेहता का 7 अप्रेल, 2010 को देहावसान हो गया। आप शारीरिक वेदना होते हुए भी सदैव समत्व भाव में रहने के साथ पारिवारिक निर्वहन एवं जिम्मेदारियों के प्रति सजग एवं जागरूक थीं। आपने अपने सुपुत्रों को भी उच्च शिक्षण एवं अच्छे संस्कार प्रदान कर कुशल मातृत्व का परिचय दिया। श्राविकारत्न ने सदैव संघ-सेवा एवं संघ के कार्य-दायित्वों को पूर्ण करने में अपने पति संरक्षक समिति के सदस्य और जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री मेहता जी का सदैव सहयोग किया। आप नित्यप्रति सामायिक साधना के साथ अनुकूलतानुसार धर्म साधना-आराधना में तत्पर रहती थीं। आपका जीवन वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता आदि गुणों से युक्त था। सम्पूर्ण मेहता परिवार का संघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय सहयोग रहा है।

पाली- वरिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रूपीदेवी धर्मपत्नी श्री मुकनचन्द जी हिंगड़ (संरक्षक, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पाली) का 16 अप्रेल, 2010 को समाधिमरण हो गया। सरलता, सादगी, सहिष्णुता, उदारता के गुणों से समवेत आपका जीवन प्रेरणादायी था। आप अधिकांश समय धर्म-आराधना एवं तप-त्याग में व्यतीत करती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- श्राविकारत्न श्रीमती उच्छबकंवर जी सिंघवी धर्मपत्नी स्व. श्री शुभलाल

जी सिंघवी का 9 अप्रेल, 2010 को देवलोकगमन हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्राविका थीं। आपकी संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपने संस्कारों से युक्त अपने लाल (स्व. श्रद्धेय श्री कैलाशमुनि जी म.सा.) को जिनशासन की सेवा हेतु रत्नसंघ को समर्पित कर वीरमाता का विरुद निभाया था। सामायिक-स्वाध्याय के प्रति सजग श्राविकारत्न तपस्वी भी थीं, आपने 1 वर्षीतप

के साथ एकान्तर, पन्द्रह, तेरह उपवास, कई अठाईया, तेला, बेला आदि तपस्याएँ की थी। आप अपने पीछे चार सुपुत्रों प्रेमराज जी, राजकुमार जी, महेन्द्र कुमार जी एवं प्रवीणकुमार जी सिंघवी का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

नीमच केण्ट- सुश्रावक श्री भोपराज जी कोठारी का 20 मार्च 2010 को 74 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आप शांत, गंभीर, सरल स्वभावी, मृदुभाषी एवं सेवाभावी सुश्रावक थे। आप साधु-साध्वियों की सेवा में अग्रणी रहते थे। आप श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ट्रस्ट, नीमच केण्ट के अध्यक्ष थे।

धुलिया- धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री नेमीचन्द जी तोलाराम जी खिंवसरा का 20 मार्च

2010 को 70 वर्ष की वय में समाधिमरण हो गया। वे नित्य सामायिक और प्रतिक्रमण करते थे और अपना अधिकतर समय ज्ञान-ध्यान में व्यतीत करते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

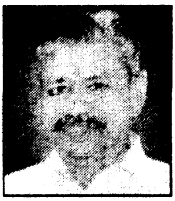

धुलिया- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बंशीलाल जी मोतीलाल जी रूणवाल का 11 मार्च 2010 को 69 वर्ष की वय में समाधिमरण हो गया। आपका जीवन सरलता, सेवा एवं सादगी के गुणों से सुवासित था। आप संत-सती की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे।

बैंगलोर- तपस्वी धर्म-आराधिका श्रीमती शांतिबाई भंसाली धर्मपत्नी श्री

चांदमल जी भंसाली, पुत्रवधू स्व. श्री हस्तीमल जी भंसाली का 59 वर्ष की आयु में 3 अप्रेल 2010 को संलेखना संथारा के साथ स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक करती थीं। आपने अपने जीवन में वर्षीतप की आराधना के साथ कई तपस्याएँ कीं। आपने 41 वर्ष की अल्पायु में शीलव्रत अंगीकार कर लिया था। आपके 10 वर्षों से रात्रि-भोजन का त्याग था। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। भंसाली परिवार रत्न संघ के प्रति समर्पित है।

बैंगलोर- सुश्रावक श्रीमान् राजेन्द्रजी भंडारी सुपुत्र श्री रिछपाल जी भण्डारी का

13 अप्रेल, 2010 को त्याग-प्रत्याख्यान एवं सागारी संथारे के साथ देवलोक गमन हो गया। आप प्रतिदिन 5 सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। आचार्यप्रवर के बैंगलोर चातुर्मास में भी पूरे पाँच माह आपने लाभ लिया। आप शान्त स्वभावी एवं गुरु के

प्रति पूर्ण समर्पित थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर- संघ-सेवी श्राविकारत्न श्रीमती अकलकंवर जी कांकरिया का 2 अप्रेल, 2010 को मरण हो गया। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका अधिकांश समय धर्म साधना में व्यतीत होता था। मधुरता, सरलता आदि गुणों से युक्त आपका जीवन सदैव दूसरों को प्रेरित करता था। सम्पूर्ण कांकरिया परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

जोधपुर- व्रतपरायणा श्राविकारत्न श्रीमती बिदामकंवर जी भण्डारी का 2 अप्रेल, 2010 को देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्राविका थीं। संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। सामायिक-स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष रुचि थी। आपका अधिकांश समय धर्म-साधना में व्यतीत होता था। व्रत-प्रत्याख्यानों से आपका जीवन सुरभित था। आप संघसेवी श्री मांगीलाल जी कुम्भट की बहिन थीं।

कसरावद- वरिष्ठ सुश्रावक श्री सूरजमल जी लूणिया का 80 वर्ष की वय में समाधिमरण हो गया। आप स्वाध्याय प्रेमी थे एवं स्वाध्याय संघ, जोधपुर के प्रति आपकी विशेष आस्था थी। वकील सा. के रूप में प्रसिद्ध श्री लूणिया जी निमाड़ क्षेत्र के प्रमुख सलाहकार थे।

मायावरम- श्री सुभाषचन्द जी बरमेचा का 9 अप्रेल 2010 को संथारे सहित मरण हो गया। आपका जीवन धर्ममय था।

बैंगलोर- सादगी एवं सेवा की प्रतिमूर्ति आदर्श सुश्रावक श्री जे. मीठालाल जी कोठारी का 84 वर्ष की वय में 4 मार्च 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप निन्दा-विकथा से दूर, गुणग्राही प्रज्ञावान आदर्श श्रावक थे। आप कई वर्षों तक वीरायतन संस्था के सहमंत्री पद पर कार्यरत रहे। पूज्य श्री गणेशीलाल जी म.सा., कविरत्न श्री केवलमुनि जी म.सा. एवं उपाध्याय श्री अमरमुनि जी म.सा. के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा-भक्ति थी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

11000/- जिनवाणी की स्तम्भ-सदस्यता हेतु प्रत्येक

198 श्री रिखबचन्द जी धोका, मैसर्स अशोक टेक्टाइल्स, 905/171, एस.जे. हॉस्टल, वायपुरम, मैसूर-570008(कर्नाटक)

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

711 Smt. Asha ji Gandhi,Navrangpura, Ahmedabad (Gujrat)
712 श्री अनुराग जी सोनी, भगवती नगर प्रथम, करतारपुरा, जयपुर (राजस्थान)
713 श्री आयुष जी बोहरा, दिलशाद कालोनी, दिल्ली
714 श्रीमती शर्मिलाबाई जी धोका, अशोक रोड़, मैसूर (कर्नाटक)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12534 श्री मनोज कुमार जी जैन, महावीरनगर द्वितीय, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)
12535 Shri Jaskaran ji Baid Churcha-Colliery, Korea (C.G.)
12536 श्री जसकरण जी बैद, महावीर भवन के पास, गंगाशहर, जिला-बीकानेर (राजस्थान)
12537 श्री पंकज कुमार जी चोरड़िया, लोहिया का चौक, नागौर (राजस्थान)
12538 श्री ज्ञानचन्द जी जैन, हिमालय पार्क के पास,इन्कमटैक्स कॉलोनी,अहमदाबाद (गुज.)
12539 श्री राजेश जी माण्डोत, नरपत नगर, पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
12540 श्री बसन्त जी चौपड़ा, ई-56-ए, शास्त्री नगर, जोधपुर-342003 (राजस्थान)
12541 श्री अशोकजी जैन, कोपोरेटिव ऑफिस बिल्डिंग, बॉम्बे मार्केट,उमरवाडा, सूरत (गुज.)
12542 श्री शोभित जी जैन, जय जिनेन्द्र प्रोपर्टीज, 209 ए, रंगबाडी, केशवपुरा, कोटा (राज.)
12543 श्री रामप्रसाद जी जैन, ग्राम पोस्ट-बाबई, तहसील-इन्द्रगढ़, जिला-बून्दी (राजस्थान)
12544 श्री दीपक कुमार जी जैन, ग्राम पोस्ट-बाबई, तहसील-इन्द्रगढ़, जिला-बून्दी (राज.)
12545 श्री पारसचन्द जी जैन, ग्राम पोस्ट-बाबई, तहसील-इन्द्रगढ़, जिला-बून्दी (राजस्थान)
12546 श्री मनोज कुमार जी जैन, बाबई-323613, तहसील-इन्द्रगढ़, जिला-बून्दी (राज.)
12547 श्री चेतन कुमार जी चण्डालिया, ओसवाल फेन्सी स्टोर, दूनी, जिला-टोंक (राज.)
12548 श्री कन्हैयालाल जी कुम्भट, 348 ए, तलवंडी, कोटा (राजस्थान)
12549 श्रीमती रेखा जी हिंगड़, श्रीनाथपुरम्, जी.ए.डी. क्वार्टर के पास, कोटा (राजस्थान)
12550 श्रीमती हीना जी शाह, दत्तात्रेय अपार्टमेन्ट, गाउठन रोड़, विरार (वेस्ट), ठाणे (महा.)
12551 श्री सुभाष जी जैन, 755, सेक्टर-91, गुडगाँव (हरियाणा)
12552 श्री अरुणकुमारजी लोढ़ा, साल हॉस्पिटल के पास, ड्राइव इन रोड़, अहमदाबाद (गुज.)
12553 श्री मुकेशजी सुराणा, आकृति,ओरचिड पार्क,साकी नाका,अन्धेरी ईस्ट, मुम्बई (महा.)
12554 श्री मदनलाल पी. बुरड़ जी, महावीर भवन के सामने, पिंपलनेर, जिला-धुलिया (महा.)
12555 श्रीमती यामनी देवी जी बम्ब, बम्ब सदन, विकास नगर, अम्बेडकर मार्ग,नीमच (म.प्र.)
12556 Shri Bastimal ji Choraria, B. T. Road, Kolkata (W.B.)
12557 श्रीमती रेखाजी मेहता, 62, मौजी कॉलोनी,प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)
12558 श्री मौहम्मद गुलफाम खान, ईमाम चौक, घाटगेट, जयपुर (राजस्थान)
12559 श्री कविशजी जैन, जैन हार्डवेयर स्टोर, कठूमर रोड़, गंजखेरली, जिला-अलवर (राज.)
12560 श्री सुरेन्द्रकुमार जी सोनी,शिवमंदिर के पास, लीलाशाह नगर, गाँधीधाम, कच्छ (गुज.)

12561 श्री जितेन्द्र कुमार जी जैन, कमला नगर, पानी की टंकी के पास, आगरा (उत्तरप्रदेश)
12562 Shri Balchand ji Bhura, Outram Street, Kolkata (W.B.)
12565 Shri Gouttam Chand ji Kothari, Secunderabad (A.P.)
12566 Shri ManojKumarji Jain,Pot Market,Secunderabad (A.P.)
12567 Shri Sohan Lal ji Gugalia, Khairtabad, Hyderabad (A.P.)
12568 Shri Atan Chand ji Sisodia, Secunderabad (A.P.)
12569 Shri Ghevar Chand ji Kataria, Bangalore (Karnataka)
12570 Shri Dharmi Chand ji Hingar, Bangalore (Karnataka)
12571 Shri Dhanwant Rai ji Kapasi, Bangalore (Karnataka)
12572 Smt. Shanta ji Surana, Hyderabad (A.P.)
12573 Shri Laduram ji Gugalia, Hyderabad (A.P.)
12574 Shri Madan Lal ji Gana, Neredment,Secunderabad (A.P.)
12575 Shri Mahaveer Chand ji Bhatewra, Secunderabad (A.P.)
12576 Shri MohanLal ji Jain, R.P. Road, Secunderabad (A.P.)
12577 Shri Narendra Kumar ji Jain, Secunderabad (A.P.)
12578 Shri Javeri Lal Modi, Sikh Village, Secunderabad (A.P.)
12579 Shri Prahaladram ji Vishnoi, Secunderabad (A.P.)
12580 श्री चन्द्रकान्त जी, पुराने बस स्टॉप के पास, पोस्ट–बालोद, जिला–दुर्ग (छत्तीसगढ़)
12581 Shri AnandKumar ji Jain, Khairtabad, Hyderabad (A.P.)
12582 Shri HariRamji Agrawal,Ghandhi Bazar,Hyderabad (A.P.)
12583 Shri Satya Narayan ji Agrawal, Ramkot,Hyderabad (A.P.)
12584 Shri Bhanwar Lal ji Kothari, Hyderabad (A.P.)
12585 Shri Prakash Chand Doongarwal, Hyderabad (A.P.)
12586 Shri Rikhab Chand ji Jain, Bangalore (Karnataka)
12587 Shri Hemant ji Jain, Kukukpalli, Hyderabad (A.P.)
12588 Shri Suresh Kumar ji Gadwani, Hyderabad (A.P.)
12589 Shri JabarChand Gadwani,Himayatnagar,Hyderabad
12590 Shri PrakashChand ji Jain,Ausmangadh,Hyderabad
12591 Shri Prakash Chand ji Sajya, Hyderabad (A.P.)
12592 Shri Prakash ji Jain, Rasoolpura, Secunderabad (A.P.)
12593 Shri Dhan Raj ji Bafna, Ambarpet, Hyderabad (A.P.)
12594 Shri MangalChand ji Chordia, Vijaynagar, Ajmer (Raj.)
12595 Shri Mangal Chand ji Gothi, Begem Bazar, Hyderabad
12596 Shri Pawan ji Baid, Ram Gopalpet, Secunderabad (A.P.)
12597 Shri Pankaj Kumar ji Baid, Secunderabad (A.P.)
12598 Shri Sajjan Singh ji Jain, Secunderabad (A.P.)
12599 Shri N. S. Milan ji, Gandhi Nagar, Secunderabad (A.P.)
12600 Shri Girish Kumar ji, L.B. Nagar, Hyderabad (A.P.)
12601 Shri Sajjan Raj ji Pitalia, Somajiguda, Hyderabad (A.P.)
12602 Shri Prakash Chand ji Pitalia, S.R. Nagar, Hyderabad

12603 Shri Dileep Kumar ji Kochar, Secunderabad (A.P.)
12604 Shri Sanjay ji Singhvi, Rasoolpura, Secunderabad (A.P.)
12605 Shri Kewal Chand ji Singhvi, Hyderabad (A.P.)
12606 Shri Rajendra ji Daftari, Bolaram, Secunderabad (A.P.)
12607 Smt Anju ji Baid, Erramanzil Collony, Hyderabad (A.P.)
12608 Shri Prakash H. Bhandariji,Khairtabad,Hyderabad (A.P.)
12609 Shri Suresh Kumar ji Lunia,Amberpet, Hyderabad (A.P.)
12610 Smt. Prabha ji Surana, Secunderabad (A.P.)
12611 Smt. Neelam ji Singhvi, Shivam Road, Hyderabad (A.P.)
12612 Smt. Rekhaji Singhvi, New Nallakunta, Hyderabad (A.P.)
12613 Shri UttamChandji Daga,Shivam Road, Hyderabad (A.P.)
12614 Shri Kanti Lal ji Pitalia, Ameerpet, Hyderabad (A.P.)
12615 Shri PrakashChandji Sisodia, Asitabad, Adilabad (A.P.)
12616 Shri Kavi Narendra Rai ji, Hyderabad (A.P.)
12617 Shri Ladhu Ram ji Dak, Hyderabad (A.P.)
12618 Shri Vijay Raj ji Bohra, Chennai (Tamilnadu)
12619 Shri Deep Chand ji Kothari, Chennai (Tamilnadu)
12620 श्री सुरेन्द्रकुमार जी जैन, बी.एस.एन.एल. टॉवर के सामने, आर.के. पुरम्, कोटा (राज.)
12621 श्री कँवरलाल जी घोड़ावत, गणेश टॉकिज रोड़, सुमेरपुर, जिला–पाली (राजस्थान)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12563 Shri Prakash Chand ji Borundia, Madurandakam (T.N.)
12564 श्री प्रेमचन्द जी जैन, दूदू बाग, संसारचन्द्र रोड़, रॉयल वर्ड के सामने, जयपुर (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

2100/- श्री वर्द्धमान जी कोठारी, कोटा, अपनी सुपुत्री सौ.कां. निधि संग कुणाल (सुपुत्र श्री अरूण कुमार जी लोढ़ा, मूल निवासी जोधपुर, हाल मुकाम अहमदाबाद) का शुभविवाह 6 फरवरी 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

2100/- श्री विनोद जी, नवनीत जी मेहता, जोधपुर, अपनी पूजनीया माताजी श्रीमती विमलादेवी जी धर्मपत्नी श्री नौरतनमल जी मेहता के दिनाँक 7 अप्रेल, 2010 को देहावसान हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री उसभराज जी, महेश कुमार जी सालेचा, हुबली (कर्नाटक), अपनी सुपुत्री दिव्यप्रभा जी म.सा. की दीक्षा के दो वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री सुमेरचन्द जी सिंघवी, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.), श्रीमती रेखा सिंघवी का दिनांक 28 मार्च, 2010 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री महावीर प्रसाद जी शान्तिलाल जी जैन, चौथ का बरवाड़ा–सवाईमाधोपुर अपने सुपुत्र चि. राजकुमार जी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री सुरेन्द्रमल सिंघवी सुपुत्र स्व. श्री मोहनमल जी सिंघवी, प्रतापनगर, जोधपुर, आचार्य भगवन्त के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री संदीप जी, प्रदीप जी लोढ़ा, टोंक फाटक–जयपुर पूर्ज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. व सन्त–सती मण्डल के दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री राजेन्द्रकुमार जी, महावीरचन्द जी, सिद्धार्थ (सी.ए.) अभिनन्दन एवं जिनेन्द्र जी

बाफना, जलगाँव (महा.) श्री गौरव बाफना के एम.बी.बी.एस. प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री राजेन्द्रकुमार जी, महावीरचन्द जी, सिद्धार्थ (सी.ए.), गौरव (डॉ.) अभिनन्दन एवं जिनेन्द्र जी बाफना, जलगाँव (महा.), पूज्या माताश्री स्व. श्रीमती सुन्दरबाईसा (धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्द जी बाफना, गौटन निवासी) की 17 मार्च, 2010 को 7 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री शान्तिलाल जी कमलचन्द जी चौधरी, चेन्नई, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा-9 एवं परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा-6 के गढ़सिवाना में दिनांक 24 मार्च 2010 को समागम के प्रसंग की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री रिखब जी, सुभाषचन्द जी, श्रेणिक जी, उदयराज जी धोका, मैसूर पूज्य आचार्य भगवन्त एवं उपाध्यायश्री आदि समस्त चारित्रात्माओं के सपरिवार गढ़ सिवाना में दर्शन लाभ करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री सुभाषमल जी, सुमति कुमार जी लोढ़ा (अजमेर वाले), चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त के कुम्पावास में दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- आनन्दरूपचन्द भंडारी चेरीटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, की तरफ से भेट।

स्वाध्याय संघ हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

500/- आनन्दरूपचन्द भड़ारी चेरीटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, की तरफ से भेट।

अ.भा.श्री.जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड को साभार प्राप्ति-स्वीकार

30000/- श्री रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोक कुमार जी, श्रेणिककुमार जी धोका, मैसर्स अशोक टेक्टाइलस, 905/171, एस.जे. हॉस्टल, वायपुरम, मैसूर-570008 (कर्नाटक), पूज्य पिताजी श्री विमलचन्द जी धोका की पावन स्मृति में शिक्षण बोर्ड की कक्षा द्वितीय तथा तृतीय की पुस्तक के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

आगामी पर्व

द्वि. वैशाख कृष्ण 14 गुरुवार	13.05.2010	चतुर्दशी, पक्खी
द्वि. वैशाख शुक्ला 3 रविवार	16.05.2010	अक्षय तृतीया, आचार्य श्री हस्ती का आचार्य पद दिवस (81वां)
द्वि. वैशाख शुक्ला 8 शुक्रवार	21.05.2010	आ. हस्ती की 19वीं पुण्य तिथि
द्वि. वैशाख शुक्ला 9 शनिवार	22.05.2010	उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का उपाध्याय पद दिवस (20वां)
द्वि. वैशाख शुक्ला 14 बुधवार	26.05.2010	चतुर्दशी, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 48 वां दीक्षा दिवस
द्वि. वैशाख शुक्ला 15 गुरुवार	27.05.2010	पक्खी
ज्येष्ठ कृष्ण 5 बुधवार	2.06.2010	आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का आचार्य पद दिवस (20 वां)
ज्येष्ठ कृष्ण 8 गुरुवार	5.06.2010	अष्टमी
ज्येष्ठ कृष्ण 14 शुक्रवार	11.06.2010	चतुर्दशी, पक्खी

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 05 सितम्बर से 12 सितम्बर 2010 तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 15 जुलाई 2010 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....................जिला...............प्रान्त..................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...
....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..
....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन...
....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.......................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव...
10. अन्य विशेष विवरण..

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679, फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा फोन नं. 25295143 (स्वाध्याय संघ), मो.09380997333

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT

DRI Plant

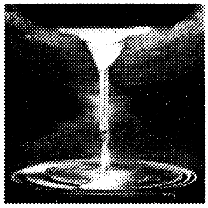

Electric Arc Furnace

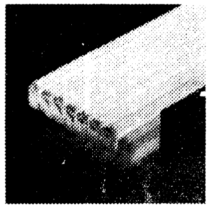

Billets

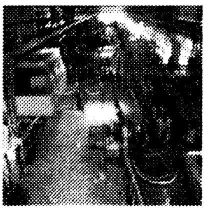

Rolling Mil

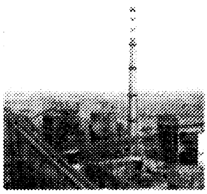

Captive Power Plant

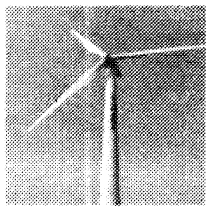

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

 # 29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/
Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी ।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

NO. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर

आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन समर्पित करने के लिए एवं आचार्य श्री के फरमान सामायिक - स्वाध्याय का शंखनाद करने के लिए अखिल भारतीय श्री रत्न युवक परिषद् के तत्त्वाधान में 21 मई, 2010 से 6 जून, 2010 तक ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन शाखा स्तर पर किया जा रहा हैं। अधिक जानकारी एवं केन्द्रीय सहयोग के लिए सम्पर्क करें - जितेन्द्र सा डागा (9829011589) एवं परेश सा कोठारी (9314512649)

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का एक दीया जलाईये,
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर,

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रु. 12000/- के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें -

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (09381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164)
4. बुधमल बोहरा, चैन्नई (09444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (09829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (09414563597)
7. कुशलचन्द गोटेवाला, सवाई माधोपुर (09460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (09821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (09829011589)
10. महेन्द्र बाफना, जलगांव (09422773411)
11. हरीश कवाड़, चैन्नई (09500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना सम्बन्धी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें -

B. Budhmal Bohra

No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.) • Telefax : 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 5 ★ मूल्य : 10 रु.
10 मई, 2010 ★ द्वितीय वैशाख, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple,
Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt,
Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।